PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

HISTORY
Margdarshika Booklet

Features

One-Stop Syllabus Coverage

Covers all 10 units of the History UGC-NET syllabus—from Historical Mothods & Early India through to Research Methodology & Historiography–in one guide.

Unit-Wise "What to Study" Focus

Each unit opens with a detailed list of highly-focused topics (e.g., Archaeological Sources. Pastoralism & Fod Production, Sources of Modern Indian History, Coloni al Economy), so you know exactly what to prioritize.

How-to Study Strategies

Provides effective learning tools–source analysis grids, interactive mapping exercises, thematic mind-maps, multi-layered timelines, comparative talschards–to deepen your understanding and retention

Exam-Oriented Tips

Unit-specific MCQ guidance including 'natch-the-following,' sequence-of-events, source-author matching, and key term distinctions to sharpen an

Updated to 2025 Edition

Fully revised to reflect the latest exam patterns and syllabus updates

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट
UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

इतिहास मार्गदर्शिका पुस्तिका

इकाई I: ऐतिहासिक विधियाँ और प्रारंभिक भारत

क्या अध्ययन करें (इन टॉपिक पर अत्यधिक ध्यान दें)

- **ऐतिहासिक पद्धतियाँ: इतिहासकार का कौशल**
  - **पुरातात्विक स्रोतों पर बातचीत:** अन्वेषण (स्थलों की खोज), उत्खनन (भौतिक अवशेषों का पता लगाने के लिए व्यवस्थित खुदाई), तथा पुरालेखशास्त्र (पत्थर, धातु आदि पर अभिलेखों का अध्ययन, जो शासकों, घटनाओं, सामाजिक स्थितियों पर प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करते हैं) और मुद्राशास्त्र (सिक्कों का अध्ययन, जो आर्थिक इतिहास, व्यापार मार्गों, धातु विज्ञान और राजवंशीय कालक्रम में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है) से प्राप्त विशेष ज्ञान की पद्धतियों को समझें।
  - **पुरातात्विक स्थलों का काल निर्धारण:** पुरातत्वविदों द्वारा अतीत की संस्कृतियों और घटनाओं के लिए कालानुक्रमिक रूपरेखा स्थापित करने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न काल निर्धारण तकनीकों (उदाहरण: रेडियोकार्बन डेटिंग, थर्मोल्यूमिनेसेंस, डेंड्रोक्रोनोलॉजी) के महत्व और सामान्य सिद्धांतों से स्वयं को परिचित कराएं।
  - **साहित्यिक स्रोत: साक्ष्य के रूप में पाठ**
    - **स्वदेशी साहित्य:** प्राथमिक स्रोतों (घटनाओं के समय या प्रत्यक्ष प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए , उदाहरणार्थ हड़प्पा मुहरें, वैदिक भजन, अशोक के शिलालेख) और द्वितीयक स्रोतों (प्राथमिक स्रोतों के आधार पर बाद में बनाए गए कार्य , उदाहरणार्थ विद्वानों के लेख , ऐतिहासिक मोनोग्राफ) के बीच अंतर करना सीखें। धार्मिक साहित्य (जैसे वेद , उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, जिनमें अक्सर सदियों से जटिल रचनाएँ होती हैं) और धर्मनिरपेक्ष साहित्य (जैसे कौटिल्य का अर्थशास्त्र , संगम कविताएँ, कालिदास के नाटक) की सटीक तिथि निर्धारण में शामिल विशेष चुनौतियों की आलोचनात्मक जाँच करें , और समझें कि मिथकों और किंवदंतियों से प्राप्त ऐतिहासिक मूल्य की व्याख्या कैसे की जा सकती है।
    - **विदेशी विवरण:** यूनानी (उदाहरण मेगस्थनीज की "इंडिका"), चीनी (उदाहरण फाहियान के तीर्थयात्रा अभिलेख, ह्वेन त्सांग के विस्तृत अवलोकन) और अरबी (उदाहरण अल-बिरूनी की "किताब-उल-हिंद") यात्रियों, दूतों और इतिहासकारों द्वारा छोड़े ग ए विवरणों के परिप्रेक्ष्य , उद्देश्यों और संभावित पूर्वाग्रहों का आकलन करने के कौशल का विकास करना।

- **ऐतिहासिक व्यवहार में नैतिकता :** साहित्यिक चोरी जैसी अवधारणाओं के माध्यम से अकादमिक अखंडता के महत्वपूर्ण महत्व को समझना , तथा इतिहास लेखन में नैतिकता और नैतिकता की व्यापक चिंताओं को समझना।

- **पशुपालन और खाद्य उत्पादन: नवपाषाण और ताम्रपाषाण परिवर्तन**
  - **नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल चरण:** उनकी परिभाषित विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करें , जिसमें अधिक स्थायी कृषि जीवन (नवपाषाण क्रांति) में परिवर्तन , विशिष्ट बसावट पैटर्न , भारतीय उपमहाद्वीप में प्रमुख स्थलों का भौगोलिक वितरण , प्रयुक्त औजारों के प्रकार (नवपाषाण काल में पॉलिश किए गए पत्थर के औजार , माइक्रोलिथ; ताम्रपाषाण काल में पत्थर के साथ तांबे के औजार), और विनिमय के विकसित होते पैटर्न , जिसमें वस्तु विनिमय के प्रारंभिक रूप और अल्पविकसित व्यापार नेटवर्क शामिल हैं।

- **सिंधु/हड़प्पा सभ्यता (भारत का पहला शहरीकरण): एक जटिल समाज**
  - **व्यापक समझ :** इसकी उत्पत्ति के सिद्धांत , भौगोलिक विस्तार (हड़प्पा, मोहनजो-दारो, लोथल, कालीबंगा, राखीगढ़ी जैसे प्रमुख स्थलों सहित) और उनकी विशिष्ट विशेषताएं , विशिष्ट निपटान पैटर्न (ग्रिड लेआउट, गढ़, निचले शहर, परिष्कृत जल निकासी प्रणालियों के साथ योजनाबद्ध शहर), उन्नत शिल्प विशेषज्ञता (धातु विज्ञान, मनका निर्माण, मुहर नक्काशी, मानकीकृत मिट्टी के बर्तन), धार्मिक प्रथाओं और विश्वासों (मुहरों, मूर्तियों, उदाहरण-आदि शिव, मातृ देवी, जीववाद से अनुमानित), इसके जटिल समाज और राजनीति की प्रकृति (सामाजिक स्तरीकरण के साक्ष्य , संभावित शासक वर्ग, केंद्रीकृत प्राधिकरण), इसके अंतिम पतन से संबंधित विभिन्न सिद्धांत , और इसके व्यापक आंतरिक और बाहरी व्यापार नेटवर्क की प्रकृति।

- **वैदिक और उत्तर वैदिक काल: शास्त्रीय भारत की नींव**
  - **सामाजिक और राजनीतिक विकास:** आर्यों के बारे में चल रही बहसों (उनकी उत्पत्ति, प्रवास और स्वदेशी आबादी के साथ बातचीत के बारे में) में शामिल हों। प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल में राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं की प्रकृति को समझें (उदाहरण: सभा और समिति जैसी आदिवासी सभाएँ) और उत्तर वैदिक काल में उनके परिवर्तन (क्षेत्रीय राज्यों या जनपदों का उदय)। राज्य संरचना और राज्य के सिद्धांतों के विकास, सामाजिक स्तरीकरण की प्रणाली के रूप में वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) के औपचारिक उद्भव और वर्णाश्रम धर्म (जीवन के चार चरण) के विस्तार का पता लगाएँ।
  - **बौद्धिक, धार्मिक और तकनीकी बदलाव:** धार्मिक और दार्शनिक विचारों की गहराई और विकास का पता लगाएं (ऋग्वेद में प्रकृति पूजा से लेकर उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, कर्म और पुनर्जन्म के बारे में जटिल दार्शनिक अटकलों तक)। उत्तर वैदिक काल के दौरान लौह प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण परिचय और कृषि (जंगलों को साफ करना , गहरी जुताई) और युद्ध पर इसके गहन प्रभाव को

समझें। मेगालिथ की अनूठी विशेषताओं और सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करें, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत में पाए जाते हैं और दफन प्रथाओं और लोहे के उपयोग से जुड़े हैं।

- **राज्य प्रणाली का विस्तार (6वीं शताब्दी ईसा पूर्व - दूसरा शहरीकरण): नई राजनीति का उदय**
  - **महाजनपदों का उद्भव :** महाजनपदों (मगध, कोसल, अवंती, वत्स जैसे सोलह महान राज्य) का अध्ययन करें, राजशाही राज्यों (राजाओं द्वारा शासित) और गणतांत्रिक राज्यों (वैशाली के लिच्छवि जैसे कुलीन या कबीले आधारित गणराज्य; जिन्हें गणराज्य या गण-संघ के रूप में भी जाना जाता है, जनपद क्षेत्र के लिए एक व्यापक शब्द है) के बीच राजनीतिक गतिशीलता और अंतर को समझें।
  - **शहरीकरण के लिए सामाजिक-आर्थिक प्रोत्साहन:** प्रमुख आर्थिक और सामाजिक विकासों (जैसे लौह औजारों के कारण कृषि अधिशेष , शिल्प और वाणिज्य का विकास , व्यापार मार्गों का विकास , सिक्का-ढलाई का उद्भव) का विश्लेषण करें, जिसने 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा के मैदानों में द्वितीय शहरीकरण के उद्भव को बढ़ावा दिया।
- **विधर्मी सम्प्रदायों का उदय: नये आध्यात्मिक मार्ग**
  - **संदर्भ और शिक्षाएँ:** ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ (वैदिक कर्मकांड और जातिगत कठोरता के विरुद्ध प्रतिक्रिया) का परीक्षण करें जिसके कारण जैन धर्म (तीर्थंकर, अहिंसा, कर्म की अवधारणा), बौद्ध धर्म (बुद्ध की शिक्षाएँ , चार आर्य सत्य , अष्टांगिक मार्ग , बोधिसत्व की अवधारणा) और आजीविक (नियति या भाग्य) जैसे वैकल्पिक दर्शनों का उदय हुआ।
- **इस इकाई में महारत हासिल करने के लिए प्रमुख अवधारणाएँ, विचार और शब्द (पाठ्यक्रम के पृष्ठ 1 से):**
  - **भारतवर्ष:** भारतीय भूभाग का पारंपरिक, पौराणिक नाम।
  - **सभा और समिति:** प्रारंभिक वैदिक राजनीतिक सभाएँ।
  - **वर्णाश्रम:** चार गुना सामाजिक व्यवस्था और जीवन के चरण।
  - **वेदांत:** उपनिषदों पर आधारित दार्शनिक विद्यालय।
  - **पुरुषार्थ:** मानव जीवन के चार उद्देश्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)।
  - **रीना:** ऋण या दायित्व की अवधारणा।
  - **संस्कार:** संस्कार या अनुष्ठान।
  - **यज्ञ:** वैदिक अनुष्ठान बलिदान।
  - **गणतंत्र:** गणतांत्रिक राज्य।
  - **जनपद:** प्रादेशिक इकाइयाँ या प्रारंभिक राज्य।
  - **कर्म का सिद्धांत:** भविष्य के जीवन को आकार देने वाले कारण और प्रभाव का सिद्धांत।
  - **दण्डनीति / अर्थशास्त्र / सप्तांग:** शासन का विज्ञान, कौटिल्य का ग्रंथ, राज्य के सात अंग।

- **धर्मविजय:** धर्म द्वारा विजय (अशोक से संबंधित)।
- **स्तूप / चैत्य / विहार:** बौद्ध स्थापत्य संरचनाएँ।
- **बोधिसत्व / तीर्थंकर:** बौद्ध धर्म में प्रबुद्ध प्राणी / जैन धर्म में फोर्ड निर्माता।

अध्ययन कैसे करें (प्रभावी एवं विस्तृत रणनीतियाँ):

- **ऐतिहासिक पद्धतियों का गहन विश्लेषण**
  - **स्रोत विश्लेषण ग्रिड :** पुरातात्विक स्रोतों (एपिग्राफी, मुद्राशास्त्र) और साहित्यिक स्रोतों (स्वदेशी धार्मिक/धर्मनिरपेक्ष, विदेशी खाते) के लिए, विस्तृत ग्रिड बनाएं। कॉलम में शामिल हो सकते हैं : स्रोत का प्रकार, उदाहरण, दी गई जानकारी (राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक), साक्ष्य के रूप में ताकत, सीमाएँ/पूर्वाग्रह, और उनके अध्ययन से जुड़े प्रमुख विद्वान।
  - **डेटिंग तकनीकों का अनुप्रयोग:** डेटिंग विधियों के नाम याद करने के बजाय , जटिल वैज्ञानिक सूत्रों को याद करने के बजाय, यह समझने का प्रयास करें कि कौन सी विधियां किस सामग्री के लिए उपयुक्त हैं (उदाहरण 14, जैविक अवशेषों के लिए) और उनकी सापेक्ष सटीकता क्या है।
  - **नैतिक केस स्टडीज़ (काल्पनिक):** काल्पनिक परिदृश्यों पर विचार करें : यदि किसी इतिहासकार को कोई ऐसा स्रोत मिलता है जो उनके मुख्य तर्क का खंडन करता है , तो नैतिक कदम क्या होने चाहिए? कई स्रोतों से नोट्स लेते समय कोई अनजाने में साहित्यिक चोरी से कैसे बच सकता है? इन पर चिंतन करने से अवधारणाएँ अधिक मूर्त हो सकती हैं।
- **प्रारंभिक संस्कृतियों और सभ्यताओं का दृश्यीकरण और आत्मसात करना:**
  - **इंटरएक्टिव मैपिंग:** प्रमुख नवपाषाण, ताम्रपाषाण और हड़प्पा स्थलों को दर्शाने के लिए ऑनलाइन मैपिंग टूल का उपयोग करें या विस्तृत भौतिक मानचित्र बनाएं। भौगोलिक विशेषताओं (नदियाँ, पहाड़) को दर्शाने वाली परतें जोड़ें ताकि यह समझा जा सके कि इनका बस्तियों और व्यापार मार्गों पर क्या प्रभाव पड़ा। प्रमुख स्थलों से जुड़ी विशिष्ट कलाकृतियों या विशेषताओं को नोट करें (उदाहरण: मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार, लोथल में डॉकयार्ड)।
  - **सिंधु घाटी सभ्यता के लिए विषयगत मानसिक मानचित्र :** रैखिक नोट्स के बजाय , "सिंधु घाटी सभ्यता" के लिए एक केंद्रीय मानसिक मानचित्र बनाएं। "शहरी नियोजन," " अर्थव्यवस्था," "धर्म," " कला और शिल्प ," " समाज," " व्यापार," और "पतन" जैसे मुख्य विषयों के साथ शाखाएँ बनाएँ। फिर प्रत्येक शाखा में विशिष्ट विवरण , साक्ष्य और संबंधित साइटों के साथ उप - शाखाएँ हो सकती हैं।
  - **बहुस्तरीय समयरेखाएँ:** ऐसी समयरेखाएँ विकसित करें जो न केवल संस्कृतियों के अनुक्रम को दर्शाएं (पूर्व-हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा, परवर्ती हड़प्पा, नवपाषाण, ताम्रपाषाण ओवरलैप) बल्कि महत्वपूर्ण

तकनीकी नवाचारों (उदाहरण - तांबे, कांस्य, पॉलिश पत्थर के औजारों का परिचय) और जलवायु परिवर्तनों को भी चिह्नित करें, यदि आपके पढ़ने में चर्चा की गई हो।

- **वैदिक परिवर्तन और दर्शन को समझना**
  - **उदाहरण के साथ संकल्पनात्मक फ़्लैशकार्ड :** सभा, समिति, वर्णाश्रम, वेदांत, पुरुषार्थ, ऋण, संस्कार, यज्ञ जैसे शब्दों के लिए फ़्लैशकार्ड बनाएँ। एक तरफ़, शब्द लिखें। दूसरी तरफ़, शामिल करें: एक संक्षिप्त परिभाषा, वह अवधि जिसके लिए यह सबसे अधिक प्रासंगिक है (प्रारंभिक या बाद के वैदिक), इसकी विकसित प्रकृति (यदि कोई हो), और इसके उपयोग का एक संक्षिप्त उदाहरण या संदर्भ (उदाहरण के लिए, यज्ञ के लिए, अश्वमेध जैसे प्रकारों का उल्लेख करें)।
  - **सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के फ़्लोचार्ट :** प्रारंभिक वैदिक काल के जनजातीय, पशुपालक समाज से लेकर उत्तर वैदिक काल के अधिक व्यवस्थित, कृषि प्रधान और जटिल राज्य-आधारित समाज तक के संक्रमण को दृश्य रूप से चित्रित करें। दिखाएँ कि 'राजन' (राजा) जैसी संस्थाएँ कैसे विकसित हुईं और वर्ण व्यवस्था कैसे अधिक कठोर हो गई।
  - **दार्शनिक अवधारणा सारांश:** ब्रह्म, आत्मा और कर्म जैसे प्रमुख उपनिषदिक विचारों के लिए, उनके अर्थ और अंतर्संबंध को समझाते हुए अपने शब्दों में संक्षिप्त सारांश लिखें।
- **महाजनपदों एवं नवीन संप्रदायों का व्यवस्थित विश्लेषण**
  - **महाजनपद प्रोफाइल:** 16 महाजनपदों में से प्रत्येक के लिए एक तालिका या व्यक्तिगत प्रोफाइल बनाएं। इसमें निम्न कॉलम शामिल करें: नाम, राजधानी शहर, भौगोलिक स्थिति (उदाहरण: किस नदी के पास), प्रकार (राजशाही/गणतंत्र), प्रसिद्ध शासक (यदि कोई हो), और प्रमुख आर्थिक/रणनीतिक महत्व (उदाहरण: लौह अयस्कों और गंगा व्यापार पर मगध का नियंत्रण)।
  - **विषमपंथी संप्रदायों के लिए तुलनात्मक मैट्रिक्स :** जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीविकों के लिए, प्रत्येक संप्रदाय के लिए पंक्तियों और स्तंभों के साथ एक विस्तृत मैट्रिक्स का उपयोग करें: संस्थापक/प्रमुख व्यक्ति, मुख्य दार्शनिक सिद्धांत, ईश्वर/सृष्टि पर विचार, नैतिक सिद्धांत (विशेष रूप से अहिंसा), कर्म/पुनर्जन्म की अवधारणा, मुक्ति/मोक्ष का मार्ग, वैदिक अनुष्ठानों और जाति व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण, प्राप्त संरक्षण और भौगोलिक प्रसार। इससे समानताओं और महत्वपूर्ण अंतरों की पहचान करने में मदद मिलती है।
- **मूल अवधारणाओं को गहराई से समझना**
  - **प्रासंगिक पैराग्राफ:** पाठ्यक्रम सूची से प्रत्येक टर्म के लिए एक विस्तृत पैराग्राफ लिखें (सिर्फ एक वाक्य नहीं)। इस पैराग्राफ में निम्नलिखित बातें बताई जानी चाहिए:
    1. शब्द का शाब्दिक अर्थ.
    2. वह ऐतिहासिक काल और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ जिसमें यह प्रमुख था।
    3. इसका विशिष्ट महत्व (उदाहरण: राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक)।

4. इससे संबद्ध कोई भी प्रमुख व्यक्ति , ग्रंथ या घटनाएँ (उदाहरण: "दण्डनीति" - कौटिल्य का अर्थशास्त्र; "धर्मविजय" - अशोक)।
5. बाद की अवधियों पर इसकी विरासत या प्रभाव, यदि लागू हो।

- **सक्रिय शिक्षण और आत्म-मूल्यांकन:**
  - **अवधारणाओं को पढ़ाना:** सिंधु घाटी के पतन के सिद्धांतों या वैदिक दार्शनिक विचारों जैसे जटिल विषयों को अपने साथी या खुद को इस तरह समझाने की कोशिश करें जैसे कि आप किसी क्लास को पढ़ा रहे हों। इससे आपकी समझ में कमियाँ उजागर होती हैं।
  - **स्रोत-आधारित प्रश्न:** किसी स्रोत (उदाहरण: मेगस्थनीज की इंडिका) के बारे में पढ़ते समय , अपने आप से पूछें : इसे किसने लिखा ? कब? क्यों? किसके लिए? इसके संभावित पूर्वाग्रह क्या हैं ? इसकी तुलना अन्य समकालीन स्रोतों (यदि कोई हो) से कैसे की जा सकती है?
  - **निबंध की रूपरेखा का अभ्यास करें** "द्वितीय शहरीकरण की प्रकृति" या "बौद्ध धर्म और जैन धर्म की शिक्षाओं की तुलना और अंतर " जैसे व्यापक विषयों के लिए विस्तृत निबंध रूपरेखा बनाएं। यह आपके विचारों को संरचित करने और प्रासंगिक जानकारी को याद करने में मदद करता है।

यूनिट I के लिए परीक्षा टिप्स (MCQ फोकस):

- **स्रोत की पहचान :** उन बहुविकल्पीय प्रश्नों के लिए तैयार रहें , जिनमें आपसे स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक, प्राथमिक, द्वितीयक) को वर्गीकृत करने या विशिष्ट कार्यों /कलाकृतियों को उनके प्रकार से मिलान करने के लिए कहा जाएगा (उदाहरण: "पुराण किस प्रकार के साहित्यिक स्रोत का उदाहरण हैं?")।
- **कालानुक्रमिक प्रश्न:** आपसे चरणों (नवपाषाण, ताम्रपाषाण, हड़प्पा स्तर), राजवंशों, या धार्मिक संप्रदायों के उद्भव को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करने के लिए प्रश्न पूछे जाएंगे।
- **IVC साइट विशेषज्ञता:** प्रमुख सिंधु घाटी स्थलों की विशिष्ट विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करें (उदाहरण "कौन सा हड़प्पा स्थल अपने गोदी के लिए जाना जाता है ?" - लोथल)। इसके अलावा, नगर नियोजन, मुहरों और मिट्टी के बर्तनों के प्रकार जैसी सामान्य विशेषताओं को जानें।
- **शब्दावली अनुवाद:** प्रश्नों में विशिष्ट वैदिक शब्दों (सभा, समिति, पुरोहित, यज्ञ) या दार्शनिक अवधारणाओं (कर्म, ऋण, पुरुषार्थ) के अर्थ पूछे जा सकते हैं।
- **महाजनपद मिलान:** महाजनपदों का उनकी राजधानियों से मिलान करने के लिए तैयार रहें या पहचानें कि कौन से राजतंत्र (गणराज्य) थे और कौन से राजतंत्र (गणराज्य) थे।

- **विधर्मी संप्रदाय - मुख्य अंतर:** बहुविकल्पीय प्रश्न संभवतः जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीविकों के मुख्य दर्शन, प्रमुख व्यक्तियों (तीर्थंकर बनाम बोधिसत्व) और महत्वपूर्ण शब्दावलियों (उदाहरण: हिंसा, निर्वाण, स्तूप, चैत्य) के बीच अंतर करने की आपकी क्षमता का परीक्षण करेंगे।
- **अवधारणा अनुप्रयोग:** समझें कि कैसे "धर्मविजय" जैसी व्यापक अवधारणाएं विशिष्ट शासकों (अशोक) से संबंधित हैं या "सप्तांग सिद्धांत" राजनीतिक ग्रंथों (अर्थशास्त्र) से संबंधित हैं।
- **"निम्नलिखित का मिलान करें":** यह इकाई "निम्नलिखित का मिलान करें " प्रश्नों के लिए उपयुक्त है , जिसमें स्थल और खोज, शब्द और अर्थ, या ग्रंथ और लेखक/धर्म शामिल हैं।

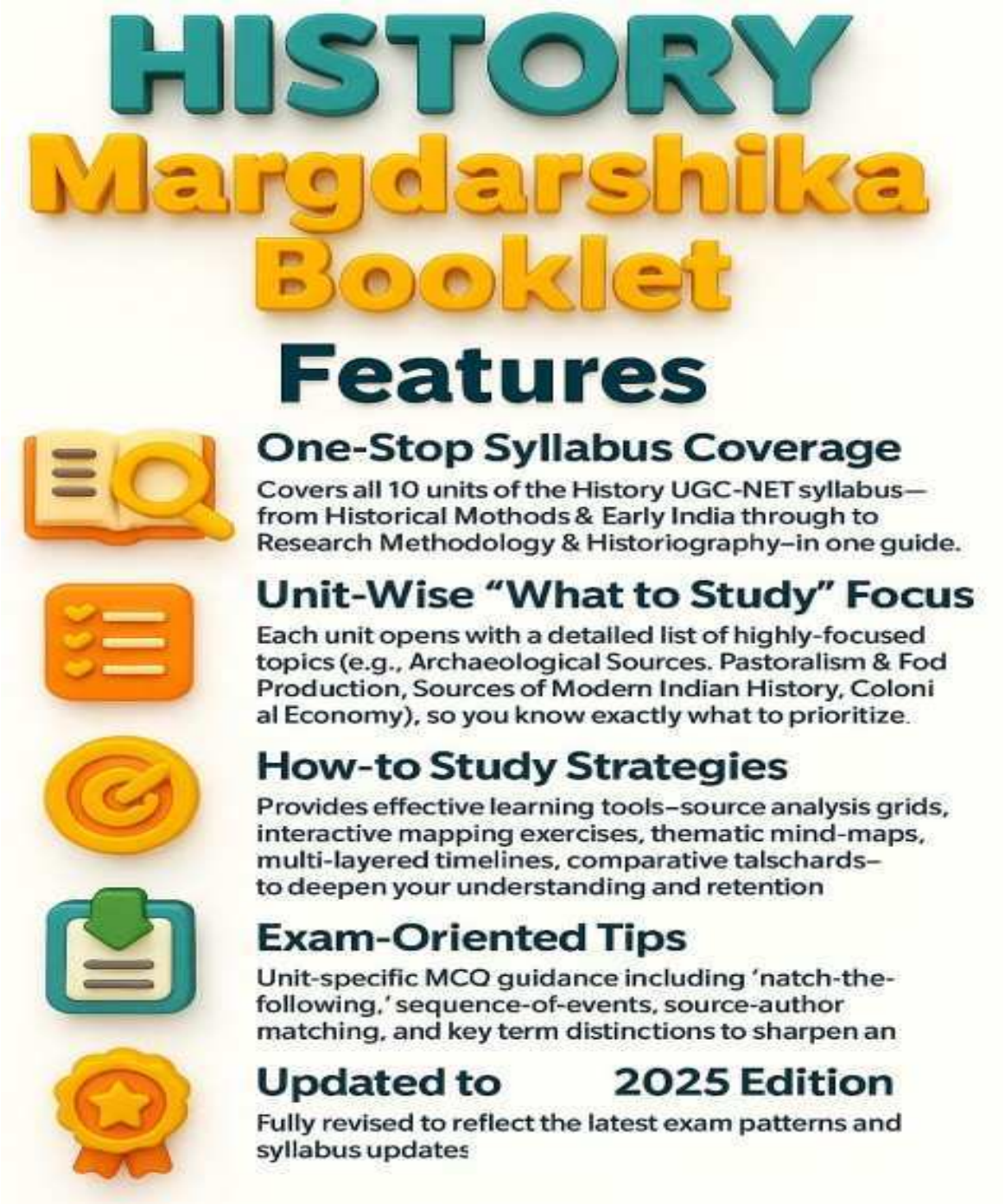

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect – History

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट इतिहास ई-बुकलेट INDEX

इकाई – I

- **स्रोतों पर बातचीत:**
  - पुरातात्विक स्रोत:
    - अन्वेषण
    - उत्खनन
    - पुरालेखशास्त्र और मुद्राशास्त्र
  - पुरातात्विक स्थलों का काल निर्धारण
  - साहित्यिक स्रोत:
    - स्वदेशी साहित्य:
      - प्राथमिक और द्वितीयक: डेटिंग की समस्या
      - धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष साहित्य
      - मिथक, किंवदंतियाँ, आदि.
    - विदेशी खाते:
      - यूनानी
      - चीनी
      - अरबी
- **पशुपालन और खाद्य उत्पादन:**
  - नवपाषाण और ताम्रपाषाण चरण:
    - समझौता
    - वितरण
    - औजार
    - विनिमय के पैटर्न
- **सिंधु/हड़प्पा सभ्यता:**

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

- मूल
- क्षेत्र
- प्रमुख स्थल
- निपटान पैटर्न
- शिल्प विशेषज्ञता
- धर्म
- समाज और राजनीति
- सिंधु सभ्यता का पतन
- आंतरिक और बाह्य व्यापार
- भारत में पहला शहरीकरण

- **वैदिक और उत्तर वैदिक काल:**
  - आर्यन वाद-विवाद
  - राजनीतिक और सामाजिक संस्थाएँ
  - राज्य संरचना और राज्य के सिद्धांत
  - वर्ण और सामाजिक स्तरीकरण का उदय
  - धार्मिक और दार्शनिक विचार
  - लौह प्रौद्योगिकी का परिचय
  - दक्षिण भारत के महापाषाण
- **राज्य प्रणाली का विस्तार:**
  - महाजनपद
  - राजतंत्रीय और गणतांत्रिक राज्य
  - छठी शताब्दी ईसा पूर्व में आर्थिक और सामाजिक विकास और द्वितीय शहरीकरण का उदय
  - विधर्मी संप्रदायों का उदय:
    - जैन धर्म
    - बुद्ध धर्म

- आजीविका

इकाई - II

- **राज्य से साम्राज्य तक:**
  - मगध का उदय
  - सिकंदर के अधीन यूनानी आक्रमण और उसके प्रभाव
  - मौर्य विस्तार
  - मौर्य राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था
  - अशोक का धम्म और उसका स्वरूप
  - मौर्य साम्राज्य का पतन और विघटन
  - मौयन कला और वास्तुकला
  - अशोक के शिलालेख: भाषा और लिपि
- **साम्राज्य का विघटन और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय**
  - इंडो-यूनानी
  - सुंगास
  - सातवाहन
  - कुषाण और शक-क्षत्रप
  - संगम साहित्य , दक्षिण भारत की राजनीति और समाज जैसा कि संगम साहित्य में परिलक्षित होता है
  - दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवी तक व्यापार और वाणिज्य
  - रोमन दुनिया के साथ व्यापार
  - महायान बौद्ध धर्म का उदय
  - खारवेल और जैन धर्म
  - मौर्योत्तर कला और वास्तुकला :
    - गांधार स्कूल

    - मथुरा स्कूल
    - अमरावती स्कूल
- **गुप्त वाकाटक युग:**
    - राजनीति और समाज
    - कृषि अर्थव्यवस्था
    - भूमि अनुदान
    - भूमि राजस्व और भूमि अधिकार
    - गुप्त सिक्के
    - मंदिर वास्तुकला की शुरुआत
    - पौराणिक हिंदू धर्म का उदय
    - संस्कृत भाषा और साहित्य का विकास
    - विज्ञान प्रौद्योगिकी, खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा में विकास
- **हर्ष और उनका समय:**
    - प्रशासन और धर्म
- **आंध्रदेश में सलंकायन और विष्णुकुंडिन ।**

इकाई - III

- **क्षेत्रीय राज्यों का उदय:**
    - दक्कन के राज्य:
        - गंगा
        - कदमबास
        - पश्चिमी और पूर्वी चालुक्य
        - राष्ट्रकूट
        - कल्याणी चालुक्यों
        - काकतीय

    - होयसला
    - यादवों
  - दक्षिण भारत के राज्य:
    - पल्लव
    - सेरस
    - कोला
    - पांड्या
  - पूर्वी भारत के राज्य:
    - बंगाल के पाल और सेन
    - कामरूप के वर्मन
    - ओडिशा के भौमकारा और सोमवमसिस
  - पश्चिमी भारत के राज्य:
    - वल्लभी के मैत्रक
    - गुजरात के चालुक्य
  - उत्तर भारत के राज्य:
    - गुर्जर-प्रतिहार
    - कलकुरी-चेदिस
    - गहड़वाल
    - परमारस
- **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत की विशेषताएँ**
  - प्रशासन और राजनीतिक संरचना
  - राजत्व की वैधता
- **कृषि अर्थव्यवस्था:**
  - भूमि अनुदान
  - बदलते उत्पादन संबंध
  - श्रेणीबद्ध भूमि अधिकार और किसानी

- जल संसाधन
- कराधान प्रणाली
- सिक्के और मुद्रा प्रणाली

- **व्यापार और शहरीकरण:**
  - व्यापार के पैटर्न
  - शहरी बस्तियाँ
  - बंदरगाह और व्यापार मार्ग
  - माल और विनिमय
  - व्यापार संघ
  - दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापार और उपनिवेशीकरण
- **ब्राह्मणवादी धर्मों का विकास :**
  - वैष्णव और शैव
  - मंदिरों
  - संरक्षण और क्षेत्रीय प्रभाव
  - मंदिर वास्तुकला और क्षेत्रीय शैलियाँ
  - दान, तीर्थ और भक्ति
  - तमिल भक्ति आंदोलन - शंकर , माधव और रामानुजाचार्य
- **समाज:**
  - वर्ण, जाति और जातियों का प्रसार
  - महिलाओं की स्थिति
  - लिंग, विवाह और संपत्ति संबंध
  - सार्वजनिक जीवन में महिलाएँ
  - कृषक के रूप में जनजातियाँ और वर्ण व्यवस्था में उनका स्थान
  - अस्पृश्यता
- **शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थान:**
  - शिक्षा के केंद्र के रूप में अग्रहार , मठ और महाविहार

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- क्षेत्रीय भाषाओं का विकास

- **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में राज्य गठन की बहसें**
  - ए) सामंती मॉडल
  - बी) खंडीय मॉडल
  - सी) एकीकृत मॉडल
- **अरब अनुबंध:**
  - सुलेमान ग़ज़नवी विजय
  - अलबरूनी के खाते

इकाई - IV

- **मध्यकालीन भारतीय इतिहास का स्रोत:**
  - पुरातात्विक, पुरालेखीय और मुद्राशास्त्रीय स्रोत
  - भौतिक साक्ष्य और स्मारक
  - इतिहास
  - साहित्यिक स्रोत:
    - फ़ारसी
    - संस्कृत
    - क्षेत्रीय भाषाएँ
  - दफ़्तर खन्ना :
    - फ़िरमान्स
    - बही / पोथी / अख़बारत
  - विदेशी यात्रियों के वृत्तांत - फ़ारसी और अरबी
- **राजनीतिक घटनाक्रम:**
  - दिल्ली सल्तनत:
    - घोरिड

- तुर्क
- खिलजी
- तुगलक
- सैयद
- लोदी

- दिल्ली सल्तनत का पतन
- मुगल साम्राज्य की स्थापना :
  - बाबर
  - हुमायूँ और सूरी
- अकबर से औरंगजेब तक विस्तार और समेकन
- मुगल साम्राज्य का पतन
- परवर्ती मुग़ल और मुग़ल साम्राज्य का विघटन
- विजयनगर और बहमनी
- दक्कन सल्तनत:
  - बीजापुर
  - गोलकुंडा
  - बीदर
  - बरार
  - अहमदनगर
- उदय, विस्तार और विघटन (दक्कन सल्तनत का)
- पूर्वी गंगा और सूर्यवंशी गजपति
- मराठों का उत्थान और शिवाजी द्वारा स्वराज की स्थापना
  - पेशवाओं के अधीन इसका विस्तार
  - मुगल -मराठा संबंध
  - मराठा संघ
  - (मराठों के) पतन के कारण

इकाई - V

- **प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था:**
  - सल्तनत के अधीन प्रशासन:
    - राज्य की प्रकृति - ईश्वरशासित और ईश्वरकेन्द्रित
    - केंद्रीय, प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन
    - उत्तराधिकार का कानून
  - शेरशाह के प्रशासनिक सुधार
  - मुगल प्रशासन - केंद्रीय, प्रांतीय और स्थानीय:
    - मनसबदारी और जागीरदारी प्रथाएँ
  - विजयनगर राज्य एवं राजनीति
  - दक्कन में प्रशासनिक व्यवस्था
  - बहमनी प्रशासनिक व्यवस्था
  - मराठा प्रशासन - अस्ता प्रधान
  - दिल्ली सल्तनत और मुगलों के अधीन सीमांत नीतियां
  - सल्तनत और मुगलों के दौरान अंतर-राज्यीय संबंध
  - कृषि उत्पादन और सिंचाई प्रणाली
  - गांव की अर्थव्यवस्था
  - किसान-जनता
  - अनुदान और कृषि ऋण
  - शहरीकरण और जनसांख्यिकीय संरचना
  - उद्योग:
    - सूती वस्त्र
    - हस्तशिल्प
    - कृषि आधारित उद्योग
    - संगठन , कारखाने और प्रौद्योगिकी

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

- व्यापार और वाणिज्य:
  - राज्य की नीतियां
  - आंतरिक और बाह्य व्यापार: यूरोपीय व्यापार
  - व्यापार केंद्र और बंदरगाह
  - परिवहन और संचार
- हुंडी (विनिमय पत्र) और बीमा
- राज्य की आय और व्यय
- मुद्रा, टकसाल प्रणाली
- अकाल और किसान विद्रोह

इकाई - VI

- **समाज और संस्कृति:**
  - सामाजिक संगठन और सामाजिक संरचना
  - सूफी:
    - उनके आदेश, विश्वास और प्रथाएँ
    - प्रमुख सूफी संत
    - सामाजिक समन्वय
  - भक्ति आंदोलन:
    - शैव
    - वैष्णव
    - शक्तिवाद
  - मध्यकालीन काल के संत - उत्तर और दक्षिण:
    - सामाजिक-राजनीतिक और धार्मिक जीवन पर उनका प्रभाव
    - मध्यकालीन भारत की महिला संत
  - सिख आंदोलन:

- गुरु नानक देव: उनकी शिक्षाएं और अभ्यास
- आदि ग्रंथ
- खालसा

- सामाजिक वर्गीकरण:
  - सत्ताधारी वर्ग
  - प्रमुख धार्मिक समूह
  - उलेमा
  - व्यापारिक और व्यावसायिक वर्ग
  - राजपूत समाज
- ग्रामीण समाज:
  - छोटे सरदार
  - ग्राम अधिकारी
  - कृषक और गैर-कृषक वर्ग
  - कारीगरों
- महिलाओं की स्थिति:
  - जनाना प्रणाली
  - देवदासी प्रथा
- शिक्षा का विकास:
  - शिक्षा और पाठ्यक्रम केंद्र
  - मदरसा शिक्षा
- ललित कला:
  - चित्रकला के प्रमुख स्कूल:
    - मुगल
    - राजस्थानी
    - पहाड़ी
    - गढ़वाली

- संगीत का विकास
- कला और वास्तुकला:
  - इंडो-इस्लामिक वास्तुकला
  - मुगल वास्तुकला
  - क्षेत्रीय शैलियाँ
- इंडो-अरबी वास्तुकला
- मुगल गार्डन
- मराठा किले, तीर्थस्थल और मंदिर

इकाई -VII

- **आधुनिक भारतीय इतिहास के स्रोत:**
  - अभिलेखीय सामग्री
  - आत्मकथाएँ और संस्मरण
  - समाचार पत्र
  - मौखिक साक्ष्य
  - रचनात्मक साहित्य और चित्रकला
  - स्मारकों
  - सिक्के
- **ब्रिटिश शक्ति का उदय:**
  - 16वीं से 18वीं शताब्दी में भारत में यूरोपीय व्यापारी:
    - पुर्तगाली
    - डच
    - फ्रेंच
    - ब्रिटिश
  - भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व की स्थापना और विस्तार

- **प्रमुख भारतीय राज्यों के साथ ब्रिटिश संबंध:**
  - बंगाल
  - अवध
  - हैदराबाद
  - मैसूर
  - कर्नाटक
  - पंजाब
- **1857 का विद्रोह:**
  - कारण
  - प्रकृति
  - प्रभाव
- **कंपनी और क्राउन का प्रशासन:**
  - ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन केंद्रीय और प्रांतीय संरचना का विकास
- **कंपनी के अधीन सर्वोच्चता , सिविल सेवा, न्यायपालिका, पुलिस और सेना**
- **ब्रिटिश नीति और क्राउन के अधीन रियासतों में सर्वोच्चता**
- **स्थानीय स्वशासन**
- **संवैधानिक परिवर्तन, 1909 - 1935**

इकाई - VIII

- **औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था:**
  - व्यापार की बदलती संरचना, मात्रा और दिशा
  - कृषि का विस्तार और व्यावसायीकरण
  - ज़मीन के अधिकार
  - भूमि बस्तियाँ
  - ग्रामीण ऋणग्रस्तता

- भूमिहीन मजदूर
- सिंचाई और नहर प्रणाली

- **उद्योगों का पतन:**
  - कारीगरों की बदलती सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ
  - वि- शहरीकरण
  - आर्थिक नाला
  - विश्व युद्ध और अर्थव्यवस्था
- **ब्रिटिश औद्योगिक नीति:**
  - प्रमुख आधुनिक उद्योग
  - कारखाना कानून की प्रकृति
  - श्रम और ट्रेड यूनियन आंदोलन
- **मौद्रिक नीति, बैंकिंग, मुद्रा और विनिमय**
- **रेलवे और सड़क परिवहन**
- **संचार - डाक एवं तार**
- **केन्द्रों का विकास :**
  - नगर नियोजन और वास्तुकला की नई विशेषताएं
  - शहरी समाज और शहरी समस्याएं
- **अकाल, महामारी और सरकारी नीति**
- **आदिवासी और किसान आंदोलन**
- **भारतीय समाज में परिवर्तन:**
  - ईसाई धर्म से संपर्क - मिशन और मिशनरी
  - भारतीय सामाजिक और आर्थिक प्रथाओं और धार्मिक विश्वासों की आलोचना
  - शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियाँ
- **नई शिक्षा:**
  - सरकारी नीति
  - स्तर और सामग्री

- अंग्रेजी भाषा
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा का विकास - आधुनिकता की ओर

- **भारतीय पुनर्जागरण - सामाजिक-धार्मिक सुधार**
- **मध्यम वर्ग का उदय**
- **जाति संघ और जाति गतिशीलता**
- **महिलाओं का प्रश्न:**
  - राष्ट्रवादी विमर्श
  - महिला संगठन
  - महिलाओं से संबंधित ब्रिटिश कानून
  - लिंग पहचान और संवैधानिक स्थिति
- **प्रिंटिंग प्रेस - पत्रकारिता गतिविधि और जनमत**
- **भारतीय भाषाओं और साहित्यिक रूपों का आधुनिकीकरण - चित्रकला, संगीत और प्रदर्शन कलाओं में पुनर्रचना**

इकाई - IX

- **भारतीय राष्ट्रवाद का उदय:**
  - राष्ट्रवाद का सामाजिक और आर्थिक आधार
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म:**
  - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधाराएँ और कार्यक्रम , 1885-1920:
    - प्रारंभिक राष्ट्रवादी
    - मुखर राष्ट्रवादी
    - क्रांतिकारियों
- **स्वदेशी और स्वराज**
- **गांधीवादी जन आंदोलन**

- **सुभाष चंद्र बोस और आई.एन.ए.**
- **राष्ट्रीय आंदोलन में मध्यम वर्ग की भूमिका**
- **राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी**
- **वामपंथी राजनीति**
- **दलित वर्ग आंदोलन**
- **सांप्रदायिक राजनीति:**
  - मुस्लिम लीग और पाकिस्तान की उत्पत्ति
- **स्वतंत्रता और विभाजन की ओर**
- **स्वतंत्रता के बाद का भारत:**
  - विभाजन की चुनौतियाँ
  - भारतीय रियासतों का एकीकरण:
    - कश्मीर
    - हैदराबाद
    - जूनागढ़
  - बी.आर. अंबेडकर - भारतीय संविधान का निर्माण, इसकी विशेषताएं
  - नौकरशाही की संरचना
  - नई शिक्षा नीति
  - आर्थिक नीतियां और योजना प्रक्रिया
  - विकास, विस्थापन और जनजातीय मुद्दे
  - राज्यों का भाषाई पुनर्गठन
  - केंद्र-राज्य संबंध
  - विदेश नीति पहल - पंचशील
  - भारतीय राजनीति की गतिशीलता-आपातकाल
  - भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण , निजीकरण और वैश्वीकरण

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

इकाई - X

- **ऐतिहासिक पद्धति, अनुसंधान, कार्यप्रणाली और इतिहासलेखन:**
  - इतिहास का दायरा और महत्व
  - इतिहास में वस्तुनिष्ठता और पूर्वाग्रह
  - ह्यूरिस्टिक्स ऑपरेशन, इतिहास में आलोचना, संश्लेषण और प्रस्तुति
  - इतिहास और उसके सहायक विज्ञान
  - इतिहास एक विज्ञान, कला या सामाजिक विज्ञान है?
  - इतिहास में कारण और कल्पना
  - क्षेत्रीय इतिहास का महत्व
  - भारतीय इतिहास की नवीनतम प्रवृत्तियाँ
- **अनुसंधान क्रियाविधि:**
  - इतिहास में परिकल्पना
  - प्रस्तावित अनुसंधान का क्षेत्र
  - स्रोत - डेटा संग्रह, प्राथमिक / द्वितीयक, मूल और पारगमन स्रोत
  - ऐतिहासिक अनुसंधान में रुझान
  - हालिया भारतीय इतिहासलेखन
  - इतिहास में विषय का चयन
  - नोट्स लेना, संदर्भ, फुटनोट और ग्रंथ सूची
  - थीसिस और असाइनमेंट लेखन
  - साहित्यिक चोरी, बौद्धिक बेईमानी और इतिहास लेखन
- **इतिहासलेखन:**
  - ऐतिहासिक लेखन की शुरुआत - ग्रीक, रोमन और चर्च इतिहासलेखन
  - पुनर्जागरण और इतिहास लेखन पर इसका प्रभाव
  - ऐतिहासिक लेखन के नकारात्मक और सकारात्मक स्कूल
  - इतिहास लेखन में बर्लिन क्रांति - वॉन रांके

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

प्रोफेसर्स ADDA 2025

NET / JRF / A. प्रोफेसर / CUET के लिए वन स्टॉप समाधान

- इतिहास का मार्क्सवादी दर्शन - वैज्ञानिक भौतिकवाद
- इतिहास का चक्रीय सिद्धांत - ओसवाल्ड स्पेंगलर
- चुनौती और प्रतिक्रिया सिद्धांत - अर्नोल्ड जोसेफ टॉयनबी
- इतिहास में उत्तर-आधुनिकतावाद

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

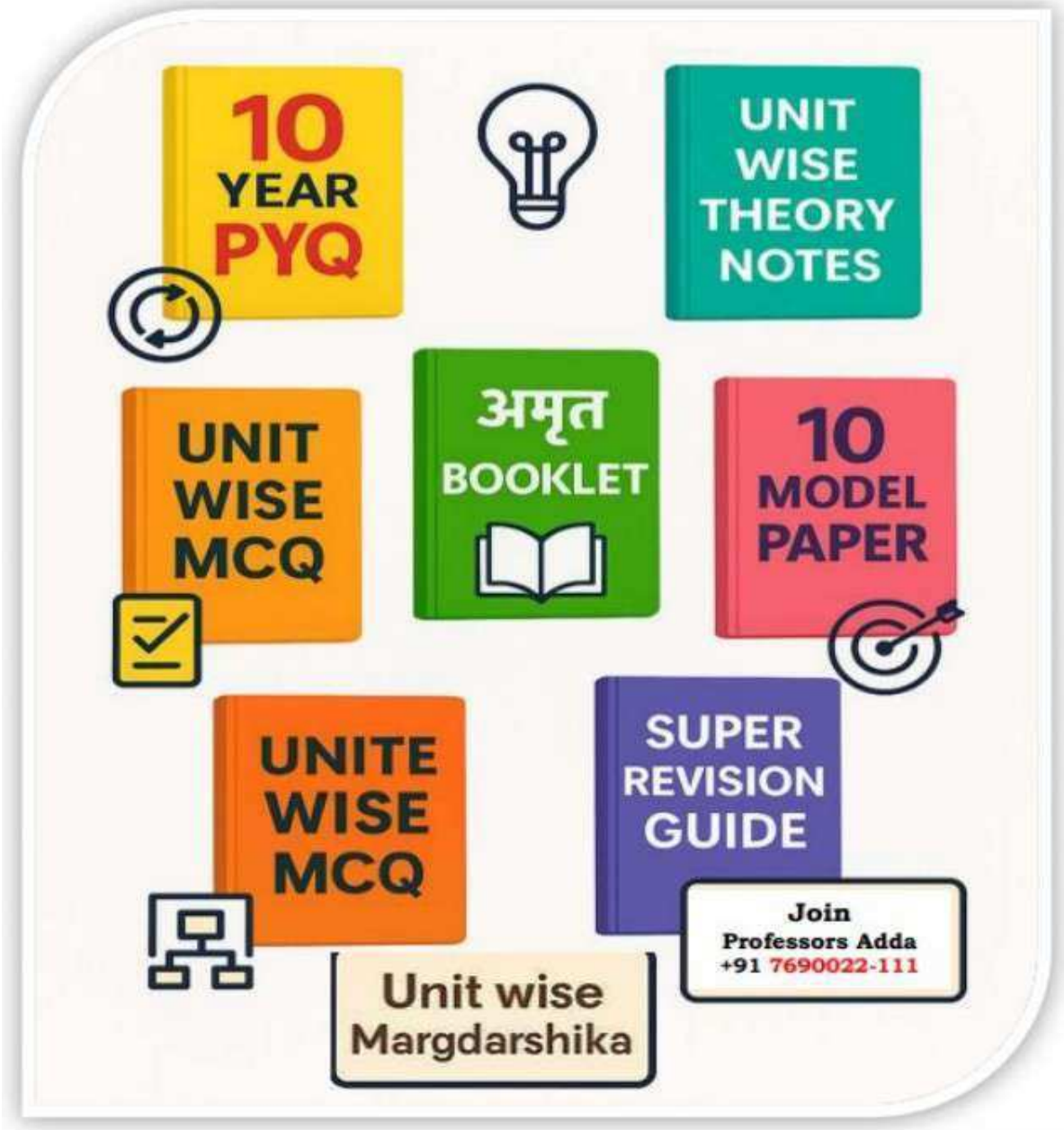

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

इतिहास इकाई-1 ई-पुस्तिका नोट्स & Sample

चतुर्थ. वैदिक और उत्तर वैदिक काल (लगभग 1500-600 ई.पू.)

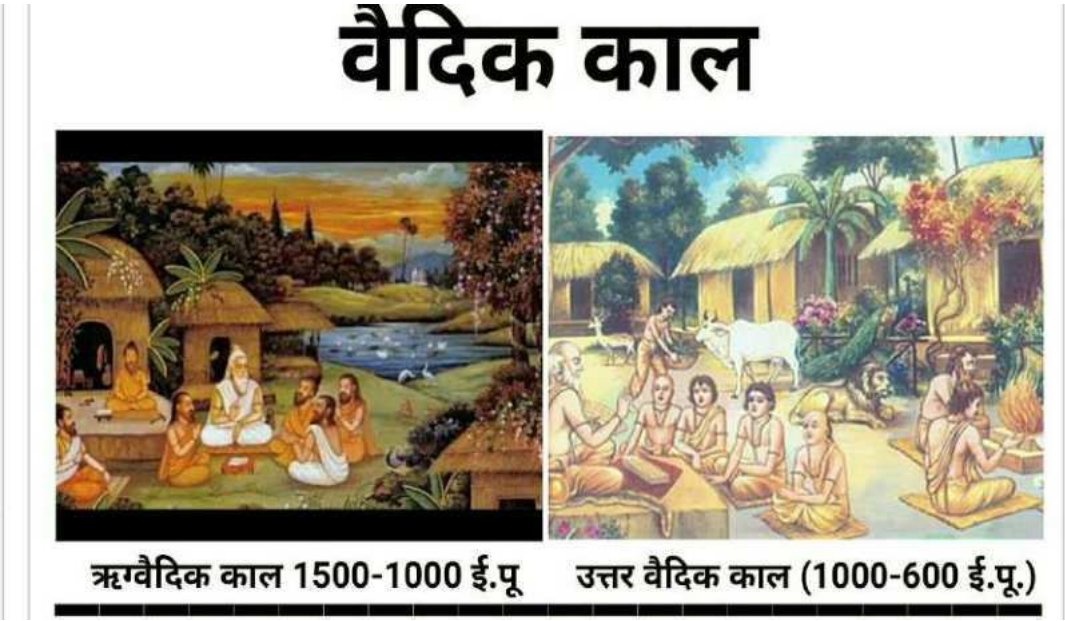

यह काल सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद उत्तर भारत में इंडो-आर्यन भाषी समुदायों के आगमन, बसावट और विस्तार का काल है।

ए. आर्यन वाद-विवाद:

भारतीय इतिहास में सबसे अधिक बहस वाले विषयों में से एक।

- **मूल घर:** सिद्धांतों में शामिल हैं:
  - **मध्य एशियाई मैदान (मैक्स मुलर, गॉर्डन चाइल्ड, आदि):** सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत अकादमिक सिद्धांत, मजबूत भाषाई साक्ष्य (इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार) और घोड़े और रथ के पुरातात्विक निष्कर्षों द्वारा समर्थित है। पोंटिक-कैस्पियन मैदान से क्रमिक प्रवास का सुझाव देता है।
  - **आर्कटिक क्षेत्र (बाल गंगाधर तिलक):** वैदिक ग्रंथों में लंबे दिन और रात के संदर्भों पर आधारित ।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **स्वदेशी मूल / भारत से बाहर का सिद्धांत:** कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तावित एक सिद्धांत (अक्सर वैचारिक रूप से प्रेरित) यह तर्क देते हुए कि आर्य भारत के मूल निवासी थे और बाहर की ओर चले गए। इस सिद्धांत में पर्याप्त भाषाई और आनुवंशिक समर्थन का अभाव है।

- **प्रवास बनाम आक्रमण:**
  - **"आर्यन आक्रमण सिद्धांत" (अस्वीकृत):** 1940 के दशक में मोर्टिमर व्हीलर द्वारा प्रतिपादित, आर्यों के विनाशकारी आक्रमण का सुझाव देता है जिन्होंने हड़प्पा सभ्यता को सैन्य रूप से उखाड़ फेंका। आक्रमणकारियों के कारण व्यापक विनाश या नरसंहार के निर्णायक पुरातात्विक साक्ष्य की कमी और हड़प्पा और वैदिक संस्कृतियों के बीच स्पष्ट अंतर के कारण यह सिद्धांत काफी हद तक अस्वीकृत है।
  - **"आर्यन प्रवास/प्रसार सिद्धांत" (प्रचलित अकादमिक सहमति):** सुझाव देता है कि इंडो-आर्यन भाषी कई शताब्दियों (लगभग 2000-1500 ईसा पूर्व) में मध्य एशियाई मैदानों से कई तरंगों में पलायन कर गए। यह एक सांस्कृतिक प्रसार प्रक्रिया थी जिसमें भाषा, वैदिक अनुष्ठान, घोड़े और रथ का प्रसार शामिल था, जो एक तेज, विनाशकारी सैन्य विजय के बजाय मौजूदा स्वदेशी आबादी के साथ बातचीत करता था।

- **प्रवास के साक्ष्य:**
  - **भाषाविज्ञान:** संस्कृत (प्राचीन इंडो-आर्यन) और अन्य इंडो-यूरोपीय भाषाओं (उदाहरण: ईरान में अवेस्तान, ग्रीक, लैटिन, जर्मनिक, स्लाविक भाषाएँ) के बीच मजबूत भाषाई संबंध। परिवार, मवेशियों और युद्ध के लिए साझा शब्दावली।
  - **पुरातत्व:** गंगा-यमुना दोआब में चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) संस्कृति (लगभग 1200-600 ईसा पूर्व) स्थलों की खोज, जो प्रारंभिक वैदिक बस्तियों से जुड़े हैं, अक्सर उत्तर हड़प्पा/उत्तर-हड़प्पा स्थलों के साथ ओवरलैप या अनुक्रम दिखाते हैं। विनाशकारी आक्रमण के लिए निश्चित पुरातात्विक साक्ष्य का अभाव, लेकिन घोड़े के अवशेष और रथ से संबंधित कलाकृतियाँ मौजूद हैं (हालाँकि प्रारंभिक काल में दुर्लभ हैं)।
  - **आनुवंशिक अध्ययन:** हालिया आनुवंशिक शोध मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवासन पैटर्न का समर्थन करने वाले साक्ष्य प्रदान करता है।
  - **पाठ्य सामग्री:** ऋग्वेद में घोड़ों, रथों और खानाबदोश/पशुपालक जीवन शैली का उल्लेख है।

बी. राजनीतिक और सामाजिक संस्थाएँ:

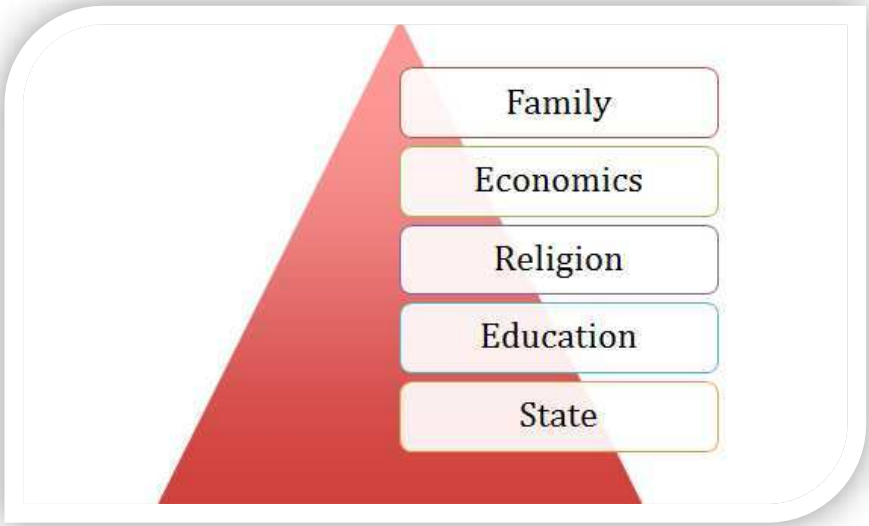

1. **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व):**
   - **राजनीतिक इकाई:** जन (जनजाति या कबीला) प्राथमिक राजनीतिक इकाई थी। वफ़ादारी कबीले के प्रति थी, किसी निश्चित क्षेत्र के प्रति नहीं। आर्य अर्ध-खानाबदोश पशुपालक थे।
   - **राजन (मुखिया):** आदिवासी मुखिया को राजन या गोप (गाय का रक्षक) कहा जाता था। उसका पद वंशानुगत या निरंकुश नहीं था, अक्सर जनजाति (विशा) द्वारा युद्ध में उसकी बहादुरी और कौशल के लिए चुना जाता था। उसकी शक्ति आदिवासी सभाओं द्वारा सीमित थी।
   - **सभाएँ:** निर्णय लेने और राजन की शक्ति की जाँच करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।
     - **सभा:** वरिष्ठों या महत्वपूर्ण जनजातीय सदस्यों की एक परिषद, जो विचार-विमर्श और न्यायिक कार्य करती है।
     - **समिति:** सम्पूर्ण जनजाति की एक आम सभा, जिसके पास राजा को चुनने या पदच्युत करने सहित व्यापक शक्तियां होती हैं।
     - **विदथ:** एक पुरानी जनजातीय सभा, जो विभिन्न कार्य (सैन्य, आर्थिक, धार्मिक) करती थी।
   - **वर्ण व्यवस्था (प्रारंभिक):** प्रारंभ में लचीली, जन्म के बजाय व्यवसाय पर आधारित।
     - ब्राह्मण (पुजारी), क्षत्रिय (योद्धा/शासक), वैश्य (सामान्य लोग, उत्पादक - कृषक, व्यापारी), शूद्र (सेवक, मजदूर)।
     - वर्णों के बीच गतिशीलता संभव थी। ऋग्वेद के 10वें मंडल में पुरुष सूक्त में ब्रह्मांडीय

मनुष्य से चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, लेकिन यह बाद में जोड़ा गया है।

- **परिवार (कुल):** पितृसत्तात्मक, संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी। सबसे बड़ा पुरुष मुखिया (कुलप) होता था।
- **महिलाओं की स्थिति:** बाद के समय की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक। महिलाएँ सभा और विदथ में भाग ले सकती थीं, भजन लिख सकती थीं (उदाहरण: घोषा, लोपामुद्रा, अपाला), अपने पति (स्वयंवर) चुन सकती थीं और वैदिक ग्रंथों का अध्ययन कर सकती थीं। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।

2. **उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000-600 ईसा पूर्व):**
   - **प्रादेशिक राज्यों में परिवर्तन:** जनों ने जनपद नामक बड़ी प्रादेशिक इकाइयों में एकीकरण करना शुरू कर दिया। यह परिवर्तन उपजाऊ गंगा-यमुना दोआब (लोहे के औजारों द्वारा सक्षम) में स्थिर कृषि और बढ़ती आबादी द्वारा प्रेरित था।
   - **राजशाही प्रवृत्तियाँ:** राजा की शक्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। राजत्व अधिकाधिक वंशानुगत और पवित्र होता गया, जो दैवीय सत्ता से जुड़ा हुआ था। उसने निश्चित क्षेत्रों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया।
   - **विस्तृत अनुष्ठान:** भव्य शाही बलिदान (उदाहरण: अभिषेक के लिए राजसूय, शाही संप्रभुता के लिए अश्वमेध, वर्चस्व और शक्ति के लिए वाजपेय) राजा की शक्ति को वैध बनाने, अन्य प्रमुखों पर अपने प्रभुत्व का दावा करने और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए किए जाते थे। ये अनुष्ठान महंगे थे और ब्राह्मणों की शक्ति को बढ़ाते थे।
   - **सभाओं का पतन:** सभा और समिति ने अपनी पूर्व शक्ति और प्रभाव का अधिकांश हिस्सा खो दिया, तथा उनकी सदस्यता और सलाहकार भूमिकाएं अधिक सीमित हो गईं।
   - **अधिकारियों का उदय:** प्रशासन, राजस्व संग्रह और युद्ध में राजा की सहायता के लिए एक अल्पविकसित नौकरशाही का उदय हुआ।
     - सेनानी (सेना का कमांडर)

- ग्रामणी (गाँव का मुखिया)
- सुता (सारथी और शाही कवि)
- संघराहित्री (कोषाध्यक्ष)
- भगदुघा (कर/शेयर संग्रहकर्ता)
- अक्षवापा (पासिंग और राजस्व अधीक्षक)
- पलागाला (संदेशवाहक)

- **वर्णों का उदय और सामाजिक स्तरीकरण:**
  - **जन्म के आधार पर कठोरता:** वर्ण व्यवस्था अत्यधिक कठोर और वंशानुगत हो गई, जो व्यवसाय के बजाय जन्म पर आधारित थी। अंतर-वर्ण विवाह में गिरावट आई।
  - **पवित्रता और प्रदूषण:** अनुष्ठानिक पवित्रता और प्रदूषण की अवधारणा केन्द्रीय हो गई, जो सामाजिक अंतःक्रियाओं को निर्धारित करती है।
  - **ब्राह्मणों का प्रभुत्व:** जटिल अनुष्ठानों के अपने विशिष्ट ज्ञान और शिक्षकों और सलाहकारों के रूप में उनकी भूमिका के कारण ब्राह्मणों को अपार शक्ति, प्रतिष्ठा और विशेषाधिकार प्राप्त थे। उन्हें अक्सर बलिदान करने के लिए भूमि अनुदान (दक्षिणा) मिलता था।
  - **क्षत्रिय शक्ति:** योद्धा-शासक वर्ग ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली, अक्सर ब्राह्मणों के साथ संघर्ष में, लेकिन अंततः एक दूसरे पर निर्भर थे।
  - **वैश्य स्थिति:** आर्थिक रूप से समृद्ध (कृषक, व्यापारी) होने के बावजूद, वैश्यों का अक्सर ब्राह्मणों और क्षत्रियों द्वारा शोषण किया जाता था, क्योंकि वे मुख्य करदाता थे।
  - **शूद्रों की स्थिति:** काफी खराब हो गई; उन्हें दास माना जाता था, वैदिक ज्ञान तक उनकी पहुंच नहीं थी, और अक्सर उनसे नीच कार्य करवाए जाते थे।
  - **अस्पृश्यता का विकास:** चार वर्ण व्यवस्था के बाहर "अछूतों" (चांडाल, निषाद) का एक वर्ग उभरा, जो अशुद्ध कार्य करता था (उदाहरण: शवों को संभालना, चमड़े का काम)।

- **महिलाओं की स्थिति में गिरावट:** महिलाओं ने सभाओं में भाग लेने का अधिकार खो दिया। बाल विवाह अधिक आम हो गया। उनकी भूमिका घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित हो गई, और उन्हें आम तौर पर वैदिक शिक्षा और अनुष्ठान प्रदर्शन से बाहर रखा गया। संपत्ति के अधिकार सीमित थे।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सी. राज्य संरचना और राज्य के सिद्धांत:

- **प्रारंभिक वैदिक:** कोई पूर्ण विकसित राज्य नहीं था। एक कबीलाई संगठन था। स्थायी सेना, नियमित कराधान या विस्तृत प्रशासनिक तंत्र का अभाव था। मुखिया को स्वैच्छिक कर (बलि) दिया जाता था।
- **उत्तर वैदिक:** प्रारंभिक राज्य निर्माण की ओर संक्रमण।
  - **क्षेत्रीयता:** राष्ट्र (क्षेत्र) की अवधारणा को प्रमुखता मिली, जो खानाबदोश जनजातियों से परिभाषित सीमाओं के साथ स्थायी समुदायों की ओर बदलाव का संकेत देती है।
  - **प्रारंभिक कराधान:** बाली स्वैच्छिक भेंट से अनिवार्य कर में बदल गया। अन्य कर भी उभरे।
  - **स्थायी सेना:** एक अधिक पेशेवर या स्थायी सेना की शुरुआत, हालांकि अभी भी यह मुख्य रूप से जनजातीय सेना और राजा के निजी अनुचरों पर आधारित है।
  - **राजत्व का दैवीय सिद्धांत:** कुछ उत्तर वैदिक ग्रंथों (उदाहरण शतपथ ब्राह्मण) से पता चलता है कि राजा को अपनी शक्ति देवताओं से प्राप्त होती थी या वह विस्तृत अनुष्ठानों के माध्यम से इसे प्राप्त करता था, जिससे उसकी बढ़ी हुई शक्ति और पवित्र स्थिति को उचित ठहराया जा सके।
  - **सामाजिक अनुबंध सिद्धांत (नवजात):** उत्तर वैदिक ग्रंथों में कुछ विचारों का तात्पर्य है कि लोग व्यवस्था बनाए रखने और अराजकता से बचाने के लिए एक राजा को चुनते थे, जो कि एक प्रारंभिक सामाजिक अनुबंध का सुझाव देता है।

वेतनभोगी छात्रों को लाभ

- ✓ आगामी 1 वर्ष की परीक्षाओं के PYQs तक पहुंच
- ✓ क्विज़ ग्रुप में प्रवेश + प्रीमियम सामग्री
- ✓ भविष्य की खरीदारी पर 20% छूट / किसी मित्र को रेफर करने पर
- ✓ समसामयिक घटनाओं तक पहुंच + प्रीमियम अध्ययन समूह

नोट: कृपया सक्रियण के लिए अपनी शुल्क रसीद या भुगतान स्क्रीनशॉट साझा करें।

शामिल होने के लिए यहां क्लिक करें

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET
हमें कॉल करें/व्हाट्सएप करें +91 7690022111 +91 9216228788

डी. धार्मिक और दार्शनिक विचार:

1. **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक):**
   - **प्रकृति पूजा:** प्राकृतिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले मानवरूपी देवता प्रमुख थे:
     - **इंद्र:** सबसे महत्वपूर्ण, युद्ध के देवता, गरज, बारिश (वज्र का स्वामी), "पुरंदर" (किलों का विध्वंसक)।
     - **अग्नि:** अग्नि देवता, मनुष्यों और देवताओं के बीच मध्यस्थ, बलि अनुष्ठानों का केंद्र।
     - **वरुण:** ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) के देवता, नैतिकता, सत्य के संरक्षक।
     - **सूर्य/सविता:** सूर्य देव, अंधकार को दूर करने वाले।
     - **सोम:** एक मादक पौधे और उसके रस से जुड़ा देवता, अनुष्ठानों का केंद्र।
   - **सरल बलिदान:** मुख्य रूप से घरेलू और सरल अनुष्ठान, सांसारिक लाभ (मवेशी, पुत्र, विजय, धन) के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए चढ़ाए जाते हैं।
   - **मूर्तिपूजा का अभाव:** कोई मंदिर या मूर्ति नहीं थी। पूजा भजन और प्रसाद के माध्यम से होती थी।
   - **आशावादी दृष्टिकोण:** वर्तमान जीवन, भौतिक सुख-सुविधा और दीर्घायु पर ध्यान केन्द्रित करें।

2. **उत्तर वैदिक:**
   - **नये देवताओं का उदय:** इंद्र और वरुण जैसे पुराने देवताओं ने कुछ प्रमुखता खो दी, जबकि नये देवताओं को महत्व प्राप्त हुआ:
     - **प्रजापति:** सर्वोच्च सृजनकर्ता देवता बने।
     - **विष्णु:** एक संरक्षक देवता के रूप में महत्वपूर्ण महत्व प्राप्त किया, जो बाद में हिंदू त्रिदेवों में उनकी भूमिका का पूर्वाभास देता है।
     - **रुद्र:** ऋग्वेद के भयंकर तूफान देवता, शिव (विनाशक) के रूप में विकसित होने लगे, जो अधिक जटिल और व्यक्तिगत देवताओं की ओर बदलाव का संकेत है।
   - **विस्तृत अनुष्ठान:** बलिदान बहुत अधिक जटिल, अनुष्ठानिक, महंगे और लंबे समय तक चलने वाले हो गए (उदाहरण के लिए कई दिनों/महीनों तक चलने वाला सोम बलिदान)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **ब्राह्मणवादी प्रभुत्व में वृद्धि:** इन विस्तृत अनुष्ठानों को सम्पन्न करने के लिए ब्राह्मण अपरिहार्य हो गए, जिससे उनकी शक्ति, प्रतिष्ठा और धन में वृद्धि हुई।
- **उपनिषदिक दर्शन (वेदांत) का उदय:** एक महत्वपूर्ण बौद्धिक और आध्यात्मिक बदलाव, जिसे अक्सर ब्राह्मणों के अत्यधिक कर्मकांड और भौतिकवादी फोकस के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है।
  - **ज्ञान की खोज:** बाह्य अनुष्ठानों से ध्यान हटाकर आंतरिक दार्शनिक अन्वेषण पर ध्यान केन्द्रित किया गया।
  - **ब्रह्म और आत्मा:** केंद्रीय अवधारणाएँ। **ब्रह्म** सभी घटनाओं के मूल में स्थित परम, अपरिवर्तनीय, अवैयक्तिक वास्तविकता है। **आत्मा** व्यक्तिगत आत्मा या स्वयं है। मूल सिद्धांत आत्मा और ब्रह्म ("तत् त्वम् असि" - वह तुम हो) की पहचान है, जिसका अर्थ है कि व्यक्तिगत आत्मा सार्वभौमिक आत्मा का हिस्सा है।
  - **कर्म और संसार (पुनर्जन्म):** कर्म का सिद्धांत और उसके परिणाम, पुनर्जन्म (संसार) के चक्र को प्रभावित करते हैं। अच्छे कर्म अनुकूल पुनर्जन्म की ओर ले जाते हैं, बुरे कर्म प्रतिकूल पुनर्जन्म की ओर।
  - **मोक्ष/निर्वाण:** अंतिम लक्ष्य, संसार के चक्र से मुक्ति, सच्चे ज्ञान (ज्ञान) और आत्मा-ब्रह्म पहचान की समझ के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इसने तप और ध्यान पर ध्यान केंद्रित किया।

ई. लौह प्रौद्योगिकी का परिचय:

- **शुरुआत:** भारत में लोहे का उपयोग लगभग **1000 ईसा पूर्व से शुरू हुआ** , जिसका आरंभिक साक्ष्य गंगा-यमुना दोआब (उदाहरण **अतरंजीखेड़ा, हस्तिनापुर, आलमगीरपुर**) में मिलता है, जिसे अक्सर पेंटेड ग्रे वेयर (पीजीडब्ल्यू) संस्कृति से जोड़ा जाता है। पुरातात्विक साक्ष्य पश्चिम एशिया से एक स्वतंत्र आविष्कार या प्रसार का सुझाव देते हैं, न कि आर्यों द्वारा सीधे तौर पर इसका परिचय।
- **प्रभाव:**
  - **कृषि क्रांति:** लोहे के औजारों (हल, कुल्हाड़ी, दरांती) ने उपजाऊ गंगा बेसिन में घने जंगलों को साफ करने और कठोर जलोढ़ मिट्टी की कुशल खेती को संभव बनाया। इससे महत्वपूर्ण कृषि अधिशेष पैदा हुआ।
  - **युद्ध:** लोहे के हथियारों (तलवारें, भाले, तीर) ने युद्ध को और अधिक विनाशकारी बना दिया,

जिससे क्षेत्रीय विस्तार और बड़े राज्यों के एकीकरण में सहायता मिली।

- **शिल्प एवं उद्योग:** लौह औजारों ने नए शिल्प एवं उद्योगों (जैसे बढ़ईगीरी, राजमिस्त्री, धातुकर्म) के विकास को सुगम बनाया, जिससे अधिक विशेषज्ञता प्राप्त हुई।
- **शहरीकरण:** कृषि अधिशेष, नए शिल्प और बढ़ते व्यापार ने गंगा घाटी में कस्बों और शहरों के विकास के लिए आर्थिक आधार प्रदान किया, जिससे "द्वितीय शहरीकरण" में योगदान मिला।

दक्षिण भारत के मेगालिथ:

- **परिभाषा:** बड़े पत्थर के स्मारक, मुख्य रूप से दफन प्रथाओं से जुड़े हैं। "मेगालिथ" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "बड़ा पत्थर।"
- **कालक्रम:** मुख्यतः **लौह युग (लगभग 1000 ई.पू. - 300 ई.) से** , जो प्रारंभिक ऐतिहासिक अवधियों के साथ सह-अस्तित्व में है।
- **प्रकार:** दफन स्मारकों के विविध रूप।
  - **कब्र में दफनाने की जगह:** पत्थर से बने गड्ढे, जिनमें अक्सर एक बड़ा सा शिलाखंड लगा होता है, जिसमें कंकाल के अवशेष और कब्र के सामान रखे होते हैं।
  - **डोलमेन्स:** एक मेज जैसी संरचना जिसमें एक बड़ा सपाट शिलाखंड होता है, जिसे सीधे पत्थरों द्वारा सहारा दिया जाता है।
  - **शैलकृत गुफाएँ:** प्राकृतिक शैल संरचनाओं में निर्मित दफ़न कक्ष।
  - **कलश दफन:** बड़े मिट्टी के बर्तनों या ताबूत में दफन।
  - **मेनहिर:** एकल खड़े पत्थर, जो अक्सर किसी दफ़नाने या किसी घटना की याद में बनाये जाते हैं।
  - **वृत्ताकार पत्थर:** किसी शव-स्थान को घेरने वाले पत्थरों के छल्ले।
- **वितरण:** पूरे दक्षिण भारत में व्यापक रूप से, विशेषकर **कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में** । प्रमुख स्थलों में ब्रह्मगिरि, मस्की, हल्लूर (कर्नाटक), आदिचनल्लूर, पोर्कलम (केरल) शामिल हैं।
- **महत्व:**
  - **दफ़न प्रथाएँ:** मृत्यु और उसके बाद के जीवन के बारे में जटिल मान्यताओं को प्रकट करती हैं। सामग्री में अक्सर कंकाल के अवशेष, विविध मिट्टी के बर्तन (उदाहरण के लिए विशिष्ट काले और लाल बर्तन), लोहे के औजार, हथियार (तलवारें, खंजर, भाले), कृषि उपकरण, आभूषण

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

(कार्नेलियन, सोने, टेराकोटा के मोती) और कभी-कभी घोड़े के अवशेष शामिल होते हैं।

- **सामाजिक संगठन:** मेगालिथ (बड़े पत्थरों का परिवहन और निर्माण) के निर्माण के लिए आवश्यक विशाल प्रयास, सुव्यवस्थित समुदायों, शक्तिशाली प्रमुखों या कुलीनों के अस्तित्व का सुझाव देता है, जो श्रम और संसाधनों का नियंत्रण कर सकते थे, और संभवतः एक पदानुक्रमित सामाजिक संरचना।
- **भौतिक संस्कृति:** दक्षिण भारत में लौह युग के औजारों, मिट्टी के बर्तनों और प्रारंभिक कृषि उपकरणों का समृद्ध पुरातात्विक रिकॉर्ड प्रदान करें, जो क्षेत्रीय विशिष्टता को इंगित करता हो।
- **आर्थिक आधार:** प्रायः स्थायी कृषि समुदायों और पशुपालन से जुड़ा हुआ।

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

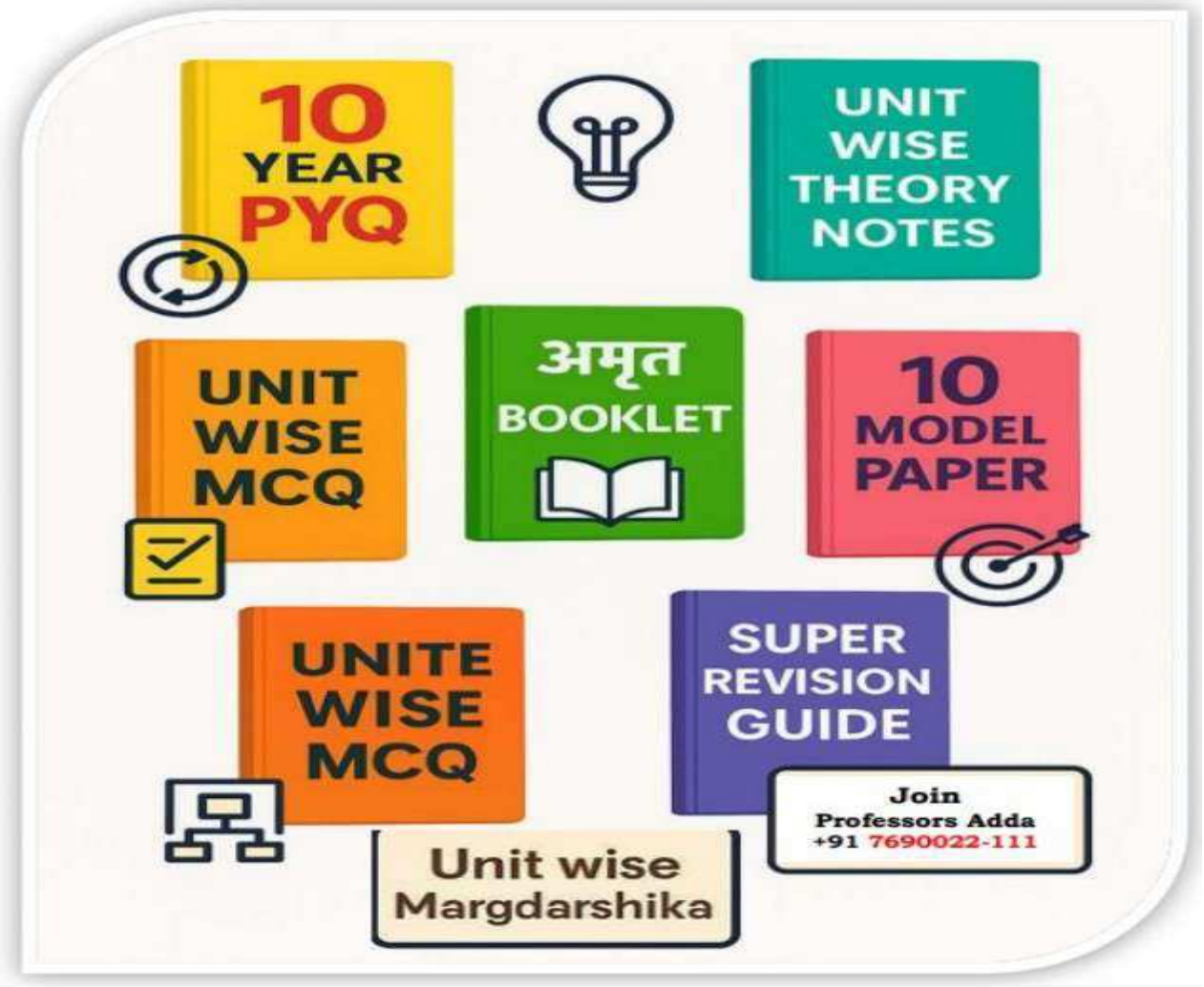

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

विशेषता	प्रारंभिक वैदिक काल (लगभग 1500 - 1000 ईसा पूर्व)	उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000 - 600 ईसा पूर्व)
प्राथमिक पाठ	ऋग्वेद	सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
भूगोल	मुख्यतः "सप्त सिंधु" (सिंधु और पंजाब और अफगानिस्तान में इसकी सहायक नदियाँ) की भूमि	गंगा-यमुना दोआब, कुरु-पंचाल क्षेत्र और आगे पूर्व (कोसल, काशी, विदेह) में धीरे-धीरे पूर्व की ओर विस्तार।
राजनीतिक संगठन	सभा , समिति , विदाथ जैसी जनजातीय सभाएँ महत्वपूर्ण थीं। राजन (राजा) एक जनजातीय मुखिया था, जिसके पास सीमित शक्तियाँ थीं, और अक्सर उसका चुनाव होता था। मुख्य रूप से देहाती और रिश्तेदारी आधारित मुखियापन।	बड़े प्रादेशिक राज्यों (जनपद और प्रारंभिक महाजनपद) का उदय। राजसूय , वाजपेय , अश्वमेध जैसे विस्तृत राज्याभिषेक अनुष्ठानों के साथ राजत्व अधिक वंशानुगत और शक्तिशाली हो गया । सभा और समिति ने अपने पहले के कुछ प्रभाव खो दिए।
सामाजिक संरचना	समाज अपेक्षाकृत समतावादी था, जो वंशानुक्रम के बजाय व्यवसाय पर आधारित था। चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) उभर रहे थे, लेकिन वे कठोर रूप से परिभाषित या वंशानुगत नहीं थे। परिवार (कुल) मूल इकाई थी। महिलाओं की स्थिति तुलनात्मक रूप से उच्च थी; वे सभाओं में भाग लेती थीं और भजन रचती थीं।	वर्ण व्यवस्था अधिक कठोर, वंशानुगत और जटिल हो गई, जिसमें अलग-अलग विशेषाधिकार और अक्षमताएँ थीं। व्यावसायिक समूहों का प्रसार हुआ। परिवार (कुला) महत्वपूर्ण बना रहा, लेकिन वंश (गोत्र) को प्रमुखता मिली। महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई; सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी और शिक्षा तक उनकी पहुँच कम हो गई।
अर्थव्यवस्था	मुख्य रूप से पशुपालन, जिसमें मवेशी पालन मुख्य आर्थिक गतिविधि और धन का स्रोत (गोमत) था। कृषि गौण और सरल थी (जौ - यव)। व्यापार सीमित था, ज्यादातर वस्तु विनिमय प्रणाली थी। निजी भूमि स्वामित्व की कोई अवधारणा नहीं थी।	कृषि प्राथमिक व्यवसाय बन गई, लोहे के औजारों (हल) के उपयोग से चावल (वृहि), गेहूं (गोधूम) जैसी नई फसलों की खेती हुई। स्थायी कृषि के विकास से भूमि पर निजी स्वामित्व का विकास हुआ। मुद्रा के प्रारंभिक रूपों (उदाहरण निष्क , सतनाम) के उद्भव के साथ व्यापार और वाणिज्य का विस्तार हुआ। शिल्प की विशेषज्ञता में वृद्धि हुई।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

धर्म एवं अनुष्ठान	प्रकृति पूजा: देवता मुख्य रूप से प्राकृतिक शक्तियों जैसे इंद्र (गरज/बारिश), अग्नि (आग), वरुण (ब्रह्मांडीय व्यवस्था), सूर्य (सूर्य), वायु (हवा), सोम (पवित्र पेय) का मानवीकरण करते थे। अनुष्ठान सरल थे, जो सांसारिक लाभ (मवेशी, पुत्र, स्वास्थ्य) के लिए घर के मुखिया या विशेष पुजारियों द्वारा किए जाने वाले यज्ञों (बलिदान) पर केंद्रित थे। कोई मूर्ति पूजा या विस्तृत मंदिर नहीं थे।	प्रजापति (सृजक), विष्णु (पालक) और रुद्र (शिव) जैसे नए देवताओं को प्रमुखता मिली। अनुष्ठान अधिक जटिल, विस्तृत और महंगे हो गए, जिसके लिए विशेष पुजारियों (ब्राह्मण) की आवश्यकता थी। यज्ञों का उद्देश्य विशिष्ट शक्तियाँ या ब्रह्मांडीय स्थिति प्राप्त करने की ओर स्थानांतरित हो गया। दार्शनिक विचार उभरने लगे (उपनिषद), अनुष्ठानों पर सवाल उठाते हुए और ब्रह्म , आत्मा , कर्म और मोक्ष जैसी अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए । जादू और मंत्र (अथर्ववेद) अधिक प्रचलित हो गए।
ज्ञान और शिक्षा	मौखिक परंपरा का बोलबाला रहा। ऋग्वेद के भजनों, प्रार्थनाओं और बलिदान के सूत्रों पर ध्यान केंद्रित किया।	अन्य वेदों और संबंधित साहित्य (ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद) का विकास। विभिन्न विचारधाराओं और दार्शनिक चिंतन का उदय। सही उच्चारण और जटिल अनुष्ठानों के प्रदर्शन पर जोर। व्याकरण, व्युत्पत्ति और माप विज्ञान जैसे विषयों की शुरुआत।
भौतिक संस्कृति	तांबे और कांसे का प्रयोग। शुरू में लोहे का सीमित प्रयोग। मिट्टी के बर्तन गेरू रंग के बर्तन (OCP) और कुछ काले और लाल बर्तन (BRW) थे।	श्यामा अयास या कृष्ण अयास) का व्यापक उपयोग । चित्रित ग्रे वेयर (पीजीडब्ल्यू) संस्कृति से जुड़ा, विशेष रूप से पश्चिमी गंगा के मैदानों में, और बाद में पूर्वी क्षेत्रों में उत्तरी काले पॉलिश वेयर (एनबीपीडब्ल्यू) से जुड़ा।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

V. राज्य प्रणाली का विस्तार: दूसरा शहरीकरण और विधर्मी संप्रदाय (6वीं शताब्दी ईसा पूर्व)

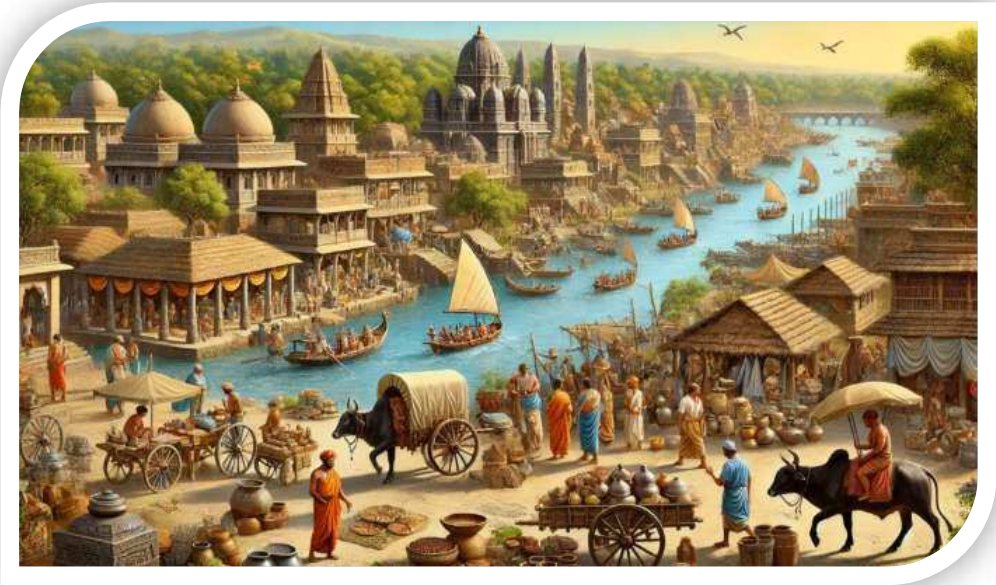

6वीं शताब्दी ईसा पूर्व प्राचीन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि है, जिसकी विशेषता राजनीतिक सुदृढ़ीकरण, महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन और नए बौद्धिक और धार्मिक आंदोलनों का उदय है। इस अवधि को अक्सर वैश्विक स्तर पर अपने गहन दार्शनिक और धार्मिक बदलावों के लिए "अक्षीय युग" (कार्ल जैस्पर्स) के रूप में जाना जाता है।

क. महाजनपद: महान साम्राज्यों का उदय

- **उद्भव: छठी शताब्दी ईसा पूर्व** तक उत्तर भारत में छोटे-छोटे जनपदों (क्षेत्रीय राज्यों) का सोलह बड़े और शक्तिशाली महाजनपदों (महान राज्यों) में एकीकरण । इस प्रक्रिया को कृषि अधिशेष, लौह प्रौद्योगिकी, जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने बढ़ावा दिया।

- **प्रमुख महाजनपद (जैसा कि अंगुत्तर निकाय जैसे बौद्ध ग्रंथों और भगवती सूत्र जैसे जैन ग्रंथों में बताया गया है):**
  1. **मगध:** राजधानी: राजगृह (प्रारंभिक), पाटलिपुत्र (बाद में)। राजशाही।
  2. **कोसल:** राजधानी: श्रावस्ती. राजशाही।

3. **वत्स:** राजधानी: कौशांबी. राजशाही।
4. **अवंती:** राजधानी: उज्जयिनी. राजशाही।
5. **काशी:** राजधानी: वाराणसी. राजशाही (बाद में कोसल द्वारा अवशोषित)।
6. **अंग:** राजधानी: चम्पा. राजशाही (बाद में मगध द्वारा अवशोषित).
7. **मल्ल:** राजधानियाँ: कुसीनगर, पावा। रिपब्लिकन (गण-संघ)।
8. **वज्जि:** राजधानी: वैशाली. गणतंत्र (आठ वंशों का संघ, जिसमें लिच्छवि भी शामिल है).
9. **चेदि:** राजधानी: सुक्तिमती. राजशाही।
10. **कुरु:** राजधानी: हस्तिनापुर. राजशाही।
11. **पांचाल:** राजधानियाँ: अहिच्छत्र, काम्पिल्य। राजशाही।
12. **मत्स्य:** राजधानी: विराटनगर. राजशाही.
13. **सूरसेन:** राजधानी: मथुरा। राजशाही।
14. **अस्माका:** राजधानी: पोटाली/पोटाना। राजशाही (विंध्य के दक्षिण में केवल महाजनपद)।
15. **गांधार:** राजधानी: तक्षशिला. राजशाही.
16. **कम्बोज:** राजधानी: राजापुर/द्वारका। राजशाही।

- **विशेषताएँ:**
  - **स्थायी सेनाएँ:** शासकों ने जनजातीय सेनाओं के स्थान पर स्थायी सेनाएँ रखना शुरू कर दिया।
  - **नियमित कराधान:** कृषि उपज (भागा, 1/6वाँ हिस्सा), व्यापार और कारीगरों से राजस्व का अधिक व्यवस्थित संग्रह।
  - **विकसित प्रशासन:** राजस्व, न्याय और रक्षा के प्रबंधन के लिए अल्पविकसित नौकरशाही का उदय।
  - **राजधानी शहर:** किलेबंद राजधानी शहर जो प्रशासनिक, आर्थिक और धार्मिक केंद्र के रूप में कार्य करते थे।
  - **प्रादेशिक पहचान:** वफादारी जनजातीय/कबीले की निष्ठा से बदलकर एक निश्चित क्षेत्र के प्रति हो गई।

- **वर्चस्व के लिए संघर्ष:** महाजनपदों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता का दौर, जिसमें **मगध** अंततः सबसे शक्तिशाली बनकर उभरा। मगध की सफलता के कारण:
  - **भौगोलिक लाभ:** उपजाऊ गंगा के मैदान में स्थित होने के कारण प्रचुर मात्रा में कृषि अधिशेष

(विशेष रूप से चावल) सुनिश्चित होता है।

- **खनिज संसाधन:** निकटवर्ती लौह अयस्क के प्रचुर भंडार (उदाहरण: राजगीर, गया क्षेत्र), जो श्रेष्ठ उपकरण और हथियार उपलब्ध कराते हैं।
- **रणनीतिक स्थान:** इसकी प्रारंभिक राजधानी राजगृह पांच पहाड़ियों से घिरी हुई थी, जो प्राकृतिक किलेबंदी प्रदान करती थी। बाद की राजधानी पाटलिपुत्र रणनीतिक रूप से गंगा, सोन और गंडक नदियों के संगम पर स्थित थी, जिससे आक्रमण करना मुश्किल था और व्यापार में सुविधा थी।
- **महत्वाकांक्षी शासक:** उत्तरवर्ती शक्तिशाली राजवंश:
  - **हर्यक वंश:** बिम्बिसार (लगभग 544-492 ई.पू.) ने विजय और वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से विस्तार किया। अजातशत्रु (लगभग 492-460 ई.पू.) ने कोसल और वज्जि को हराया।
  - **शिशुनाग राजवंश:** शिशुनाग और कालाशोक।
  - **नंदा राजवंश (लगभग 345-321 ईसा पूर्व):** महापद्म नंदा (प्रथम गैर-क्षत्रिय सम्राट) ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो अपनी विशाल सेना और धन के लिए प्रसिद्ध था।

बी. राजशाही और गणतांत्रिक राज्य:

- **राजशाही राज्य:** (उदाहरण मगध, कोसल, अवंती, वत्स)। एक ही वंशानुगत राजा द्वारा शासित। राजा की शक्ति केंद्रीकृत थी, नौकरशाही, स्थायी सेना और अनुष्ठानों और राजत्व के उभरते दैवीय सिद्धांतों के माध्यम से वैधता द्वारा समर्थित थी। ये प्रमुख राजनीतिक रूप थे।
- **गणतंत्रीय राज्य (गणसंघ):** (उदाहरण: वज्जी संघ, मल्ल, शाक्य, कोलिय)। सत्ता एक शासक में केंद्रित नहीं थी, बल्कि निर्वाचित प्रतिनिधियों या महत्वपूर्ण कुलों के प्रमुखों की एक सभा (संघ या गण) द्वारा प्रयोग की जाती थी। वे अक्सर अपनी आंतरिक संरचना में अधिक समतावादी थे, जिसमें निर्णय बहस और आम सहमति से लिए जाते थे। हालाँकि, उनकी विकेंद्रीकृत प्रकृति ने उन्हें विस्तारवादी राजतंत्रों के प्रति कमज़ोर बना दिया।

सी. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में आर्थिक और सामाजिक विकास और द्वितीय शहरीकरण का उदय:

- **कृषि विकास एवं अधिशेष:**
  - **लौह उपकरण:** लौह हलों के व्यापक उपयोग से गंगा बेसिन में घने जंगलों को व्यापक रूप से साफ करने और कठोर जलोढ़ मिट्टी की अधिक कुशल खेती संभव हुई।
  - **चावल की खेती:** धान की रोपाई के विकास से कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे पर्याप्त खाद्य अधिशेष उत्पन्न हुआ।
  - **सिंचाई:** प्रारंभिक नहरों और टैंकों के साक्ष्य।
  - इस कृषि क्रांति ने उभरते शहरी केंद्रों में बड़ी, गैर-कृषि आबादी को समर्थन दिया।
- **व्यापार और वाणिज्य का विकास:**
  - **आंतरिक व्यापार मार्ग:** प्रमुख व्यापार मार्ग उभरे, जो बढ़ते शहरों को जोड़ते थे। उदाहरण: उत्तरापथ (उत्तरी मार्ग, उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला से पूर्व में पाटलिपुत्र तक) और दक्षिणापथ (दक्षिणी मार्ग, कौशांबी से दक्कन में प्रतिष्ठान तक)।
  - **सिक्का निर्माण: पंच-मार्क वाले सिक्कों (मुख्य रूप से चांदी, तांबे के भी)** की शुरूआत ने लेन-देन को आसान बना दिया, जिसने पहले की वस्तु विनिमय प्रणाली की जगह ले ली। ये आकार में अनियमित थे और इन पर विभिन्न प्रतीक अंकित थे। इस मानकीकृत मुद्रा ने व्यापार और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा दिया।
  - **गिल्ड (सरेनिस/पगस):** कारीगरों और व्यापारियों का शक्तिशाली व्यावसायिक संघों या गिल्डों में संगठन (उदाहरण: बढ़ई के गिल्ड, कुम्हारों के गिल्ड, साहूकारों के गिल्ड)। ये गिल्ड:
    - विनियमित मूल्य, गुणवत्ता और उत्पादन।
    - बैंकों के रूप में कार्य किया, जमा प्राप्त किया और धन उधार दिया।
    - अपने सदस्यों के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान की।
    - उनके नेता (श्रेष्ठिन या महाश्रेष्ठिन) समाज के धनी और प्रभावशाली सदस्य थे, जो अक्सर नए धार्मिक आंदोलनों को संरक्षण देते थे।

- **कारीगरों और व्यापारियों का उदय:** इस काल में वैश्य वर्ण के महत्व और धन में वृद्धि देखी गई, जिसमें व्यापारी और कारीगर वर्ग शामिल थे। उनकी आर्थिक शक्ति ने अक्सर ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पारंपरिक प्रभुत्व को चुनौती दी।
- **द्वितीय शहरीकरण:** छठी **शताब्दी ईसा पूर्व में** गंगा घाटी और आस-पास के क्षेत्रों में 60 से अधिक शहरी केंद्रों का उदय हुआ, जो भारत में "द्वितीय शहरीकरण" (पहला सिंधु घाटी सभ्यता था) का

प्रतीक था।

- **कारक:** कृषि अधिशेष, लौह प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग, समृद्ध व्यापार, तथा स्थायी प्रादेशिक राज्यों का उदय।
- **विशेषताएँ:** किलेबंद शहर, अक्सर ग्रिड जैसी योजना के साथ (हालांकि हड़प्पा शहरों की तुलना में कम एकरूप), नालियों का विकास, **उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन (एनबीपीडब्ल्यू) जैसे परिष्कृत मिट्टी के बर्तनों का उपयोग** , जो अपनी चमकदार फिनिश के लिए जाने जाते हैं।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** पाटलिपुत्र, राजगृह, श्रावस्ती, कौशांबी, उज्जयिनी, चंपा, वाराणसी, तक्षशिला।

- **सामाजिक परिवर्तन:**
  - **स्तरीकरण में वृद्धि:** वर्ण व्यवस्था अधिक कठोर, वंशानुगत और पदानुक्रमित हो गई। ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने अपने विशेषाधिकार प्राप्त पदों को मजबूत किया।
  - **ब्राह्मणवादी प्रभुत्व के प्रति असंतोष:** विस्तृत और महंगे अनुष्ठानों के माध्यम से ब्राह्मणों के बढ़ते प्रभुत्व, उनकी श्रेष्ठता के दावे और संबंधित सामाजिक असमानताओं के कारण असंतोष बढ़ रहा था, विशेष रूप से उभरते क्षत्रिय और वैश्य वर्गों के बीच, जो वैकल्पिक विश्वास प्रणालियों की तलाश कर रहे थे।
  - **एक नये शहरी वर्ग का उदय:** शहरों के विकास ने व्यापारियों, कारीगरों और वित्तपोषकों के एक महत्वपूर्ण और धनी शहरी वर्ग को बढ़ावा दिया, जो सामाजिक स्थिति और मान्यता चाहते थे, जिसे मौजूदा ब्राह्मणवादी पदानुक्रम ने बड़े पैमाने पर उन्हें अस्वीकार कर दिया था।

वेतनभोगी छात्रों को लाभ

✓ आगामी 1 वर्ष की परीक्षाओं के PYQs तक पहुंच
✓ क्विज़ ग्रुप में प्रवेश + प्रीमियम सामग्री
✓ भविष्य की खरीदारी पर 20% छूट / किसी मित्र को रेफर करने पर
✓ समसामयिक घटनाओं तक पहुंच + प्रीमियम अध्ययन समूह

नोट: कृपया सक्रियण के लिए अपनी शुल्क रसीद या भुगतान स्क्रीनशॉट साझा करें।

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

शामिल होने के लिए यहां क्लिक करें

हमें कॉल करें/व्हाट्सएप करें +91 7690022111 +91 9216228788

घ. विधर्मी संप्रदायों का उदय - जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीविक:

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बौद्धिक और सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल ने, ब्राह्मणवादी व्यवस्था की कठोरता और गहन दार्शनिक सत्यों की खोज (उपनिषदों से प्रेरित) के साथ मिलकर, नए दार्शनिक और धार्मिक आंदोलनों के उद्भव के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की, जिन्हें सामूहिक रूप से श्रमण परंपराओं के रूप में जाना जाता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

विशेषता	राज्य व्यवस्था का विस्तार (महाजनपद)	दूसरा शहरीकरण	विधर्मी संप्रदाय (उदाहरण जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीविक)
प्राथमिक विशेषता	अधिक केन्द्रीकृत प्राधिकार के साथ बड़े, सुपरिभाषित प्रादेशिक राज्यों का उदय।	शिल्प, व्यापार और प्रशासन के केन्द्रों के रूप में कस्बों और शहरों का पुनः उदय और विकास।	वैदिक रूढ़िवादिता और अनुष्ठानों को चुनौती देने वाले नए दार्शनिक और धार्मिक आंदोलनों का उदय।
भौगोलिक फोकस	मुख्य रूप से गंगा के मैदान (मजीहमदेसा या मध्य देश), कुछ राज्यों के साथ। उल्लेखनीय उदाहरणों में मगध, कोसल, अवंती, वत्स, कुरु, पंचाल शामिल हैं।	गंगा के मैदान, विशेषकर प्रमुख व्यापार मार्गों और नदियों के किनारे। प्रमुख शहरी केंद्रों में राजगृह, श्रावस्ती, कौशांबी, वाराणसी, वैशाली, चंपा, उज्जैन शामिल थे।	मुख्य रूप से गंगा के मैदानों में उत्पन्न और विकसित हुआ, वही क्षेत्र राजनीतिक और शहरी परिवर्तन का अनुभव कर रहा है।
प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम	राजतंत्रों (सबसे आम) और कुछ गण-संघों (गणराज्य/कुलीनतंत्र जैसे वज्जि, मल्ल) का उदय। सैन्य शक्ति, स्थायी सेना और प्रशासनिक तंत्र में वृद्धि। साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की शुरुआत (उदाहरण मगध)। राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष।	शहर अक्सर नवगठित राज्यों के लिए प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में काम करते थे। शहरी केंद्रों को संगठित शासन और संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता थी।	अक्सर नए राज्यों के शासकों से संरक्षण (या विरोध) मिला। उनके सामाजिक आदर्शों ने कभी-कभी राजनीतिक विचारों को प्रभावित किया। मौजूदा सामाजिक पदानुक्रमों पर सवाल उठाया जो राज्य संरचना का हिस्सा थे।
प्रमुख आर्थिक चालक एवं विशेषताएं	लौह हल तकनीक और स्थायी खेती के कारण कृषि अधिशेष। राज्य तंत्र (सेना, अधिकारी) को सहायता देने के लिए राजस्व (बलि और भगा जैसे कर) का संग्रह। व्यापार मार्गों पर नियंत्रण।	व्यापार और वाणिज्य का विकास (आंतरिक और लंबी दूरी की शुरुआत)। शिल्प और विशेष उद्योगों का विकास (मिट्टी के बर्तन, धातुकर्म, वस्त्र)। सिक्कों का उदय (छिद्रित	कुछ संप्रदायों (जैसे जैन धर्म) का व्यापारिक समुदाय में महत्वपूर्ण स्थान था, जो शहरीकरण की आर्थिक समृद्धि से लाभान्वित थे। बलिदान पर वैदिक जोर पर सवाल उठाया, जिसमें धन

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

		सिक्के)। व्यापारी वर्ग का उदय (सेट्ठी , गहपति)।	व्यय शामिल था।
सामाजिक निहितार्थ	वर्ण व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण, यद्यपि अक्सर नई सामाजिक वास्तविकताओं और विधर्मी विचारों द्वारा चुनौती दी जाती है। एक अलग क्षत्रिय शासक वर्ग और नौकरशाही का उदय। सामाजिक स्तरीकरण में वृद्धि।	विभिन्न व्यवसायों और सामाजिक समूहों के साथ विविध शहरी आबादी का विकास। पारंपरिक जनजातीय बंधनों का कमजोर होना। नई सामाजिक जटिलताएँ और चुनौतियाँ। कुछ लोगों के लिए सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि।	वर्ण या सामाजिक स्थिति से परे मोक्ष/मुक्ति के लिए वैकल्पिक मार्ग प्रदान किए। जाति-आधारित भेदभाव और जटिल अनुष्ठानों की आलोचना की। नैतिक आचरण, अहिंसा और तप पर जोर दिया। रूढ़िवादी व्यवस्था द्वारा हाशिए पर रखे गए लोगों से अपील की।
धार्मिक/दार्शनिक संदर्भ	वैदिक ब्राह्मणवाद जारी रहा, लेकिन क्षत्रियों की बढ़ती ताकत के कारण कभी-कभी तनाव पैदा हो जाता था। शासक अक्सर विभिन्न धार्मिक समूहों को संरक्षण देते थे।	शहरी वातावरण ने बौद्धिक आदान-प्रदान और नए विचारों के प्रसार को बढ़ावा दिया। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी परिवेश में प्रत्यक्ष ब्राह्मणवादी नियंत्रण कम हुआ।	वैदिक अधिकार, कर्मकांड और ब्राह्मणों के प्रभुत्व को सीधी चुनौती। व्यक्तिगत प्रयास, कर्म, तप साधना और दार्शनिक जांच पर ध्यान केंद्रित किया। विविध आध्यात्मिक और नैतिक ढांचे की पेशकश की।
प्रमुख उदाहरण/आंकड़े	**राज्य:** मगध (बिम्बिसार, अजातशत्रु के अधीन), कोसल (प्रसेनजित), अवंती (प्रद्योत), वत्स (उदयान), वज्जि संघ।	**शहर:** राजगृह, पाटलिपुत्र (बाद में), कौशांबी, वाराणसी, श्रावस्ती, वैशाली, तक्षशिला (एक शिक्षण केंद्र भी)।	**संप्रदाय और संस्थापक:** जैन धर्म (महावीर), बौद्ध धर्म (गौतम बुद्ध), अजीविका (मक्खलि गोसाला), और कई अन्य छोटे श्रमण आंदोलन।
अंतर सम्बन्ध	नई तकनीकों (लोहे के औजार, गीले चावल की खेती) से उत्पन्न कृषि अधिशेष ने बड़े राज्यों और शहरी आबादी दोनों का समर्थन किया।	शहरीकरण ने एक गतिशील सामाजिक वातावरण बनाया जहाँ नए विचार पनप सकते थे और	विषमलैंगिक संप्रदायों ने मौजूदा सामाजिक व्यवस्था और रीति-रिवाजों की आलोचना के साथ बदलते

	राज्यों ने व्यापार मार्गों के लिए सुरक्षा प्रदान की, जिससे शहरी आर्थिक विकास में मदद मिली। शहरी केंद्र अक्सर राजनीतिक राजधानियाँ बन गए।	फैल सकते थे। शहरी व्यापार से समृद्ध व्यापारी वर्ग अक्सर विधर्मी संप्रदायों का समर्थन करता था। शहर विविध लोगों और दर्शनों के मिश्रण थे।	शहरी परिदृश्य और शासकों और व्यापारियों सहित विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच उपजाऊ जमीन पाई। उनकी नैतिक शिक्षाओं ने कभी-कभी शासन को प्रभावित किया।
दीर्घकालिक प्रभाव	बड़े साम्राज्यों की नींव रखी (उदाहरण मौर्य साम्राज्य)। भारत में राजत्व और शासन कला के स्थायी मॉडल स्थापित किए।	स्थायी शहरी परंपराओं के साथ सामाजिक-आर्थिक विकास का एक नया चरण शुरू हुआ। उपमहाद्वीप और उसके बाहर व्यापार नेटवर्क के विकास में सहायता की।	प्रमुख विश्व धर्म (बौद्ध धर्म, जैन धर्म) बन गए, जिनका भारतीय संस्कृति, दर्शन, कला और नैतिकता पर स्थायी प्रभाव पड़ा। बौद्धिक बहस और आध्यात्मिक जांच की परंपराओं को बढ़ावा दिया।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect History

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गई
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट इतिहास - यूनिट-I: MCQs Sample

1. मिलान प्रकार

सूची I (पुरातात्विक स्थल) को सूची II (महत्वपूर्ण खोज/विशेषता) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (पुरातात्विक स्थल)	सूची II (महत्वपूर्ण खोज/विशेषता)
A. मेहरगढ़	I. जुते हुए खेत का साक्ष्य
B. बुर्जहोम	II. महान स्नान
C. मोहनजोदड़ो	III. कृषि और पशुपालन के सबसे पुराने साक्ष्य
D. कालीबंगन	IV. गड्ढों में बने घर (गड्ढों में बने घर)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) A-III, B-IV, C-II, D-I

(2) A-II, B-I, C-IV, D-III

(3) A-III, B-II, C-I, D-IV

(4) A-IV, B-III, C-II, D-I

सही उत्तर: (1) A-III, B-IV, C-II, D-I

स्पष्टीकरण:

- **मेहरगढ़ (A-III):**
  - बलूचिस्तान (पाकिस्तान) में स्थित यह नवपाषाण स्थल भारतीय उपमहाद्वीप (लगभग 7000 ईसा पूर्व) में कृषि (गेहूं, जौ) और पशुपालन के शुरुआती साक्ष्यों में से एक प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध है।
  - यहां क्रमिक विकास के कई चरण पाए जाते हैं।
- **बुर्जहोम (B-IV):**
  - कश्मीर में यह नवपाषाणकालीन स्थल अपने गड्ढा-आवासों के लिए जाना जाता है, जहां लोग जमीन खोदकर घर बनाकर रहते थे।
  - यहां मानव कंकालों के साथ-साथ कुत्तों के दफ़न के साक्ष्य भी मिले हैं।
- **मोहनजोदड़ो (C-II):**
  - सिंध (पाकिस्तान) में स्थित यह हड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख शहर था।
  - इसकी सबसे प्रसिद्ध संरचनाओं में से एक 'ग्रेट बाथ' है, जिसका उपयोग संभवतः अनुष्ठानिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था।
  - यहां एक नर्तकी की कांस्य प्रतिमा और पशुपति मुहर भी मिली थी।
- **कालीबंगा (D-I):**
  - राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित यह एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- यहां पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा दोनों संस्कृतियों के अवशेष पाए गए हैं, जिनमें 'जुते हुए खेत' का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- यहां अग्नि वेदिकाएं और सुसज्जित ईंटें भी मिली हैं।

2. अभिकथन और तर्क (A और R) प्रकार

अभिकथन (A): अशोक के अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं।

कारण (R): अशोक अपने धम्म का संदेश आम लोगों तक पहुंचाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने आम जनता द्वारा समझी जाने वाली भाषा और लिपि का इस्तेमाल किया।

कोड:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** मौर्य सम्राट अशोक के अधिकांश शिलालेख, स्तंभ शिलालेख और गुफा शिलालेख प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं। इनमें प्रयुक्त प्राथमिक लिपि ब्राह्मी है, जिसे बाएं से दाएं लिखा जाता था।
  - उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि (दाएं से बाएं) और अरामाईक और यूनानी लिपियों में भी पाए जाते हैं।
- **कारण (R) - सत्य:** अशोक का मुख्य उद्देश्य अपने धम्म (नैतिक आचार संहिता) के सिद्धांतों का व्यापक प्रचार-प्रसार करना था ताकि जनता उनका अनुसरण कर सके।
  - इसके लिए यह जरूरी था कि संदेश ऐसी भाषा और लिपि में हो जिसे आम लोग आसानी से पढ़ और समझ सकें। उस समय की स्थानीय भाषा प्राकृत थी।
- **संबंध:** कारण (R) सही ढंग से अभिकथन (A) की व्याख्या करता है। अशोक द्वारा प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि का प्रमुख उपयोग मुख्य रूप से इसलिए किया गया था क्योंकि वह चाहता था कि उसका संदेश अधिकतम लोगों तक पहुंचे और प्रभावी हो।

3. विवरण प्रकार

हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

कथन I: हड़प्पा सभ्यता एक शहरी सभ्यता थी, जिसमें सुनियोजित नगर निर्माण, पकी हुई ईंटों का उपयोग और उन्नत जल निकासी प्रणाली इसकी मुख्य विशेषताएं थीं।

कथन II: इस सभ्यता के लोग लोहे के उपयोग से परिचित थे, और उनके उपकरण मुख्य रूप से लोहे के बने थे।

कथन III: पशुपति मुहर, मातृदेवी की टेराकोटा मूर्तियाँ तथा लिंग और योनि के प्रतीक हड़प्पावासियों के धार्मिक जीवन का संकेत देते हैं।

कथन IV: हड़प्पा सभ्यता के मेसोपोटामिया और अन्य समकालीन सभ्यताओं के साथ व्यापारिक संबंध थे, जिसके पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) केवल कथन I, II और III

(2) केवल कथन I, III और IV

(3) केवल कथन II और IV

(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (2) केवल कथन I, III और IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** हड़प्पा सभ्यता (या सिंधु घाटी सभ्यता) अपनी उन्नत शहरी योजना के लिए प्रसिद्ध है। शहरों में सड़कें समकोण (ग्रिड पैटर्न) पर एक दूसरे को काटती थीं, घर पक्की ईंटों से बने होते थे, और प्रत्येक घर में एक बाथरूम और एक उन्नत जल निकासी प्रणाली (ढकी हुई नालियाँ) होती थी।
- **कथन III (सही):** मोहनजोदड़ो में मिली एक मुहर में तीन मुखों और सींगों वाले एक पुरुष देवता को दर्शाया गया है, जो योग मुद्रा में बैठा है, जानवरों से घिरा हुआ है, जिसे 'पशुपति शिव' का एक आदि रूप माना जाता है। मातृ देवी की बड़ी संख्या में टेराकोटा मूर्तियाँ मिली हैं, जो मातृ देवी की पूजा का संकेत देती हैं। लिंग और योनि के पत्थर के प्रतीक भी प्रजनन पंथ की पूजा का संकेत देते हैं।
- **कथन IV (सही):** हड़प्पा सभ्यता के मेसोपोटामिया (सुमेर), बहरीन (दिलमुन), ओमान (मगन), आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। लोथल में पाए गए फारस की खाड़ी की मुहरें, मेसोपोटामिया के ग्रंथों में 'मेलुहा' (संभवतः हड़प्पा क्षेत्र) का उल्लेख और विदेशी स्थलों पर पाए गए हड़प्पा कलाकृतियाँ (जैसे मोती, मुहरें) इसके प्रमाण हैं।
- **कथन II (गलत):** हड़प्पा सभ्यता **कांस्य युग की** सभ्यता थी। यहाँ के लोग कांस्य बनाने के लिए तांबे और टिन को मिलाना जानते थे, और उनके औजार और उपकरण मुख्य रूप से पत्थर, तांबे और कांस्य से बने थे। वे लोहे से परिचित नहीं थे; भारत में लोहे का उपयोग लगभग 1000 ईसा पूर्व (उत्तर वैदिक काल में) शुरू हुआ।

4. बहु-विकल्प प्रकार

प्रारंभिक वैदिक काल (ऋग्वैदिक काल) की सामाजिक विशेषताओं के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य हैं?

(A) समाज पितृसत्तात्मक था, फिर भी महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था और उन्हें शिक्षा और सभाओं और समितियों में भागीदारी का अधिकार था।

(B) वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित थी और अत्यंत कठोर हो गई थी।
(स) परिवार समाज की मूल इकाई थी तथा संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी।
(D) दास प्रथा प्रचलित थी, हालांकि यह ग्रीस और रोम जितनी व्यापक नहीं थी।
(E) बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ व्यापक रूप से प्रचलित थीं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) केवल (A), (B), और (C)
(2) केवल (A), (C), और (D)
(3) केवल (B), (D), और (E)
(4) केवल (A), (D), और (E)

सही उत्तर: (2) केवल (A), (C), और (D)

स्पष्टीकरण:

- (A) **सत्य:** ऋग्वैदिक समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक था, जहाँ पुरुष परिवार का मुखिया होता था। हालाँकि, महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त थी, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा थी (घोषा, लोपामुद्रा, अपाला जैसी महिला ऋषियों से इसका प्रमाण मिलता है), वे यज्ञों में भाग ले सकती थीं और सभा और समिति जैसी सभाओं में अपने विचार व्यक्त कर सकती थीं।
- (C) **सत्य:** परिवार (कुल या गृह) समाज की मूल इकाई थी। आम तौर पर, संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन था, जहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं, और सबसे बड़े पुरुष सदस्य को 'कुलपा' या 'गृहपति' कहा जाता था।
- (D) **सत्य:** ऋग्वेद में 'दास' और 'दस्यु' जैसे शब्दों का उल्लेख है, जो संभवतः पराजित गैर-आर्यन जनजातियों या घरेलू नौकरों को संदर्भित करते हैं। इस प्रकार, दासता मौजूद थी, लेकिन यह प्राचीन ग्रीस और रोम में दासता जितनी व्यापक या संगठित नहीं थी।
- (B) **गलत:** ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था अपने नवजात रूप में दिखाई देती है (पुरुष सूक्त में उल्लेखित), लेकिन यह मुख्य रूप से व्यवसाय और योग्यता (कर्म और गुण) पर आधारित थी, न कि जन्म पर, और इसमें अत्यधिक कठोरता का अभाव था। गतिशीलता संभव थी।
- (E) **असत्य:** ऋग्वैदिक काल में बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के प्रचलन का कोई स्पष्ट और व्यापक प्रमाण नहीं मिलता। विधवा विवाह और नियोग प्रथा के संकेत मिलते हैं।

5. मिलान प्रकार

सूची I (महाजनपद) को सूची II (राजधानी) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (महाजनपद)	सूची II (राजधानी)
A. मगध	I. श्रावस्ती
B. कोसल	II. कौशाम्बी

C. वत्स	III. राजगृह/गिरिव्रज
D. अवंती	IV. उज्जयिनी/महिष्मती

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) A-III, B-I, C-II, D-IV

(2) A-II, B-IV, C-I, D-III

(3) A-III, B-II, C-IV, D-I

(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

सही उत्तर: (1) A-III, BI, C-II, D-IV

स्पष्टीकरण:

- **मगध (A-III):**
  - प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली महाजनपद, इसकी प्रारंभिक राजधानी **राजगृह** (या गिरिव्रज) थी। बाद में, पाटलिपुत्र इसकी राजधानी बन गई।
  - बिम्बिसार और अजातशत्रु जैसे शासक मगध के थे।
- **कोसल (B-I):**
  - एक महत्वपूर्ण महाजनपद, इसकी राजधानी **श्रावस्ती** (उत्तर कोसल) और कुशावती (दक्षिण कोसल) थी। साकेत (अयोध्या) भी इसका प्रमुख नगर था।
  - प्रसेनजित् इसका प्रसिद्ध शासक था।
- **वत्स (C-II):**
  - यमुना नदी के तट पर स्थित इस महाजनपद की राजधानी **कौशाम्बी** (आधुनिक कोसम, प्रयागराज के पास) थी।
  - उदयन इसका प्रसिद्ध शासक था।
- **अवंती (D-IV):**
  - मध्य भारत का एक शक्तिशाली महाजनपद, इसके दो भाग थे - उत्तर अवंती की राजधानी **उज्जयिनी थी** और दक्षिण अवंती की राजधानी **महिष्मती थी** ।
  - प्रद्योत इसका महत्वपूर्ण शासक था।

6. अभिकथन और तर्क (A और R) प्रकार

अभिकथन (A): छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, गंगा घाटी में नए धार्मिक आंदोलन (जैसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म) उत्पन्न हुए।

कारण (R): समकालीन ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों की जटिलता, सामाजिक असमानता (वर्ण व्यवस्था की कठोरता) और एक नई कृषि अर्थव्यवस्था के विकास ने इन आंदोलनों के उदय के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

कोड:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व भारत में महान बौद्धिक और धार्मिक उथल-पुथल का काल था, जो 'द्वितीय शहरीकरण' से भी जुड़ा था। इस समय के दौरान, बौद्ध धर्म (गौतम बुद्ध द्वारा प्रचारित) और जैन धर्म (महावीर द्वारा पुनर्गठित) सहित कई श्रमण संप्रदाय गंगा घाटी में उभरे।
- **कारण (R) - सत्य:** इन नये धार्मिक आंदोलनों के उदय में कई कारकों ने योगदान दिया:
  - **अनुष्ठानों की जटिलता:** उत्तर वैदिक काल में, यज्ञीय अनुष्ठान अत्यंत महंगे और जटिल हो गए थे, जिन पर पुरोहित वर्ग का प्रभुत्व था।
  - **सामाजिक असमानता:** वर्ण व्यवस्था कठोर होती जा रही थी, जिससे क्षत्रियों और वैश्यों में असंतोष पैदा हो रहा था। बौद्ध और जैन धर्म ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया।
  - **नवीन कृषि अर्थव्यवस्था:** लोहे के उपयोग से कृषि का विस्तार हुआ, जिससे मवेशियों का महत्व बढ़ा। यज्ञों में पशुबलि कृषि अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक थी, जिसका इन आंदोलनों ने विरोध किया। वैश्य वर्ग ने इन आंदोलनों का समर्थन किया।
- **संबंध:** कारण (R) में वर्णित कारक अभिकथन (A) में उल्लिखित नए धार्मिक आंदोलनों के उदय के लिए प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं, इस प्रकार (R) अभिकथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।

7. विवरण प्रकार

गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

कथन I: उन्होंने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया: दु:ख (दुख), दु:ख समुदाय (दु:ख का कारण), दु:ख निरोध (दु:ख की समाप्ति), और दु:ख निरोध गामिनी पतिपदा (दु:ख की समाप्ति का मार्ग)।
कथन II: दु:ख निरोध गामिनी पाटीपद अष्टांगिक मार्ग है, जिसमें सम्यक् दृष्टिकोण, सम्यक् संकल्प आदि जैसे आठ घटक शामिल हैं।
कथन III: बुद्ध ने स्पष्ट रूप से ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया और उनकी पूजा पर जोर दिया।
कथन IV: उन्होंने मध्यम मार्ग की वकालत की, जो सांसारिक सुखों में अत्यधिक लिप्तता और गंभीर तपस्या दोनों की अति से बचने की सलाह देता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) केवल कथन I, II और IV

(2) केवल कथन I और III
(3) केवल कथन II, III और IV
(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (1) केवल कथन I, II और IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** बौद्ध धर्म की नींव चार आर्य सत्यों में निहित है: (1) दुनिया में दुख है, (2) दुख का कारण है (मुख्य रूप से तृष्णा या लालसा), (3) दुख की समाप्ति संभव है (निर्वाण), और (4) दुख की समाप्ति के लिए एक मार्ग है।
- **कथन II (सही):** चौथा आर्य सत्य, दुख निवारण का मार्ग, आर्य अष्टांगिक मार्ग है। इसके आठ घटक हैं: सही दृष्टिकोण, सही संकल्प, सही वाणी, सही आचरण, सही आजीविका, सही प्रयास, सही स्मृति और सही समाधि।
- **कथन IV (सही):** अपने पहले उपदेश (धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्त, सारनाथ) में, गौतम बुद्ध ने मध्यम मार्ग (मज्झिमा पटिपदा) का उपदेश दिया, जिसमें दो अतियों के त्याग की सलाह दी गई - कामुक सुखों में अत्यधिक लिप्तता (कामसुखल्लिकानुयोग) और गंभीर तपस्या के माध्यम से आत्म-मृत्यु (अट्ठकिलमथानुयोग)।
- **कथन III (गलत):** बुद्ध ईश्वर और शाश्वत आत्मा के अस्तित्व जैसे आध्यात्मिक प्रश्नों पर चुप रहना या स्पष्ट रूप से इनकार करना पसंद करते थे (अनात्मवाद - आत्मा रहित सिद्धांत)। उनका ध्यान मुख्य रूप से दुख को कम करने के व्यावहारिक मार्ग पर था, न कि ईश्वर या आत्मा की पूजा पर।

8. बहु-विकल्प प्रकार

निम्नलिखित में से किसे प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोतों में शामिल किया जा सकता है?

(ए) वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
(B) जैन और बौद्ध ग्रंथ (जैसे त्रिपिटक, जातक, अंग-उपंग)
(C) धर्मसूत्र और स्मृतियाँ (जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति)
(D) कौटिल्य का अर्थशास्त्र और विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
(E) मेगस्थनीज का इंडिका और फाह्यान का यात्रा वृतांत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(1) केवल (A), (B), और (C)
(2) केवल (A), (B), (D), और (E)
(3) केवल (C), (D), और (E)
(4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

सही उत्तर: (4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

स्पष्टीकरण:

- **(ए) वैदिक साहित्य:** वेद (ऋग्, यजुर्, साम, अथर्व), ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद प्राचीन भारत के धर्म, दर्शन, समाज और संस्कृति पर प्रकाश डालने वाले महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- **(B) जैन और बौद्ध ग्रंथ:** त्रिपिटक (सुत्त, विनय, अभिधम्म पिटक), जातक कथाएँ (बुद्ध के पिछले जन्म की कहानियाँ), जैन आगम (अंग, उपंग, प्रकीर्णक, आदि) समकालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- **(C) धर्मसूत्र और स्मृतियाँ:** ये ग्रंथ प्राचीन भारतीय कानून, सामाजिक रीति-रिवाजों, वर्ण-आश्रम व्यवस्था आदि पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।
- **(D) ऐतिहासिक और अन्य ग्रंथ:** कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्यकालीन राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज पर अमूल्य प्रकाश डालता है। विशाखदत्त का मुद्राराक्षस (एक ऐतिहासिक नाटक) चंद्रगुप्त मौर्य और चाणक्य के बारे में जानकारी देता है। इसी तरह, कालिदास, बाणभट्ट की हर्षचरित आदि की रचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।
- **(E) विदेशी यात्रियों के विवरण:** यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा लिखित 'इंडिका' (हालांकि यह अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है, बाद के लेखकों द्वारा उद्धरणों में संरक्षित है) मौर्यकालीन भारत का एक महत्वपूर्ण विवरण प्रदान करती है। चीनी तीर्थयात्रियों फा-हियान (गुप्त काल) और ह्वेन त्सांग (हर्षवर्धन काल) के यात्रा वृत्तांत भी समकालीन भारत के बारे में जानकारी के मूल्यवान स्रोत हैं।

9. मिलान प्रकार

सूची I (प्रागैतिहासिक काल) को सूची II (प्रमुख उपकरण/विशेषता) के साथ सुमेलित करें:

सूची I (प्रागैतिहासिक काल)	सूची II (प्रमुख उपकरण/विशेषता)
A. पुरापाषाण युग	I. माइक्रोलिथ्स (छोटे पत्थर के औजार)
B. मध्यपाषाण युग	II. कृषि, पशुपालन, स्थायी जीवन, पॉलिश किए गए पत्थर के औजार
C. नवपाषाण युग	III. हाथ-कुल्हाड़ी, क्लीवर, फ्लेक उपकरण
D. ताम्रपाषाण युग	चतुर्थ. तांबे और पत्थर के औजारों, चित्रित मिट्टी के बर्तनों का सह-अस्तित्व

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) A-III, B-I, C-II, D-IV

(2) A-I, B-III, C-IV, D-II

(3) A-III, B-II, C-I, D-IV

(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

सही उत्तर: (1) A-III, BI, C-II, D-IV

स्पष्टीकरण:

- **पुरापाषाण युग (A-III):**
  - यह मानव इतिहास की सबसे लम्बी अवधि है, जिसके दौरान मनुष्य मुख्य रूप से शिकारी और भोजन संग्राहक थे।
  - औजार बड़े और अपरिष्कृत थे, जैसे हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर और परतदार औजार, जो क्वार्टजाइट जैसे पत्थरों से बने थे।
- **मध्यपाषाण युग (B-I)**
  - यह पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच का संक्रमणकालीन काल था।
  - इस काल की मुख्य विशेषता माइक्रोलिथ्स है - छोटे, ज्यामितीय पत्थर के औजार जिन्हें उपयोग के लिए हड्डी या लकड़ी के हैंडल पर लगाया जाता था। शिकार करना और मछली पकड़ना मुख्य व्यवसाय थे।
- **नवपाषाण युग (C-II):**
  - इस अवधि के दौरान क्रांतिकारी परिवर्तन हुए, जैसे कि कृषि की शुरुआत, पशुपालन, स्थायी जीवन, मिट्टी के बर्तन बनाना और पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों का उपयोग। इसे 'नवपाषाण क्रांति' भी कहा जाता है।
- **ताम्रपाषाण युग (D-IV):**
  - इस काल में मनुष्य ने पत्थर के साथ-साथ धातु (मुख्यतः तांबा) का उपयोग करना भी सीखा।
  - इस संस्कृति की विशेषता तांबे और पत्थर के औजारों का सह-अस्तित्व, विशिष्ट चित्रित मिट्टी के बर्तन (जैसे काले और लाल बर्तन) और ग्रामीण बस्तियाँ हैं।

10. विवरण प्रकार

सिकंदर के भारत पर आक्रमण (327-325 ईसा पूर्व) के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

कथन I: सिकंदर का भारत पर आक्रमण मुख्य रूप से भारत की अपार संपदा और विश्व विजेता बनने की उसकी महत्वाकांक्षा से प्रेरित था।

कथन II: तक्षशिला के शासक अम्भी ने सिकंदर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और उसके साथ सहयोग किया।

कथन III: पोरस (पुरु), जिसने झेलम और चिनाब नदियों के बीच शासन किया था, ने बहादुरी से सिकंदर का सामना किया, हालांकि वह हाइडस्पेस (झेलम) के युद्ध में हार गया था।

कथन IV: सिकंदर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इनकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप उसे भारत से लौटना पड़ा, और उसने भारत पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ा।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(1) केवल कथन I

(2) केवल कथन II

(3) केवल कथन III

(4) केवल कथन IV

सही उत्तर: (4) केवल कथन IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन IV (गलत):** हालांकि यह सच है कि सिकंदर की थकी हुई सेना ने ब्यास नदी से आगे बढ़ने से इनकार कर दिया, जिससे उसे वापस लौटने पर मजबूर होना पड़ा, लेकिन यह कहना पूरी तरह से सही नहीं है कि उसने भारत पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ा।
  - **प्रभाव:** सिकंदर के आक्रमण ने भारत और ग्रीस के बीच सीधा संपर्क स्थापित किया, जिससे व्यापार, कला (गांधार कला पर ग्रीक प्रभाव), खगोल विज्ञान और सिक्का-निर्माण में आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला। इसने भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांतों की राजनीतिक एकता को बाधित किया, जिसने बाद में चंद्रगुप्त मौर्य को अपने साम्राज्य का विस्तार करने में मदद की। उन्होंने कुछ ग्रीक क्षत्रपों को भी नियुक्त किया।
- **कथन I (सही):** भारत की संपत्ति की प्रसिद्धि और विश्व विजय के लिए सिकंदर की महत्वाकांक्षा उसके आक्रमण के लिए प्रमुख प्रेरक कारक थे।
- **कथन II (सही):** तक्षशिला के शासक अम्भी ने सिकंदर के अधीन होकर उसे सैन्य सहायता भी प्रदान की थी।
- **कथन III (सही):** राजा पोरस ने झेलम नदी (ग्रीक स्रोतों में हाइडेस्पेस) के तट पर सिकंदर के खिलाफ कड़ी लड़ाई लड़ी। हालाँकि पोरस हार गया था, लेकिन सिकंदर उसकी बहादुरी से प्रभावित हुआ, उसका राज्य बहाल किया और उसे अपना सहयोगी बना लिया।

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

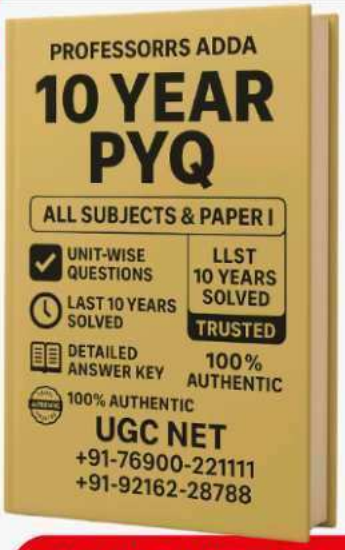

CLICK HERE

NEW PRODUCT

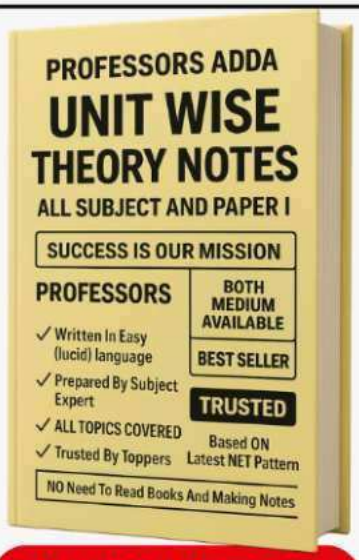

CLICK HERE

NEW PRODUCT

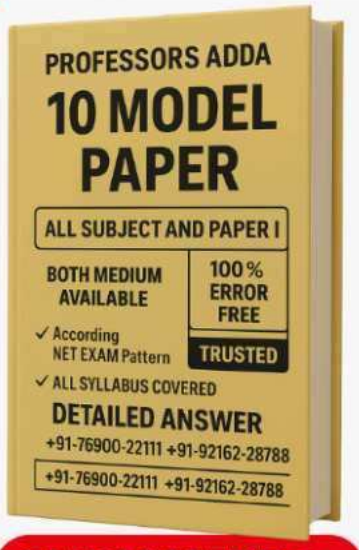

CLICK HERE

NEW PRODUCT

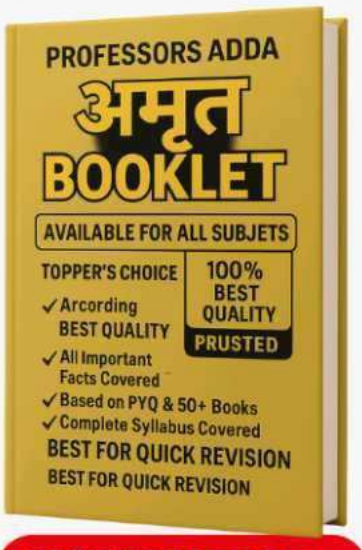

CLICK HERE

NEW PRODUCT

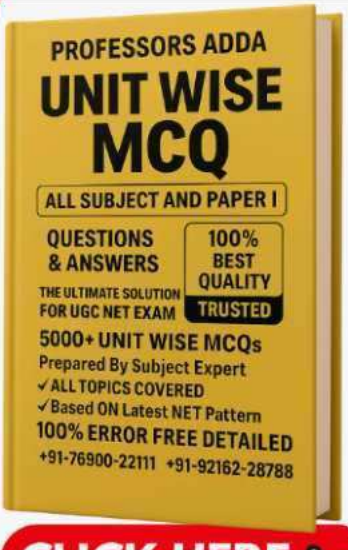

CLICK HERE

NEW PRODUCT

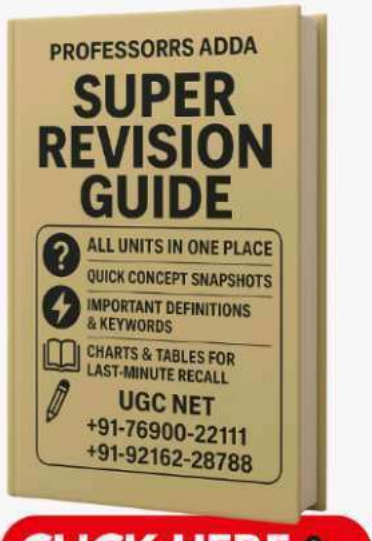

CLICK HERE

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

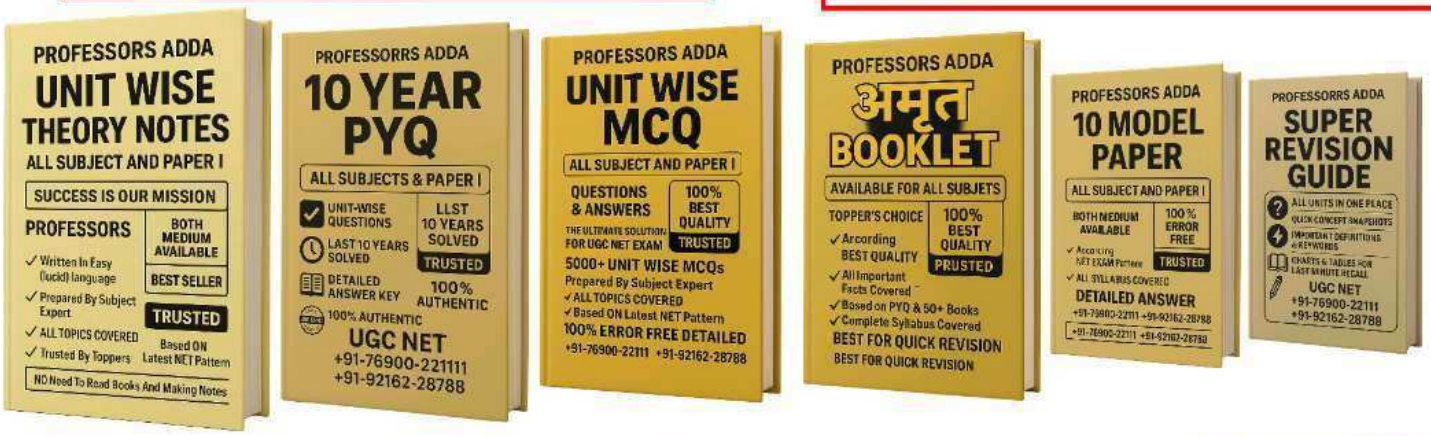

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

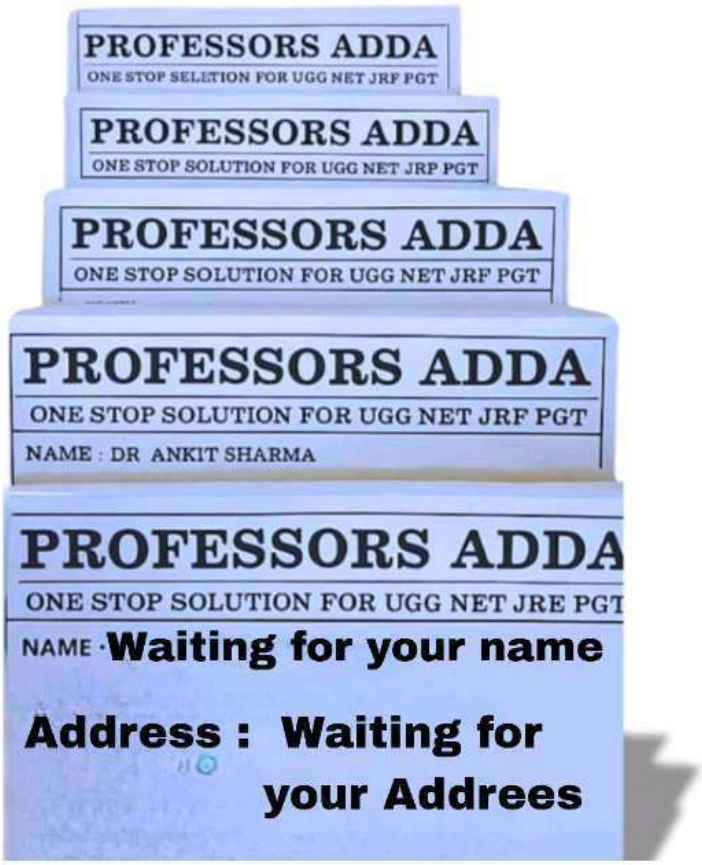

FREE DELIVERY | CASH ON DELIVERY | TRUSTED | LOW PRICE | CUSTOMER SATISFACTION 100 GUARANTEE

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

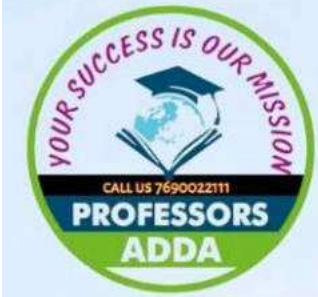

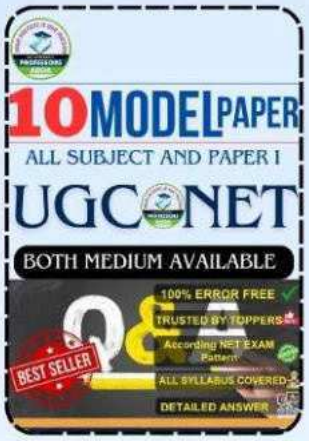

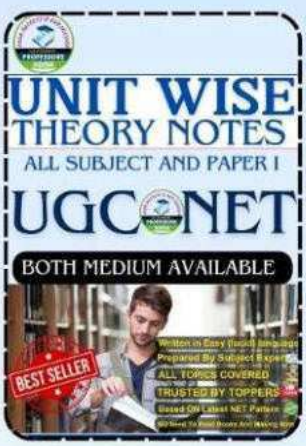

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
Based ON UGC Authorised Answers KEY
VERIFIED
360 Guidance
360°
Highest Success Rate in India
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

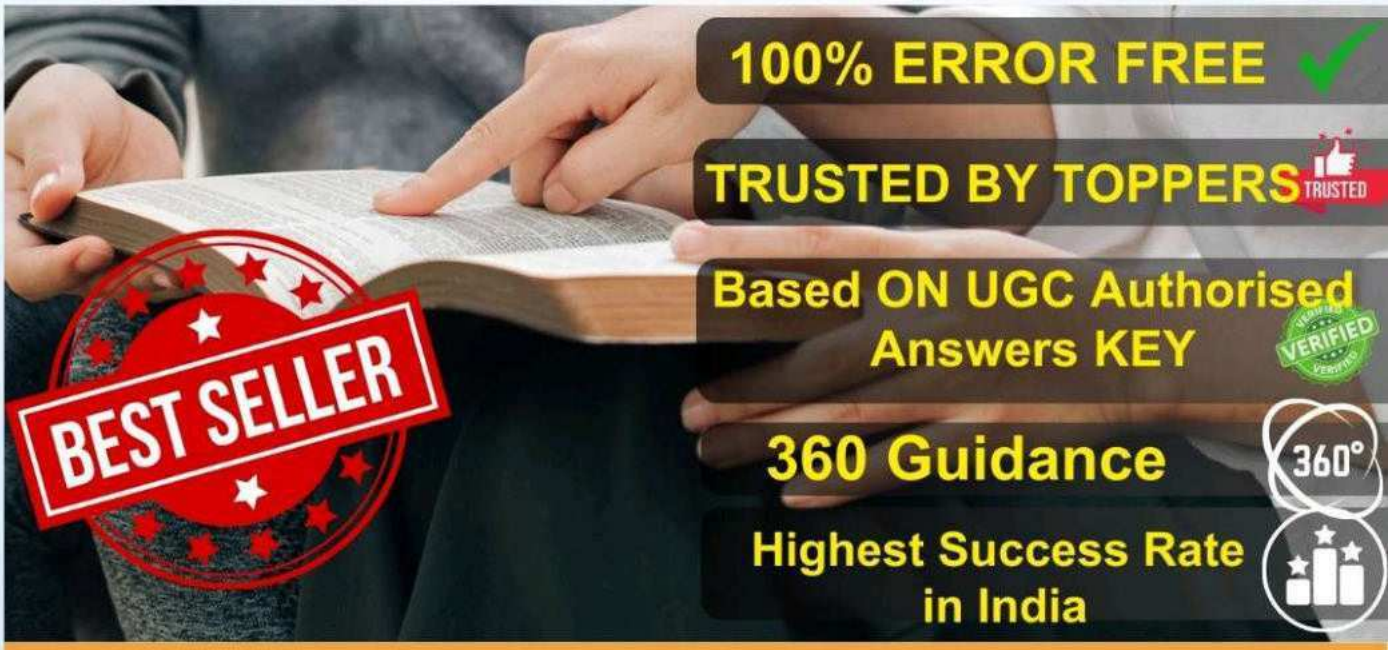

यू.जी.सी. नेट (पुन: परीक्षा) इतिहास 29-08-2024 SHIFT-II

1. प्रख्यात विद्वान यामिन अल-दीन अबुल हसन को निम्नलिखित में से किस नाम से भी जाना जाता है?
(a) सिराजी
(c) इसामी
(b) हसन निजामी
(d) अमीर खुसरो देहलवी

Ans. (d)

2. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I (विधान/अधिनियम)	सूची-II
A. मूलवासी विवाह	I. अधिनियम, 1872 12 वर्ष के कम आयु की लड़कियों का विवाह प्रतिषेधित किया
B. सहमति की आयु अधिनियम, 1891	II. 14 वर्ष से कम आयु की लड़कियों का विवाह प्रतिषेधित था।
C. शारदा अधिनियम, 1930	III. विवाह योग्य आयु बढ़ाकर लड़कियों के लिए 15 से 18 और लड़कों के लिए 21 कर दी थी।
D. बाल विवाह प्रतिषेध(संशोधन) अधिनियम, 1978	IV. विवाह आयु को बढ़ावा और 18 वर्ष से कम आयु के लड़कों एवं 14 वर्ष से कम आयु की लड़कियों के लिए दाण्डिक कार्रवाई का उपबंध

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III, B-IV, C-II, D-I
(d) A-II, B-I, C-IV, D-III

Ans. (d)

3. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. अर्नोल्ड टॉयनबी	I. स्टडी ऑफ हिस्ट्री
B. ओस्वाल्ड स्पेंगलर	II. दि डिक्लाइन ऑफ दि वेस्ट
C. आर. जी. कॉलिंगवुड	III. दि आइडिया ऑफ नेचर
D. जैकब बरकहार्ट	IV. डेर सिसेरौन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) A-II, B-IV, C-III, D-I
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-II, B-1, C-III, D-IV
(d) A-I, B-III, C-IV, D-II

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

Ans. (b)

4. निम्नलिखित में से कौन-से कथन सत्य है?
A. तुगलक स्थापत्य कला की अकर्षक विशेषता "बैटर" नाम वाली ढ़लवा दीवारें है।
B. यह तुगलक राजवंश की सभी इमारतों में प्रयुक्त किया था।
C. तुगलकों ने अपने भवनों में केवल भूरा पत्थर प्रयुक्त किया था।
D. फिरोज शाह तुगलक के भवनों में मलबा पर चूना प्लास्टर का मोटा लेप किया गया था जो बाद में रंग से धोया जाता था।
E. फिरोज शाह तुगलक के सभी भवनों में पायी गई सजीवटी नमूना घंटी और जंजीर है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A और C
(b) केवल B और D
(c) केवल C और E
(d) केवल A और D

Ans. (d)

5. शेरशाह को उसके पिता हसन खान के जीवनकाल में निम्नलिखित में से किन परगनों के शासन की जिम्मेदारी दी गई थी?
A. चन्दोई
B. खवासपुर
C. पास्सी
D. सासाराम
E. सत्यारी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A और D
(b) केवल B और D
(c) केवल C और D
(d) केवल D और E

Ans. (b)

6. राजस्थान में खुद काश्त किसानों को किस नाम से जाना जाता था?
(a) मिरासी
(b) थालवाहिक
(c) गवेती
(d) चौधरी

Ans. (c)

7. निम्नलिखित में से कौनसी व्यापारिक वस्तु भारत में प्राश्चत्य जगत से आयात नहीं की जाती थी?
(a) काँच के बर्तन
(b) काष्ठ
(c) मोती (कोरल)
(d) भूमध्यसागरीय शराब

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

Ans. (b)

8. 19वीं शताब्दी के प्रथम अर्द्धश के दौरान ब्रिटिश द्वारा अपनाई गई पैक्स-ब्रिटानिका की नीति निम्नलिखित में से किस परिघटना में परिणत नहीं हुई थी?
(a) पिंडारियों का विघटन
(b) ठगी का दमन
(c) अनियमित सैनिकों का विघटन
(d) ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारों पर प्रतिबंध

Ans. (4)

पेपर 1 और सभी नेट विषय के संपूर्ण नोट्स नए सिलेबस और पैटर्न के अनुसार उपलब्ध हैं।
निःशुल्क samples के लिए
अभी कॉल या व्हाट्सएप करें 7690022111 / 9216228788

9. निम्नलिखित में से कौन ऋग्वेद के नासात्यास के साथ पहचाने जाते हैं?
(a) असुर
(b) मिश्र
(c) पणि
(d) अश्विन

Ans. (d)
10. सूची-I से साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (सूफी संत)	सूची-II (गतिविधि का केन्द्र)
A. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	I. अजोधन
B. बाबा फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	II. देवतल्ला
C. शेख जमालुद्दीन	III. अजमेर
D. मुईनुद्दीन चिश्ती	IV. दिल्ली

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) A-IV, B-I, C-II, D-III
(b) A-1, B-II, C-IV, D-III
(c) A-II, B-IV, C-I, D-III
(d) A-II, B-III, C-IV, D-I

Ans. (a) :

11. सूची-I से साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I (1857 की क्रांति के राजनीतिक करण)	सूची - II (क्षेत्र)
A. विजय का अधिकार	I. सिक्किम
B. व्यपगत का सिद्धांत	II. उदयपुर
C. "अभिशासितों का भला"	III. अवध
D. राजसी उपाधियों का समापन	IV. तंजौर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-IV, B-I, C-III, D-IV
(d) A-IV, B-I, C-III, D-II

Ans. (a):

12. मिरात-ए-अहमदी ग्रंथ के अनुसार हुन्डी के लिए फारसी शब्द क्या था?
(a) सुफ्ता
(c) महमूद
(b) चालानी
(d) सर्राफी

Ans. (a)

13. सूची-I से साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I (क्रोनोग्राम में शब्द)	सूची-II (उनसे अभिप्रेत संख्याएं)
A. भूमि (पृथ्वी)	I. 2
B. कर (हाथ)	II. 4
C. लोक (विश्व)	III. 1
D. वेद	IV. 3

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) A-III, B-II, C-IV, D-I
(b) A-III, B-I, C-IV, D-II
(c) A-II, B-I, C-III, D-IV
(d) A-II, B-IV, C-III, D-I

Ans. (b)

PROFESSORS ADDA

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ⬇

1. Concept/ Theory pdf Notes
2. MCQ Quiz
3. Latest PYQs
4. Quick Revision Amriut
5. Model Test Papers
6. Current Affairs Focus
7. All India Rank
8. Latest exam Updates
9. Brain Booster facts

Free Free --- Join UGC NET
Subject wise Free study group.
ALL subject available.
send us Subject + medium on this number 7690022111. Our team will add you
Click on link to join
https://wa.link/9r0r0

Don't Miss this opportunity
Join & share..... आज ही जुड़े और अपनी NET / JRF एक बार मे सफलता सुनिश्चित करे .

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

UGC NET इतिहास PYQ (2016- JAN 2025)

विश्लेषण और इकाई-वार सारांश प्रश्न पैटर्न और ट्रेंड विश्लेषण

1. प्रश्नों के प्रकारों में संतुलन:

- **तथ्यात्मक पहचान:** शासकों, राजवंशों, घटनाओं, तिथियों, स्थानों, पुस्तकों, लेखकों, संधियों, अधिनियमों, प्रशासनिक पदों (जैसे दबीर, मजूमदार, पंडिकवल कुली), पुरातात्विक स्थलों, सिक्कों, अभिलेखों और कला शैलियों की सीधी पहचान पर आधारित प्रश्न। (उदाहरण: सौन्दरानन्द काव्य के लेखक कौन हैं? इक्ता का क्या अर्थ है? बाजीराव प्रथम को किसने हराया?)
- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** घटनाओं (जैसे युद्ध, संधियाँ, अधिनियम, विद्रोह, षड्यंत्र केस), शासकों/राजवंशों, यात्रियों, सुधारकों, संगठनों की स्थापना, या साहित्यिक/कलात्मक विकास को उनके घटित होने/प्रकाशन/निर्माण के क्रम में व्यवस्थित करने वाले प्रश्नों की महत्वपूर्ण संख्या है। यह ऐतिहासिक समझ और तिथियों के ज्ञान का परीक्षण करता है।
- **मिलान (Matching):** लेखकों को उनकी पुस्तकों से, शासकों को उनके राजवंशों/युद्धों/उपाधियों से, प्रशासनिक पदों को उनके कार्यों से, पुरातात्विक स्थलों को उनके स्थानों/संस्कृति से, या घटनाओं को उनकी तिथियों/परिणामों से मिलाने वाले प्रश्न।
- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason):** ऐतिहासिक घटनाओं, प्रवृत्तियों, या व्याख्याओं और उनके अंतर्निहित कारणों/तर्कों के बीच संबंध का मूल्यांकन करने वाले प्रश्न। (उदाहरण: A: अशोक ने अपने शिलालेख XIII में कहा... R: वह सर्वधर्म समभाव में विश्वास करता था।)
- **स्रोत आधारित प्रश्न:** अभिलेखों (जैसे सोहगौरा ताम्रपत्र, हाथीगुम्फा, रबाटक), सिक्कों (न्यूमिज़मैटिक्स), साहित्यिक स्रोतों (जैसे अर्थशास्त्र, संगम साहित्य, विदेशी यात्रियों के वृत्तांत - मेगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग, अल-बिरूनी, बर्नियर, टैवर्नियर), या पुरातात्विक साक्ष्यों (जैसे भीमबेटका चित्रकला, हड़प्पा स्थल) पर आधारित प्रश्न।
- **अवधारणात्मक समझ:** ऐतिहासिक अवधारणाओं (जैसे अग्रहार, वर्णसंकर, इक्ता, जागीर, महलवाड़ी, रैयतवाड़ी, प्राच्यवाद, उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, साम्प्रदायिकता, इतिहासलेखन के स्कूल - एनाल्स, सबाल्टर्न) की समझ का परीक्षण।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **बहु-विकल्पीय कथन (Multiple Correct Statements):** किसी घटना, व्यक्ति, स्थान, स्रोत या अवधारणा के बारे में दिए गए कई कथनों में से सही या गलत कथनों के समूह की पहचान करने वाले प्रश्न। ये विस्तृत और सूक्ष्म ज्ञान का परीक्षण करते हैं।
- **अनुच्छेद आधारित प्रश्न (Passage-based Questions):** ऐतिहासिक अंशों या इतिहासकारों के विचारों पर आधारित प्रश्न, जो पाठ की समझ, व्याख्या, विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं। (उदाहरण: मराठा इतिहास, 1857 का विद्रोह, अशोक के धम्म, मुगल जागीरदारी पर आधारित अनुच्छेद)।

2. कठिनाई स्तर और कौशल परीक्षण:

- परीक्षा में तथ्यात्मक स्मरण के साथ-साथ अवधारणाओं की समझ, स्रोतों का विश्लेषण, विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और प्रवृत्तियों के बीच संबंध स्थापित करने और आलोचनात्मक मूल्यांकन पर जोर दिया जाता है।
- कालानुक्रमिक और मिलान वाले प्रश्नों के लिए व्यापक और सटीक ज्ञान आवश्यक है।
- अभिकथन-कारण और स्रोत-आधारित प्रश्न विश्लेषणात्मक कौशल की मांग करते हैं।
- इतिहासलेखन संबंधी प्रश्न विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ का परीक्षण करते हैं।

3. नवीनतम रुझान:

- इतिहासलेखन, विशेष रूप से सबाल्टर्न और उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण पर बढ़ते प्रश्न।
- पर्यावरण इतिहास, लिंग इतिहास और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के इतिहास जैसे नए क्षेत्रों पर ध्यान।
- क्षेत्रीय इतिहास और दक्षिण भारतीय इतिहास पर निरंतर फोकस।
- स्रोत-आधारित प्रश्नों की बढ़ती संख्या, विशेषकर अभिलेखों और साहित्यिक ग्रंथों से।
- स्वतंत्रता के बाद के भारत से संबंधित प्रश्न।
-

आगामी **UGC NET / JRF** परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

अंतिम सफलता के लिए प्रोफेसर्स अड्डा का संपूर्ण अपडेटेड अध्ययन सामग्री पैकेज खरीदें।
हम साल में 2 बार **NET Exam** से पहले अप डेट करते है.

प्रिय स्टूडेंट्स हमारी अमृत नोट्स पुस्तिका छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है।
आप खुद से, कहीं से,कुछ भी पढ़ें, लेकिन एक बार हमारे स्टडी मटेरियल से जरूर पढ़ें ,
आपको बहुत फायदा होगा। गुणवत्तापूर्ण संपूर्ण मार्ग दर्शन देना हमारी प्राथमिकता है.
Contact 7690022111 / 9216228788

विषय-वस्तु फोकस और महत्व:

- **प्राचीन भारत:** सिंधु घाटी सभ्यता (स्थल, विशेषताएं, लिपि), वैदिक काल (साहित्य, समाज, धर्म, राजनीति), महाजनपद, मौर्य साम्राज्य (अशोक के शिलालेख, प्रशासन, अर्थव्यवस्था), शुंग, सातवाहन, कुषाण (कनिष्क), गुप्त साम्राज्य (प्रशासन, साहित्य, कला, विज्ञान), हर्षवर्धन, संगम काल, प्रारंभिक भारतीय धर्म (जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव)।
- **पूर्व-मध्यकालीन भारत:** राजपूत राज्य, चोल, पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार, पाल, सेन। समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म और कला।
- **मध्यकालीन भारत (दिल्ली सल्तनत और मुगल):** राजनीतिक इतिहास (प्रमुख शासक, युद्ध, नीतियां), प्रशासन (इक्ता, मनसबदारी, जागीरदारी, राजस्व प्रणाली - ज़ब्ती, बटाई), अर्थव्यवस्था (व्यापार, वाणिज्य, कृषि, प्रौद्योगिकी), समाज (जाति, वर्ण, भक्ति और सूफी आंदोलन), कला और वास्तुकला, साहित्य (फारसी, क्षेत्रीय भाषाएं)। विजयनगर और बहमनी साम्राज्य। मराठा इतिहास (शिवाजी, पेशवा)।
- **आधुनिक भारत:** यूरोपीय कंपनियों का आगमन, ब्रिटिश विजय और विस्तार (युद्ध, संधियाँ), औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था (भू-राजस्व व्यवस्था, वि-औद्योगीकरण, धन निष्कासन), 1857 का विद्रोह, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (आर्य समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, अलीगढ़ आंदोलन), राष्ट्रवाद का उदय (कांग्रेस की स्थापना, नरमपंथी/गरमपंथी), गांधीवादी आंदोलन (असहयोग, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो), क्रांतिकारी आंदोलन, संवैधानिक विकास (अधिनियम), विभाजन, स्वतंत्रता के बाद का भारत (राज्यों का पुनर्गठन, विदेश नीति - गुटनिरपेक्षता, पंचशील)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- विश्व इतिहास (World History)
- इतिहासलेखन
- अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)
- प्राचीन भारत का गहन अध्ययन
- मध्यकालीन भारत का गहन अध्ययन
- आधुनिक भारत का गहन अध्ययन

इकाई 1: प्राचीन भारत (Ancient India)

- **स्रोत और इतिहासलेखन:**
  - **पुरातात्विक स्रोत:** न्यूमिज़्मैटिक्स (सिक्कों का अध्ययन - अर्थव्यवस्था, धातु, शासकों के चित्र), अभिलेख (सोहगौरा ताम्रपत्र - अन्नागार; हाथीगुम्फा - खारवेल; रबाटक - कनिष्क/कडफिसेस संबंध; एरण स्तंभ - सती; ऐहोल - रविकीर्ति; अशोक के शिलालेख - धम्म, कलिंग विजय, समकालीन शासक, भाषा/लिपि), पुरातात्विक स्थल (कालीबंगन, लोथल, राखीगढ़ी, चन्हुदड़ो, भीमबेटका - चित्रकला; मेगलिथिक स्थल - मस्की, नागार्जुनकोंडा; नवपाषाण स्थल - गुफ्कराल, चिरांद, दाओजली हेडिंग)।
  - **साहित्यिक स्रोत:** वेद (ऋग्वेद - मरुधर-वाचा; अथर्ववेद - सभा/समिति प्रजापति की पुत्रियाँ), ब्राह्मण ग्रंथ (ऐतरेय - शुनःशेप आख्यान), उपनिषद (केन), सूत्र (धर्मसूत्र, गृह्यसूत्र), महाकाव्य (रामायण, महाभारत - भीष्म पर्व में हूण उल्लेख), पुराण, संगम साहित्य (नेय्तल, मुल्लै, पालै, कुरुंजी, मरुतम), बौद्ध ग्रंथ (सुत्तनिपात, धम्मपद, मिलिंदपन्हो, निदान कथा, महापरिनिब्बान सुत्तंत), जैन ग्रंथ (भगवती सूत्र - 16 महाजनपद, आवश्यक सूत्र - चंद्रगुप्त/भद्रबाहु), अर्थशास्त्र (कौटिल्य - सप्तांग सिद्धांत, उपावस, वर्णधर्म), अन्य संस्कृत साहित्य (अश्वघोष - सौन्दरानन्द; भास - दरिद्रचारुदत्त; कालिदास - कुमारसंभव, विक्रमोर्वशीयम्, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र; बाणभट्ट - हर्षचरित; विशाखदत्त - देवीचंद्रगुप्तम्, मुद्राराक्षसम्; क्षेमेन्द्र - समयमात्रिका; बिल्हण - विक्रमांकदेवचरित; कल्हण - राजतरंगिणी; हेमचन्द्र - कुमारपालचरित; वाक्पतिराज - गौडवहो; राजशेखर - कर्पूरमंजरी; नयनचंद्र सूरि - हम्मीरमहाकाव्य), तमिल साहित्य (कंबन - कंब रामायण; मणिमेखलै)।
  - **विदेशी वृत्तांत:** मेगस्थनीज (इंडिका), फाह्यान, ह्वेनसांग, अल-बिरूनी।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

इतिहास वनलाइनर

1. प्रश्न: अलेक्जेंडर कनिंघम ने किस वर्ष हड़प्पा में पहली व्यवस्थित खुदाई शुरू की?
   उत्तर: 1872-73.
2. प्रश्न: प्रसिद्ध 'नृत्य करती लड़की' की कांस्य प्रतिमा 1920 के दशक में अर्नेस्ट मैके द्वारा किस सिंधु घाटी स्थल पर खोजी गई थी?
   उत्तर: मोहनजो-दड़ो।
3. प्रश्न: तीसरी बौद्ध संगीति लगभग 250 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में किस मौर्य सम्राट के संरक्षण में आयोजित की गई थी?
   उत्तर: अशोक।
4. प्रश्न: सेल्यूकस निकेटर द्वारा चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में पाटलिपुत्र भेजे गए यूनानी राजदूत कौन थे?
   उत्तर: मेगस्थनीज।
5. प्रश्न: इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग प्रशस्ति) में किस गुप्त सम्राट की विजयों का विवरण है, और इसकी रचना उनके दरबारी कवि हरिसेन ने की थी?
   उत्तर: समुद्रगुप्त।
6. प्रश्न: 7वीं शताब्दी ईस्वी में कन्नौज के हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान किस चीनी तीर्थयात्री ने भारत का दौरा किया था?
   उत्तर: ह्वेन त्सांग (Xuanzang)।
7. प्रश्न: एलोरा में चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर, विशेष रूप से कैलाश मंदिर (गुफा 16), किस राष्ट्रकूट राजा के संरक्षण में बनाए गए थे?
   उत्तर: कृष्ण प्रथम।
8. प्रश्न: 1192 में, तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को किसने हराया था?
   उत्तर: मुहम्मद गोरी।
9. प्रश्न: दिल्ली सल्तनत का कौन सा शासक, जो अपनी 'बाजार नियंत्रण नीति' के लिए जाना जाता है, 1296 में दिल्ली में सुल्तान घोषित किया गया था?

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

उत्तर: अलाउद्दीन खिलजी।

10. प्रश्न: 1504 में आगरा शहर की स्थापना किसने की और उसे अपनी राजधानी बनाया?

उत्तर: सिकंदर लोदी।

11. प्रश्न: दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण मूल रूप से कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा शुरू किया गया था और बाद में किस सुल्तान द्वारा पूरा किया गया?

उत्तर: इल्तुतमिश।

12. प्रश्न: विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 में तुंगभद्रा नदी के तट पर किन दो भाइयों ने की थी?

उत्तर: हरिहर प्रथम और बुक्का राय प्रथम।

13. प्रश्न: किस मुगल सम्राट ने 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई जीती, जिससे भारत में मुगल वंश की स्थापना हुई?

उत्तर: बाबर।

14. प्रश्न: 16वीं शताब्दी में अकबर के शासनकाल का आधिकारिक वृत्तांत, अकबरनामा किसने लिखा था?

उत्तर: अबुल फजल।

15. प्रश्न: 'इबादत खाना' (पूजा का घर) धार्मिक चर्चाओं के लिए अकबर द्वारा किस शहर में बनवाया गया था?

उत्तर: फतेहपुर सीकरी।

16. प्रश्न: अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को 31 दिसंबर 1600 को किस सम्राट द्वारा पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए एक शाही चार्टर प्रदान किया गया था?

उत्तर: रानी एलिजाबेथ प्रथम।

17. प्रश्न: प्लासी का युद्ध किस वर्ष हुआ, जिसमें रॉबर्ट क्लाइव की सेना ने सिराज-उद-दौला को हराया था?

उत्तर: 1757.

18. प्रश्न: बंगाल का 'स्थायी बंदोबस्त' 1793 में किस गवर्नर-जनरल द्वारा शुरू किया गया था?

उत्तर: लॉर्ड कॉर्नवॉलिस।

19. प्रश्न: ब्रह्म समाज, एक महत्वपूर्ण सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, की स्थापना 1828 में कलकत्ता में किसके द्वारा की गई थी?

उत्तर: राजा राम मोहन राय।

20. प्रश्न: सती प्रथा को औपचारिक रूप से 1829 में किस गवर्नर-जनरल के कार्यकाल के दौरान समाप्त कर दिया गया था?

उत्तर: लॉर्ड विलियम बेंटिंक।

21. प्रश्न: 'व्यपगत का सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) नीति, जिसका उपयोग कई भारतीय राज्यों को हड़पने के लिए किया गया था, सबसे प्रसिद्ध रूप से किस गवर्नर-जनरल से जुड़ी है?

उत्तर: लॉर्ड डलहौजी।

22. प्रश्न: 1857 का विद्रोह 10 मई को किस शहर में शुरू हुआ?

उत्तर: मेरठ।

23. प्रश्न: दिल्ली में 1857 के विद्रोह का नेता किसे घोषित किया गया था?

उत्तर: बहादुर शाह जफर।

24. प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किस वर्ष बंबई में हुई थी, जिसके पहले अध्यक्ष डब्ल्यू.सी. बनर्जी थे?

उत्तर: 1885.

25. प्रश्न: बंगाल का विभाजन, जो राष्ट्रवादी आंदोलन के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक था, 1905 में किस वायसराय द्वारा घोषित किया गया था?

उत्तर: लॉर्ड कर्जन।

26. प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक 'सूरत विभाजन' किस शहर और वर्ष में हुआ था?

उत्तर: सूरत, 1907.

27. प्रश्न: मॉर्ले-मिंटो सुधार, जिसने मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल की शुरुआत की, किस वर्ष के भारतीय परिषद अधिनियम के रूप में लागू किया गया था?

उत्तर: 1909.

28. प्रश्न: महात्मा गांधी जनवरी 1915 में किस देश से भारत लौटे थे?

उत्तर: दक्षिण अफ्रीका।

29. प्रश्न: जलियांवाला बाग हत्याकांड किस वर्ष 13 अप्रैल को अमृतसर में हुआ था?

उत्तर: 1919.

30. प्रश्न: महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन किस वर्ष शुरू किया?

उत्तर: 1920.

31. प्रश्न: 'चौरी चौरा' की घटना, जिसके कारण असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया, 1922 में वर्तमान के किस राज्य में हुई?

उत्तर: उत्तर प्रदेश।

32. प्रश्न: साइमन कमीशन, ब्रिटिश सांसदों का एक समूह, संवैधानिक सुधार का अध्ययन करने के लिए किस वर्ष भारत आया?

उत्तर: 1928.

33. प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में, जो 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ, 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित किया गया?

उत्तर: लाहौर अधिवेशन।

34. प्रश्न: महात्मा गांधी ने दांडी मार्च के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया, जो किस वर्ष उनके साबरमती आश्रम से शुरू हुआ?

उत्तर: 1930.

35. प्रश्न: 1932 का पूना पैक्ट दलित वर्ग के प्रतिनिधित्व के संबंध में महात्मा गांधी और किस अन्य नेता के बीच एक समझौता था?

उत्तर: बी.आर. अंबेडकर।

36. प्रश्न: भारत सरकार अधिनियम, जिसने प्रांतीय स्वायत्तता प्रदान की और संविधान का एक खाका था, किस वर्ष पारित किया गया था?

उत्तर: 1935.

37. प्रश्न: ऑल-इंडिया मुस्लिम लीग ने किस वर्ष एक अलग राष्ट्र की मांग करते हुए

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

लाहौर प्रस्ताव (पाकिस्तान प्रस्ताव) पारित किया?

उत्तर: 1940.

38. प्रश्न: भारत छोड़ो आंदोलन अगस्त 1942 में महात्मा गांधी द्वारा किस शहर के ग्वालिया टैंक मैदान में शुरू किया गया था?

उत्तर: बंबई (अब मुंबई)।

39. प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता से इस्तीफा देने के बाद 1939 में 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना किसने की?

उत्तर: सुभाष चंद्र बोस।

40. प्रश्न: कैबिनेट मिशन, जिसे ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने सत्ता हस्तांतरण पर चर्चा के लिए भेजा था, किस वर्ष भारत आया?

उत्तर: 1946.

41. प्रश्न: ब्रिटिश भारत के अंतिम वायसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर-जनरल कौन थे?

उत्तर: लॉर्ड माउंटबेटन।

42. प्रश्न: भू-राजस्व की 'रैयतवाड़ी प्रणाली' सबसे पहले मद्रास प्रेसीडेंसी में किस ब्रिटिश प्रशासक द्वारा शुरू की गई थी?

उत्तर: थॉमस मुनरो।

43. प्रश्न: बिहार में नालंदा का प्राचीन विश्वविद्यालय मुख्य रूप से किस धर्म के लिए शिक्षा का एक महान केंद्र था?

उत्तर: बौद्ध धर्म।

44. प्रश्न: आइन-ए-अकबरी किसने लिखी और मुगल सम्राट अकबर के भव्य वजीर के रूप में कार्य किया?

उत्तर: अबुल फजल।

45. प्रश्न: 'द्वैध शासन' (Diarchy) प्रणाली किस ब्रिटिश अधिनियम द्वारा प्रांतों में शुरू की गई थी?

उत्तर: भारत सरकार अधिनियम, 1919।

46. प्रश्न: गदर पार्टी का गठन 1913 में भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा मुख्य रूप से

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

किस उत्तरी अमेरिकी शहर में किया गया था?

उत्तर: सैन फ्रांसिस्को।

47. प्रश्न: भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा के लिए पहला गोलमेज सम्मेलन किस वर्ष लंदन में आयोजित किया गया था?

उत्तर: 1930.

48. प्रश्न: 1873 में पुणे में दलित वर्गों के अधिकारों के लिए काम करने के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना किसने की?

उत्तर: ज्योतिबा फुले।

49. प्रश्न: हम्पी के प्राचीन शहर के खंडहर आधुनिक भारतीय राज्य कर्नाटक में तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित हैं?

उत्तर: कर्नाटक।

50. प्रश्न: 1946 में मुस्लिम लीग द्वारा 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' के आह्वान से व्यापक सांप्रदायिक दंगे हुए, जो किस शहर से शुरू हुए?

उत्तर: कलकत्ता (अब कोलकाता)।

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books** – वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula"

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print
📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

इतिहास राजा साम्राज्य SAMPLE

1. सम्राट अशोक (मौर्य वंश)

1. अशोक मौर्य वंश का तीसरा शासक था और उसका शासनकाल सामान्यतः 268 से 232 ईसा पूर्व माना जाता है ।
2. देवानामप्रिय ' (देवताओं का प्रिय) और ' प्रियदर्शी ' (वह जो स्नेह से देखता है) उपाधियों से संदर्भित किया गया है ।
3. उनका व्यक्तिगत नाम, " अशोक ", केवल कुछ छोटे शिलालेखों में पाया जाता है, जैसे कि मास्की , गुर्जर , निट्टूर और उदेगोलम ।
4. अपने राज्याभिषेक के 8वें वर्ष (261 ईसा पूर्व) में, उन्होंने कलिंग पर विजय प्राप्त की और युद्ध के विनाशकारी परिणामों के कारण उनका हृदय परिवर्तन हो गया।
5. अपने प्रमुख शिलालेख XIII में कलिंग युद्ध, अपने पश्चाताप और धम्म की नई नीति का विस्तृत विवरण दिया है ।
6. युद्ध के बाद उन्होंने अपने शासन के आधार के रूप में ' भेरीघोष ' (युद्ध ड्रम) की नीति को त्याग दिया और ' धम्मघोष ' (धार्मिकता का ड्रम) को अपनाया ।
7. अशोक का ' धम्म ' एक सार्वभौमिक नैतिक संहिता थी जो किसी विशिष्ट धार्मिक सिद्धांत पर नहीं, बल्कि सहिष्णुता, अहिंसा और नैतिक आचरण पर आधारित थी।
8. अपने शासनकाल के 13वें वर्ष में उन्होंने ' धम्म' नामक अधिकारियों का एक नया वर्ग नियुक्त किया। ' महामात्र ' का कार्य धम्म का प्रचार करना और लोगों के कल्याण की देखभाल करना था।
9. वह भारतीय इतिहास में पहले शासक थे जिन्होंने शिलालेखों के माध्यम से अपनी प्रजा से सीधे संवाद किया।
10. जेम्स प्रिंसेप 1837 में अशोक के शिलालेखों को सफलतापूर्वक पढ़ने वाले पहले व्यक्ति थे , जो ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे ।
11. उनके शिलालेख चार लिपियों में पाए गए हैं: ब्राह्मी (अधिकांश भारत), खरोष्ठी (उत्तर-पश्चिम), अरामी और ग्रीक (अफगानिस्तान)।
12. बौद्ध परम्परा के अनुसार, बौद्ध भिक्षु उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था ।
13. मोग्गलिपुत्त की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया तिस्सा .
14. उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों में बौद्ध धर्म प्रचारक भेजे, जिनमें उनके पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा भी शामिल थे, जो बोधि वृक्ष के पौधे के साथ श्रीलंका (ताम्रपर्णी) गये थे।
15. बराबर पहाड़ियों में स्थित गुफाएं आजीविक संप्रदाय के अनुयायियों को दान कर दीं।
16. राजुक ' नामक न्यायिक अधिकारी नियुक्त किये तथा निष्पक्ष न्याय सुनिश्चित करने के लिए उन्हें कानूनी कार्यवाही में स्वायत्तता प्रदान की।
17. अपने लुम्बिनी स्तंभ शिलालेख में उन्होंने घोषणा की कि चूंकि यह बुद्ध की जन्मस्थली थी, इसलिए उन्होंने उस गांव का भू-राजस्व (' बलि ') घटाकर 1/8 कर दिया था।
18. अशोक ने पशु बलि की निंदा की और अपने पहले शिलालेख में सामाजिक समारोहों (' समाज ') और

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

शाही रसोई के लिए पशुओं के वध पर रोक लगा दी।

19. सारनाथ में स्थित उनके चार सिंहों वाले सिंह स्तंभ को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।
20. परम्परा के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूप बनवाये थे, जिनमें सांची और भरहुत जैसे विद्यमान स्तूपों का विस्तार और नवीनीकरण भी शामिल था ।
21. उनके शिलालेखों में उनकी रानी ' कौरवकी ' और पुत्र ' तिवर ' का उल्लेख है।
22. अपने 7वें स्तंभ शिलालेख में, अशोक ने अपने धम्म का सार संक्षेप में प्रस्तुत किया है , जिसमें 'कुछ पाप, बहुत से अच्छे कर्म, दया, दान, सत्यता और पवित्रता' शामिल हैं।
23. उन्होंने अपने साम्राज्य को प्रान्तों में विभाजित किया, जो सामान्यतः राजकुमारों ('कुमार' या ' आर्यपुत्र ') द्वारा शासित होते थे, जो वायसराय के रूप में कार्य करते थे।
24. उन्होंने मनुष्यों और पशुओं दोनों के लिए अस्पताल स्थापित किये और औषधीय जड़ी-बूटियों की खेती को बढ़ावा दिया।
25. उनका साम्राज्य आधुनिक अफगानिस्तान से लेकर बांग्लादेश तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैला हुआ था, जिससे यह भारतीय इतिहास में सबसे बड़ा साम्राज्य बन गया।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

2. समुद्रगुप्त (गुप्त वंश)

1. समुद्रगुप्त (शासनकाल लगभग 335-380 ई.) को इतिहासकार विन्सेंट ए. स्मिथ ने उनकी व्यापक सैन्य विजयों के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
2. उनके शासनकाल के बारे में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत ' प्रयाग ' है प्रशस्ति ' या 'इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख'।
3. प्रयाग प्रशस्ति की रचना उनके दरबारी कवि और उच्च पदस्थ अधिकारी (' महादंडनायक '), हरिषेण ने संस्कृत की चम्पू शैली (गद्य और पद्य मिश्रित) में की थी।
4. यह प्रशस्ति उसी स्तंभ पर उत्कीर्ण है जिस पर सम्राट अशोक का एक आदेश और बाद में जहांगीर का एक शिलालेख अंकित है।
5. प्रशस्ति के अनुसार , उसने ' आर्यावर्त ' (उत्तरी भारत) के 9 शासकों के विरुद्ध ' प्रसभोद्धरण ' (बलपूर्वक उखाड़ फेंकने) की नीति अपनाई और उनके राज्यों पर कब्जा कर लिया।
6. दक्षिणापथ ' (दक्षिणी भारत) के 12 शासकों के प्रति ' ग्रहण-मोक्षानुग्रह ' (कब्जा करना, फिर मुक्त करना और पुनः स्थापित करना) की नीति अपनाई ।
7. उसने सीमावर्ती राज्यों (' प्रत्यंतनृपति ') और गणराज्यों (' गण-राज्यों ') को कर देकर, उसके आदेशों का पालन करके और श्रद्धांजलि देकर अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया।
8. उनकी प्रमुख उपाधियों में ' सर्वराजोच्छेत्ता ' (सभी राजाओं को उखाड़ फेंकने वाला), ' पराक्रमांक ', और ' अप्रतिरथ ' (बेजोड़ योद्धा) शामिल हैं।
9. वह एक कुशल संगीतकार और वीणा वादक थे, जिसकी पुष्टि उनके ' वीणा -वादक' प्रकार के सिक्कों से होती है, जिससे उन्हें ' कविराज ' (कवियों का राजा) की उपाधि मिली ।
10. उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। अपनी शाही संप्रभुता स्थापित करने के लिए ' यज्ञ ' (घोड़े की बलि समारोह) किया और ' अश्वमेधपराक्रम ' की उपाधि धारण की ।
11. उन्होंने 6 प्रकार के सोने के सिक्के (दीनार) जारी किए: गरुड़ प्रकार, तीरंदाज प्रकार, युद्ध-कुल्हाड़ी प्रकार, अश्वमेध प्रकार, टाइगर-स्लेयर प्रकार, और गीतकार (वीणा -वादक) प्रकार।
12. वह कला और साहित्य के महान संरक्षक थे और उन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबंधु को संरक्षण दिया था ।
13. श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने बोधगया में एक बौद्ध मठ बनाने की अनुमति मांगी , जिसे उन्होंने प्रदान कर दिया।
14. वैष्णव धर्म का अनुयायी था और उसके सिक्कों पर गरुड़ (बाज) का प्रतीक पाया जाता है, लेकिन वह अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था।
15. दैवपुत्र-शाही-शाहानुशाही ' (कुषाण) और शक जैसी विदेशी शक्तियों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए , जिन्होंने उन्हें उपहार भेजे।
16. एरण शिलालेख (मध्य प्रदेश) में उनकी पत्नी ' दत्तदेवी ' का उल्लेख है और उन्हें पौराणिक राजाओं पृथु

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

और राघव से भी बड़ा दानी बताया गया है।

17. उसका साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र से लेकर पश्चिम में चम्बल नदी तक फैला हुआ था।
18. वे ही थे जिन्होंने गुप्त साम्राज्य को अखिल भारतीय चरित्र दिया और इसकी नींव को मजबूत किया।
19. प्रयाग प्रशस्ति ने उनकी तुलना विभिन्न देवताओं से करते हुए कहा है कि वे ' धनदा ' (कुबेर), ' वरुण ', ' इंद्र ' और ' यम ' के समान थे।
20. उनके शासनकाल को राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टिकोणों से 'गुप्त साम्राज्य के स्वर्ण युग' की शुरुआत माना जाता है।
21. उन्होंने अपने पिता चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा शुरू की गई साम्राज्यवादी विस्तार की नीति को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया।
22. उनकी मुद्रा अपनी उच्च गुणवत्ता वाली सोने की सामग्री और कलात्मक उत्कृष्टता के लिए जानी जाती है।
23. वह एक योग्य प्रशासक भी थे जिन्होंने अपने विशाल साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक कुशल प्रशासनिक प्रणाली बनाई।
24. उनका व्यक्तित्व एक अजेय योद्धा, एक कुशल राजनीतिज्ञ, एक कला प्रेमी और एक उदार शासक का अद्भुत मिश्रण था।
25. प्रयाग प्रशस्ति में उनकी प्रशंसा इस प्रकार की गई है कि वे अपने संगीत ज्ञान से तुम्बुरु और नारद को भी लज्जित कर सकते थे।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

3. कनिष्क (कुषाण वंश)

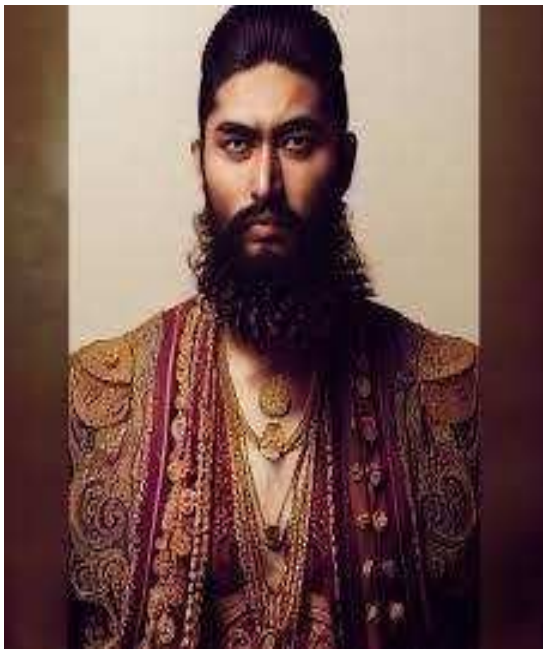

1. कनिष्क (शासनकाल लगभग 78-101 ई.) कुषाण वंश का सबसे महान सम्राट था, जिसका साम्राज्य मध्य एशिया से उत्तरी भारत तक फैला हुआ था।
2. वह 78 ई. में सिंहासन पर बैठे और इस अवसर को चिह्नित करने के लिए ' शक संवत' की शुरुआत की, जिसे आज भी भारत सरकार अपने राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में प्रयोग करती है।
3. उनके साम्राज्य की दो प्रमुख राजधानियाँ थीं: पुरुषपुरा (आधुनिक पेशावर) राजनीतिक केंद्र के रूप में, और मथुरा एक प्रमुख कलात्मक और धार्मिक केंद्र के रूप में।
4. कश्मीर के कुंडलवन में 'चौथी बौद्ध संगीति' का आयोजन था।
5. इस परिषद में ही बौद्ध धर्म स्पष्ट रूप से दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया: हीनयान (रूढ़िवादी स्कूल) और महायान (उदारवादी स्कूल)।
6. कनिष्क महायान बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे, जिसने बुद्ध की प्रतिमा की पूजा और बोधिसत्व की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया।
7. चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता वसुमित्र ने की थी , तथा प्रसिद्ध कवि अश्वघोष उनके प्रतिनिधि थे। बौद्ध विश्वकोश ' महाविभाषा' ' शास्त्र ' का संकलन यहीं किया गया था।
8. उनका दरबार महान विद्वानों से सुशोभित था, जिनमें अश्वघोष (*बुद्धचरित* के लेखक), वसुमित्र , पार्श्व और महान दार्शनिक नागार्जुन शामिल थे ।
9. नागार्जुन ने अपनी ' मध्यमिका' में ' कारिका ' ने ' शून्यवाद ' (सापेक्षता/शून्यता का सिद्धांत) का सिद्धांत प्रतिपादित किया , जिसके कारण उन्हें 'भारत का आइंस्टीन' की उपाधि मिली।
10. चरक ' के लेखक चरक हैं ' संहिता ' के रचयिता और आयुर्वेद के जनक माने जाने वाले , कनिष्क के दरबार में राजवैद्य थे ।
11. उनके शासनकाल के दौरान कला की दो महान शैलियाँ फली-फूलीं: गांधार कला (भारतीय और ग्रीको-रोमन कला का मिश्रण) और मथुरा कला (विशुद्ध रूप से स्वदेशी)।
12. गांधार कला में बुद्ध को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया गया था, जिसमें उनकी विशेषताएं यूनानी देवता अपोलो के समान थीं, जबकि मथुरा कला में बुद्ध को अधिक आध्यात्मिक और भारतीय रूप में चित्रित किया गया था।
13. कनिष्क ने चीन के शासकों को पराजित किया और मध्य एशियाई 'रेशम मार्ग' के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर नियंत्रण स्थापित किया, जिससे व्यापार को काफी बढ़ावा मिला।
14. अताश ' - अग्नि देवता) और बौद्ध (बुद्ध) देवताओं का मिश्रण है , जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
15. कनिष्क की प्रसिद्ध सिरविहीन मूर्ति में उसे लंबा कोट, पतलून और भारी जूते पहने हुए दिखाया गया है, जो उसकी मध्य एशियाई पोशाक का संकेत है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

16. देवपुत्र ' (ईश्वर का पुत्र) की उपाधि अपनाई , जो चीनी सम्राट की उपाधि 'स्वर्ग का पुत्र' से प्रेरित थी।
17. तक्षशिला , पुरुषपुर और मथुरा जैसे शहरों में कई स्तूपों और विहारों के निर्माण का आदेश दिया ।
18. बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण उनकी तुलना अक्सर सम्राट अशोक से की जाती है और उन्हें 'दूसरा अशोक ' भी कहा जाता है।
19. सुश्रुत , जिन्हें 'शल्य चिकित्सा का जनक' माना जाता है, कनिष्क के समकालीन थे ।
20. रबातक शिलालेख (अफगानिस्तान) उनकी वंशावली और उनके साम्राज्य की सीमा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है ।
21. उनके संरक्षण में महायान बौद्ध धर्म भारत से चीन और मध्य एशिया तक फैल गया।
22. वह एक विदेशी शासक थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति को पूरी तरह आत्मसात कर लिया और उसे समृद्ध किया।
23. कुषाण राजाओं ने मथुरा के पास मट में एक ' देवकुल ' (मृत राजाओं के लिए एक शाही मंदिर) की स्थापना की, जहाँ शासकों की मूर्तियों की पूजा की जाती थी।
24. वह वास्तुकला का एक महान संरक्षक था, और कनिष्क पेशावर स्थित स्तूप को प्राचीन विश्व की सबसे ऊंची संरचनाओं में से एक कहा जाता था।
25. कनिष्क का शासनकाल राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक समन्वय का एक अद्वितीय काल था।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

4.हर्षवर्धन (पुष्यभूति / वर्धन वंश)

1. हर्षवर्धन (शासनकाल 606-647 ई.) पुष्यभूति वंश का सबसे शक्तिशाली सम्राट था और उसने ' सकलोत्तरपथनाथ ' (संपूर्ण उत्तर का स्वामी) की उपाधि धारण की थी ।
2. उनके शासनकाल के बारे में जानकारी के दो प्राथमिक स्रोत हैं, उनके दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा रचित *हर्षचरित और* चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत *सी-यू- की*।
3. राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद 606 ई. में सिंहासन पर बैठे और अपनी राजधानी थानेसर से कन्नौज स्थानांतरित कर दी ।
4. उनका साम्राज्य उत्तर भारत में पंजाब से उड़ीसा तक तथा हिमालय से नर्मदा नदी के तट तक फैला हुआ था।
5. दक्षिण के महान चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा के तट पर रोक दिया था। इस घटना का उल्लेख ऐहोल शिलालेख में मिलता है।
6. प्रसिद्ध चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग (जिन्हें 'तीर्थयात्रियों का राजकुमार' भी कहा जाता है) ने उनके शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया और लगभग 15 वर्षों तक यहां रहे।
7. महायान बौद्ध धर्म को सम्मान और बढ़ावा देने के लिए हर्ष ने कन्नौज में एक भव्य धार्मिक सभा बुलाई , जिसकी अध्यक्षता ह्वेनसांग ने की।
8. उन्होंने ' महामोक्ष ' की उपाधि धारण की थी। वह हर पांच साल में प्रयाग (इलाहाबाद) में एक ' सभा परिषद ' में शामिल होते थे, जहां वह अपने निजी कपड़ों सहित अपनी सारी संचित संपत्ति दान कर देते थे।
9. हर्ष स्वयं एक कुशल नाटककार थे। उन्होंने तीन प्रसिद्ध संस्कृत नाटक लिखे: *नागानंद* , *रत्नावली* और *प्रियदर्शिका*।
10. शैव) के भक्त थे , लेकिन अपनी बहन राजश्री और ह्वेन त्सांग के प्रभाव में , वह महायान बौद्ध धर्म के महान संरक्षक बन गए।
11. नालंदा विश्वविद्यालय के उदार संरक्षक थे , उन्होंने इसके रखरखाव के लिए 200 गांवों का राजस्व दान कर दिया था। उनके समय में शिलाभद्र नालंदा के कुलपति थे ।
12. गुप्तों के समान था, लेकिन इसमें सामंती विशेषताएँ अधिक स्पष्ट थीं। अधिकारियों को अक्सर नकद वेतन के बजाय भूमि अनुदान (जगीर) में भुगतान किया जाता था।
13. भू-राजस्व सामान्यतः उपज का 1/6 भाग होता था, तथा ' भगा ', ' हिरण्य ' और 'बलि' जैसे करों का उल्लेख मिलता है।
14. बाणभट्ट के अलावा , मयूर (*सूर्य शतक* के लेखक) और मातंग जैसे विद्वान दिवाकर भी उनके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
15. हर्ष को उत्तर भारत का 'अंतिम महान हिंदू सम्राट' माना जाता है, जिनकी मृत्यु के बाद राजनीतिक विखंडन का दौर शुरू हुआ।
16. उन्होंने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये और 641 ई. में तांग सम्राट के दरबार में अपना दूत

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

भेजा।

17. मधुबन और बांसखेड़ा ताम्रपत्र शिलालेखों पर उनके स्वयं के हस्ताक्षर पाए गए हैं।
18. महाराजाधिराज ' और ' परमभट्टारक ' जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
19. उनकी सेना अपने विशाल हाथी दल के लिए जानी जाती थी, जो उनकी सैन्य शक्ति का एक प्रमुख घटक था।
20. ह्वेनसांग का वर्णन है कि हर्ष ने अपने साम्राज्य में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक सख्त कानूनी संहिता लागू की थी।
21. उनकी बहन राजश्री ने उनके द्वारा बचाए जाने के बाद उनके प्रशासन में सलाहकार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
22. *हर्षचरित* के अनुसार , हर्ष ने कश्मीर पर आक्रमण किया और बुद्ध का एक दांत अवशेष प्राप्त किया, जिसे उसने कन्नौज के एक विहार में स्थापित किया।
23. उसने अपने पूरे साम्राज्य में यात्रियों और बीमारों के लिए विश्राम गृह और अस्पताल स्थापित किये।
24. ह्वेन त्सांग ने उसे एक अथक शासक के रूप में वर्णित किया है, जिसने प्रशासनिक, धार्मिक और व्यक्तिगत मामलों के प्रबंधन के लिए अपने दिन को तीन भागों में विभाजित किया था।
25. हर्ष का शासनकाल एक संक्रमणकालीन काल माना जाता है, जो भारतीय इतिहास में शास्त्रीय युग के अंत और मध्यकालीन युग की शुरुआत का प्रतीक है।

5. राजा राजा चोल प्रथम (चोल राजवंश)

1. राजा राज प्रथम (शासनकाल 985-1014 ई.) को चोल वंश का सबसे महान सम्राट माना जाता है , जिसने चोल शक्ति को उसके चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया।
2. हिंद महासागर में चोल प्रभुत्व की नींव बन गयी ।
3. उन्होंने कंडालूर के युद्ध में चेरा नौसेना को हराया सलाई ने पांड्य और चेर राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया ।
4. अपनी नौसेना का उपयोग करके, उन्होंने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की और इसे ' मुम्मदिचोलमंडलम ' नामक एक नए चोल प्रांत के रूप में अपने साथ मिला लिया।
5. मालदीव द्वीप समूह ('बारह हजार द्वीप') पर नौसैनिक विजय प्राप्त करने वाले पहले भारतीय शासक थे।
6. तंजावुर में भव्य **बृहदीश्वर मंदिर** (जिसे राजराजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है) का निर्माण है ।
7. बृहदीश्वर मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है, इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, और यह दुनिया का पहला मंदिर है जो पूरी तरह से ग्रेनाइट से बना है।
8. उन्होंने 1002 ई. में भूमि सर्वेक्षण और मूल्यांकन की एक विशाल परियोजना शुरू की, जिसने भूमि राजस्व प्रणाली को व्यवस्थित किया, जो आमतौर पर उपज का एक तिहाई तय किया गया था।
9. उन्होंने एक अत्यंत कुशल और केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना की तथा साम्राज्य को मंडलम , वलनाडु और नाडु जैसी इकाइयों में विभाजित किया।
10. **स्थानीय स्वशासन** के बहुत बड़े समर्थक थे और उनके शासनकाल में 'उर' (आम ग्रामीणों के लिए) और ' सभा ' (ब्राह्मणों के लिए) जैसी ग्राम सभाएं कुशलतापूर्वक काम करती थीं।
11. राजराज ', ' मुम्मादिचोल ' (तीनों लोकों का चोल राजा), ' शिवपादशेखर ' (शिव के चरणों को मुकुट मानने वाला) और ' जयगोंडा ' जैसी भव्य उपाधियाँ धारण कीं ।
12. यद्यपि वह एक कट्टर शैव थे , फिर भी वे अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु थे और उन्होंने श्रीविजय राजा के अनुरोध पर नागपट्टिनम में एक बौद्ध विहार के निर्माण के लिए अनुदान दिया था ।
13. नटराज ' (नृत्य करते शिव) की कांस्य प्रतिमाएं चोल कला का सर्वोत्तम नमूना मानी जाती हैं।
14. उन्होंने 1012 ई. में एक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल चीन भेजा, जो चोल राजवंश के लिए वाणिज्यिक संबंधों के महत्व को दर्शाता है। साम्राज्य .
15. उन्होंने एक केंद्रीकृत नौकरशाही बनाई जिसमें अधिकारियों का एक स्पष्ट पदानुक्रम था, जिसे ' पेरुन्दनम ' (वरिष्ठ अधिकारी) और ' सेरुन्दनम ' (कनिष्ठ अधिकारी) के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
16. बृहदेश्वर मंदिर की दीवारों पर अंकित करवाया , जो मूल्यवान ऐतिहासिक अभिलेखों के रूप में कार्य करते हैं।
17. उन्होंने एक मानकीकृत मुद्रा शुरू की और सोने, चांदी और तांबे के सिक्के जारी किए।
18. कावेरी जैसी नदियों के किनारे बांध और तालाब बनाकर सिंचाई पर विशेष ध्यान दिया ।
19. उन्होंने अपने बेटे राजेंद्र सिंह को उम्मीदवार बनाया। चोल प्रथम ने अपने जीवनकाल में उन्हें युवराज बनाया तथा उन्हें प्रशासन में शामिल किया, जिससे सुचारू उत्तराधिकार सुनिश्चित हुआ।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

20. राज प्रथम का शासनकाल सैन्य विजय, प्रशासनिक उत्कृष्टता तथा सांस्कृतिक एवं स्थापत्य कला विकास का स्वर्ण युग था।
21. उन्होंने समाज को ' वलंगई ' (दाहिने हाथ) और ' इडंगई ' (बाएं हाथ) सामाजिक विभागों में संगठित किया, जो चोल समाज की एक अनूठी विशेषता थी।
22. सभा ' और इसकी विभिन्न समितियों, जिन्हें ' वारियम ' प्रणाली के रूप में जाना जाता है, के कामकाज का विस्तृत विवरण मिलता है।
23. राजराज-काल ' नामक एक मानक भूमि माप इकाई शुरू की ।
24. उनके शासनकाल में दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ समुद्री व्यापार में उल्लेखनीय विस्तार हुआ।
25. राजा राजा चोल प्रथम ने चोल साम्राज्य को एक क्षेत्रीय राज्य से एक विशाल, अंतर-क्षेत्रीय साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया, जिसके पास महत्वपूर्ण विदेशी क्षेत्र भी थे।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

इतिहास महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं तालिका

1. **भारत का आश्चर्य** - **ए.एल. बाशम** : मुसलमानों के आगमन से पहले प्राचीन भारतीय संस्कृति, समाज, धर्म और शासन का एक क्लासिक और व्यापक सर्वेक्षण।
2. **भारत का प्राचीन अतीत** - **आर.एस. शर्मा** : एक मानक पाठ्यपुस्तक जो भौतिकवादी दृष्टिकोण से सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्राचीन भारतीय इतिहास का विस्तृत विवरण प्रदान करती है।
3. **भारतीय इतिहास के अध्ययन का परिचय** (1956) - **डी.डी. कोसंबी** : एक अग्रणी कार्य जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास की पुनर्व्याख्या करने के लिए मार्क्सवादी विश्लेषण को गहन भाषाविज्ञान और पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ जोड़ा।
4. **भारत का इतिहास, खंड 1** - **रोमिला थापर** : प्राचीन काल से लेकर यूरोपीय लोगों के आगमन तक के भारतीय इतिहास का एक प्रभावशाली वर्णन, जो अपनी व्याख्यात्मक दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है।
5. **प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास: पाषाण युग से 12वीं शताब्दी तक** - **उपिंदर सिंह** : एक आधुनिक और संपूर्ण पाठ्यपुस्तक जो समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए पुरातात्विक और पाठ्य स्रोतों को एकीकृत करती है।
6. **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य (प्रमाणित): शासन कला, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति पर एक प्राचीन भारतीय ग्रंथ, जो** मौर्य प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है ।
7. **इंडिका** - **मेगस्थनीज : एक यूनानी राजदूत द्वारा** मौर्यकालीन भारत का विवरण , जो केवल टुकड़ों में ही उपलब्ध होने के बावजूद एक मूल्यवान विदेशी स्रोत है।
8. **राजतरंगिणी (राजाओं की नदी)** - **कल्हण** : कश्मीर के राजाओं का 12वीं शताब्दी का ऐतिहासिक वृत्तांत, जिसे भारत में इतिहासलेखन का पहला कार्य माना जाता है।
9. **किताब - उल -हिंद (अलबरूनी का भारत)** - **अल- बिरूनी** : 11वीं शताब्दी में लिखित भारत के धर्म, दर्शन और रीति-रिवाजों का विस्तृत विवरण, प्रारंभिक मध्यकाल के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत।
10. **मध्यकालीन भारत का इतिहास** - **सतीश चंद्र** : सल्तनत से लेकर मुगल काल तक की अवधि को कवर करने वाली एक मानक और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली पाठ्यपुस्तक साम्राज्य .
11. **मुगल भारत की कृषि प्रणाली , 1556-1707** - **इरफान हबीब :** मुगल काल की आर्थिक और कृषि संरचनाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन एम्पायर, स्रोतों की सावधानीपूर्वक जांच के आधार पर।
12. **आइन-ए-अकबरी** - **अबुल फ़ज़ल** : अकबरनामा का एक भाग , यह सम्राट अकबर के साम्राज्य के प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने वाला दस्तावेज़ है।
13. **प्लासी से लेकर विभाजन तक और उसके बाद** - **शेखर बंद्योपाध्याय** : आधुनिक भारत के इतिहास पर एक व्यापक और लोकप्रिय पाठ्यपुस्तक।
14. **भारत का स्वतंत्रता संग्राम** - **बिपिन चंद्र** , आदि: एक राष्ट्रवादी इतिहासलेखन परिप्रेक्ष्य से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का विस्तृत वर्णन।
15. **आधुनिक भारत: 1885-1947** - **सुमित सरकार** : आधुनिक भारत पर एक मौलिक कार्य जिसने "नीचे से इतिहास" के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया, तथा निम्नवर्गीय और लोकप्रिय आंदोलनों पर ध्यान केंद्रित किया।
16. **भारत में गरीबी और गैर-ब्रिटिश शासन** (1901) - **दादाभाई नौरोजी नौरोजी** : आर्थिक राष्ट्रवाद का एक आधारभूत कार्य जिसने "धन के निष्कासन" सिद्धांत को सामने रखा।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

17. **भारत की खोज** (1946) - **जवाहरलाल नेहरू** : जेल से लिखी गई यह पुस्तक एक राष्ट्रवादी नेता की नजर से भारतीय इतिहास, संस्कृति और दर्शन का विस्तृत दृश्य प्रस्तुत करती है।
18. **जाति का विनाश** (1936) - **बी.आर. अंबेडकर** : जाति व्यवस्था और हिंदू सामाजिक व्यवस्था की एक शक्तिशाली आलोचना, और सामाजिक सुधार आंदोलनों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ।
19. **इतिहास क्या है?** (1961) - **ई.एच. कार्र** : इतिहास के सिद्धांत और दर्शन का एक उत्कृष्ट परिचय, जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों और वस्तुनिष्ठता की प्रकृति पर चर्चा की गई है।
20. **एनाल्स स्कूल** - **मार्क ब्लोच और लुसिएन फेवरे** : इतिहासलेखन का एक स्कूल जिसने राजनीतिक या कूटनीतिक इतिहास की तुलना में दीर्घकालिक सामाजिक इतिहास और अंतःविषयक दृष्टिकोणों पर जोर दिया।
21. **मुगल साम्राज्य का पतन** - **जदुनाथ सरकार :** मुगल साम्राज्य के पतन पर एक बहु-खंडीय, निर्णायक कार्य , जो इतिहासलेखन के अनुभवजन्य स्कूल का प्रतिनिधित्व करता है।
22. **भारतीय राष्ट्रवाद का उदय** - **अनिल सील** : कैम्ब्रिज स्कूल ऑफ हिस्टोरियोग्राफी का एक प्रमुख कार्य, जिसमें तर्क दिया गया है कि भारतीय राष्ट्रवाद शक्ति और संसाधनों के लिए एक अभिजात वर्ग की प्रतिस्पर्धा थी।
23. **हिंद स्वराज** (1909) - **एम.के. गांधी : आधुनिक सभ्यता की गांधीजी की आलोचना और** स्वराज पर आधारित स्वतंत्र भारत के लिए उनके दृष्टिकोण को रेखांकित करने वाला एक आधारभूत ग्रंथ ।
24. **के बाद भारत : विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का इतिहास** - **रामचंद्र गुहा** : 1947 से भारतीय गणराज्य के इतिहास का एक व्यापक विवरण।
25. **अशोक और मौर्यों का पतन** - **रोमिला थापर :** अशोक के शासनकाल और उसके बाद मौर्य साम्राज्य के पतन का एक महत्वपूर्ण पुनर्मूल्यांकन ।
26. **हिस्ट्रीज़** - **हेरोडोटस** : इसे पश्चिमी साहित्य में इतिहास की आधारभूत रचना माना जाता है, जो 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में लिखी गई थी।
27. **पेलोपोनेसियन युद्ध का इतिहास** - **थ्यूसीडाइड्स** : एक प्राचीन यूनानी कृति जो देवताओं के संदर्भ के बिना साक्ष्य-संकलन और कारण और प्रभाव के विश्लेषण के सख्त मानकों के लिए विख्यात है।
28. **हर्षचरित** - **बाणभट्ट** : भारतीय सम्राट हर्षवर्धन की 7वीं शताब्दी की जीवनी , जो बहुमूल्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
29. **भारतीय परंपरा के स्रोत** - एंसली टी. **एम्ब्री द्वारा संपादित** : भारतीय उपमहाद्वीप के प्राथमिक ग्रंथों का एक व्यापक संग्रह, जिसमें धर्म, दर्शन और सामाजिक विचार शामिल हैं।
30. **तर्कशील भारतीय** - **अमर्त्य सेन** : निबंधों का एक संग्रह जो भारत के इतिहास में सार्वजनिक बहस और बौद्धिक बहुलवाद की लंबी परंपरा का अन्वेषण करता है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रमुख स्रोत

स्रोत प्रकार	उदाहरण	उपलब्ध कराई गई जानकारी	अवधि
पुरातत्व	मुहरें, मिट्टी के बर्तन (जैसे, पी.जी.डब्लू., एन.बी.पी.डब्लू.), सिक्के, स्मारक, शिलालेख (जैसे, अशोक के शिलालेख)।	भौतिक संस्कृति, अर्थव्यवस्था, व्यापार मार्ग, साम्राज्यों का विस्तार, शाही नीतियाँ, धार्मिक प्रथाएँ।	सभी कालखंड (विशेषकर प्रागैतिहासिक एवं आद्य-ऐतिहासिक)
साहित्यिक (स्वदेशी)	**धार्मिक:** वेद, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण , जातक । **धर्मनिरपेक्ष:** अर्थशास्त्र , हर्षचरित , संगम साहित्य, कालिदास की रचनाएँ ।	सामाजिक-धार्मिक मानदंड, राजनीतिक विचार, प्रशासन, राजवंशों की वंशावली, सांस्कृतिक जीवन।	वैदिक काल से आगे
विदेशी खाते	**ग्रीक:** मेगस्थनीज (इंडिका) **चीनी:** फ़ा-हिएन , ह्वेन त्सांग (ज़ुआनज़ैंग)। **रोमन:** प्लिनी (प्राकृतिक इतिहास)।	राजनीतिक एवं सामाजिक स्थितियाँ, दरबारी जीवन, व्यापारिक संबंध, बौद्ध धर्म की स्थिति।	मौर्य काल से आगे

2: सिंधु घाटी सभ्यता – प्रमुख स्थल और विशेषताएँ

साइट	स्थान (आधुनिक)	द्वारा खोजा गया	मुख्य निष्कर्ष
हड़प्पा	पंजाब, पाकिस्तान	दया राम साहनी (1921)	पंक्ति में अन्न भंडार, कामगारों के क्वार्टर, एक कमरे वाली बैरक, ताबूत में दफ़न।
मोहन जोदड़ो	सिंध , पाकिस्तान	आर.डी. बनर्जी (1922)	महान स्नानागार, महान अन्न भंडार, कांस्य नृत्यांगना प्रतिमा, दाढ़ी वाले व्यक्ति (पुजारी-राजा) की शैलखटी (स्टीटाइट) प्रतिमा।
धोलावीरा	गुजरात, भारत	जेपी जोशी/आरएस बिष्ट	उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली (जलाशय, बांध), अद्वितीय तीन-भागीय नगर विभाजन, हड़प्पा लिपि वाला बड़ा साइनबोर्ड ।
लोथल	गुजरात, भारत	एस.आर. राव	कृत्रिम गोदी (ज्वारीय बंदरगाह), चावल की खेती के साक्ष्य, दोहरी कब्रें (पुरुष और महिला)।
कालीबंगा	राजस्थान, भारत	ए. घोष	जुते हुए खेत की सतह, अग्नि

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

			वेदिकाएं, सुसज्जित ईंटें, पूर्व- हड़प्पा और हड़प्पा दोनों चरणों के साक्ष्य।

3: वैदिक काल – एक तुलना

विशेषता	ऋग्वैदिक काल (लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व)	उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000-600 ईसा पूर्व)
राजनीति	जनजातीय सभाएँ (सभा , समिति) महत्वपूर्ण थीं। राजा (राजन) मुख्य रूप से सीमित शक्ति वाला एक सैन्य नेता था।	राजा की शक्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सभाओं का महत्व कम हो गया। अश्वमेध और राजसूय जैसे अनुष्ठानों का उदय हुआ।
समाज	काफी हद तक समतावादी। वर्ण व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी और लचीली थी। परिवार पितृसत्तात्मक था।	वर्ण व्यवस्था कठोर और वंशानुगत हो गई। ब्राह्मण और क्षत्रिय प्रभुत्व का उदय हुआ। महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई।
अर्थव्यवस्था	मुख्य रूप से पशुपालक और अर्ध-खानाबदोश। मवेशी धन का मुख्य स्रोत थे। कृषि गौण थी।	कृषि प्राथमिक व्यवसाय बन गया (लोहे के हल का उपयोग)। स्थायी जीवन और प्रादेशिक राज्यों (जनपदों) का उदय।
धर्म	प्रकृति के देवताओं जैसे इंद्र , अग्नि, वरुण , सूर्य की पूजा की जाती थी । अनुष्ठान सरल थे। कोई मंदिर या मूर्ति पूजा नहीं थी।	इंद्र और अग्नि का महत्व खत्म हो गया। प्रजापति , विष्णु और रुद्र (शिव) का उदय हुआ। अनुष्ठान जटिल और विस्तृत हो गए, पुरोहितों का वर्चस्व हो गया।

4: मौर्य और गुप्त साम्राज्य – एक तुलना

विशेषता	मौर्य साम्राज्य (लगभग 322-185 ईसा पूर्व)	गुप्त साम्राज्य (लगभग 320-550 ई.पू.)
प्रशासन	अत्यधिक केंद्रीकृत। विशाल, वेतनभोगी नौकरशाही। व्यापक जासूसी प्रणाली। सख्त नियंत्रण।	विकेन्द्रीकृत। सामंती विशेषताएं (सामंत)। स्थानीय प्रशासन को अधिक स्वायत्तता प्राप्त थी।
अर्थव्यवस्था	राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था। कृषि आधार थी, भूमि राज्य के स्वामित्व में थी। भारी कर।	राज्य नियंत्रण कम हुआ। ब्राह्मणों और अधिकारियों को भूमि अनुदान आम हो गया। व्यापार संघों (श्रेणियों) में वृद्धि हुई।
कला एवं वास्तुकला	मुख्य रूप से दरबारी कला। पत्थर का उपयोग। स्मारकीय वास्तुकला (जैसे, अशोक स्तंभ, स्तूप)।	मुख्य रूप से धार्मिक कला। ईंट और पत्थर का उपयोग। मंदिर वास्तुकला (नागर शैली), मूर्तिकला (सारनाथ शैली) और गुफा चित्रकला (अजंता) का उत्कर्ष। इसे "स्वर्ण युग" माना जाता है।

धर्म	शासकों ने विभिन्न धर्मों को संरक्षण दिया। चंद्रगुप्त (जैन धर्म), अशोक (बौद्ध धर्म)।	मुख्य रूप से ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म (वैष्णववाद , शैववाद)। पौराणिक हिंदू धर्म ने आकार लिया। धार्मिक सहिष्णुता का अभ्यास किया गया।

5: प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंश और प्रमुख शासक

राजवंश	कुंजी रूलर	अवधि (लगभग)	क्षेत्र
हर्यंका राजवंश	बिम्बिसार , अजातशत्रु	6ठी-5वीं शताब्दी ई.पू.	मगध
नंदा राजवंश	महापद्म नंदा	चौथी शताब्दी ई.पू.	मगध (पहले गैर- क्षत्रिय शासक)
कुषाण राजवंश	कनिष्क	पहली-तीसरी शताब्दी ई.	उत्तर-पश्चिम भारत एवं मध्य एशिया
सातवाहन राजवंश	गौतमीपुत्र सटाकार्नी	दूसरी शताब्दी ई.पू. - तीसरी शताब्दी ई.पू.	दक्कन (आंध्र क्षेत्र)
पल्लव राजवंश	महेंद्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम	चौथी-नौवीं शताब्दी ई.	कांचीपुरम (तमिलनाडु)
चालुक्य राजवंश (बादामी)	पुलकेशिन द्वितीय	6वीं-8वीं शताब्दी ई.	डेक्कन (कर्नाटक)
वर्धन राजवंश	हर्षवर्धन	7वीं शताब्दी ई.	उत्तर भारत (कन्नौज)

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
According NET EXAM Pattern
ALL SYLLABUS COVERED
DETAILED ANSWER
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

यूजीसी-नेट इतिहास पेपर-II मॉडल पेपर (आसान स्तर)

प्रश्न 1. 'वेद' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(A) अनुष्ठान

(B) ज्ञान

(C) भगवान

(D) प्रार्थना

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

1. 'वेद' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु 'विद्' से हुई है।
2. 'विद' का अर्थ है 'जानना'।
3. इसलिए, 'वेद' का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' या 'बुद्धि' है।
4. हिंदू धर्म में वेदों को पवित्र ग्रंथ माना जाता है।
5. वे भजन, अनुष्ठान और दर्शन से संबंधित ज्ञान के विशाल भंडार का प्रतिनिधित्व करते हैं।
6. इन्हें 'श्रुति' (जो सुना जाता है) माना जाता है, तथा माना जाता है कि ये ईश्वरीय रूप से प्रकट हुई हैं।

प्रश्न 2. सिंधु घाटी सभ्यता मुख्य रूप से किस काल में फली-फूली?

(A) पुरापाषाण युग

(B) नवपाषाण युग

(C) कांस्य युग

(D) लौह युग

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

1. सिंधु घाटी सभ्यता (आईवीसी) को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
2. यह लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रहा।
3. इसका परिपक्व चरण लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक था।
4. यह काल दक्षिण एशिया में कांस्य युग के अंतर्गत आता है।

PROFESSORS ADDA

5. इस सभ्यता की विशेषता कांस्य औजारों और कलाकृतियों का व्यापक उपयोग थी।
6. यह क्षेत्र में लोहे के व्यापक उपयोग से पहले का है (लौह युग बाद में शुरू हुआ, लगभग 1000 ईसा पूर्व)।

प्रश्न 3. मौर्य साम्राज्य का संस्थापक कौन था?

(A) अशोक

(B) बिन्दुसार

(C) चंद्रगुप्त मौर्य

(D) बिम्बिसार

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने लगभग 322 ईसा पूर्व मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी।
2. उन्होंने मगध में नंद राजवंश को उखाड़ फेंका।
3. उन्हें उनके गुरु और मुख्य सलाहकार कौटिल्य (चाणक्य) द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त था।
4. उनके शासनकाल में भारत में एक विशाल, केन्द्रीकृत साम्राज्य की शुरुआत हुई।
5. उन्होंने उत्तर भारत में साम्राज्य का महत्वपूर्ण विस्तार किया।
6. बिन्दुसार उनके पुत्र थे और अशोक उनके पोते थे। बिम्बिसार पहले के हर्यक वंश से संबंधित थे।

4. गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश कहाँ दिया था?

(A) बोधगया

(B) सारनाथ

(C) कुशीनगर

(D) लुम्बिनी

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

1. बोधगया में ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध सारनाथ गये।
2. सारनाथ वाराणसी (बनारस) के पास स्थित है।
3. उन्होंने अपना पहला उपदेश यहीं अपने प्रथम पांच शिष्यों को दिया था।
4. इस घटना को 'धर्मचक्रप्रवर्तन' (धर्म का चक्र घूमना) के नाम से जाना जाता है।

PROFESSORS ADDA

5. लुम्बिनी उनकी जन्मस्थली थी; कुशीनगर वह स्थान था जहाँ उन्होंने महापरिनिर्वाण (मृत्यु) प्राप्त की।

5. प्राचीन दक्षिण भारतीय इतिहास के संदर्भ में 'संगम' शब्द का तात्पर्य किससे है?

(A) एक प्रकार का कर

(B) एक शाही राजवंश

(C) तमिल कवियों की सभाएँ या अकादमियाँ

(D) एक धार्मिक अनुष्ठान

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

1. 'संगम' एक तमिल शब्द है जिसका अर्थ है 'सभा' या 'अकादमी'।
2. परंपरा के अनुसार, प्राचीन दक्षिण भारत में तीन संगम आयोजित हुए थे, मुख्यतः मदुरै में।
3. ये सभाएँ तमिल कवियों और विद्वानों की सभाएँ थीं।
4. वे पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में फले-फूले।
5. इस अवधि (लगभग 300 ईसा पूर्व - 300 ईसवी) के दौरान रचित साहित्य को संगम साहित्य के रूप में जाना जाता है।
6. यह तमिलनाडु, केरल और श्रीलंका के कुछ हिस्सों के प्रारंभिक इतिहास का एक प्रमुख स्रोत है।

प्रश्न 6. राजव्यवस्था पर प्रसिद्ध ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' किसने लिखा था?

(A) अशोक

(B) मेगस्थनीज

(C) कौटिल्य (चाणक्य)

(D) कालिदास

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

1. अर्थशास्त्र एक प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथ है /
2. इसमें शासन कला, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति को शामिल किया गया है।
3. परंपरागत रूप से इसका लेखन कौटिल्य को माना जाता है, जिन्हें चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है।
4. कौटिल्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के मुख्य सलाहकार थे।

PROFESSORS ADDA

5. यह ग्रन्थ मौर्य प्रशासन और राजनीतिक विचार के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
6. *इंडिका* लिखी ; कालिदास एक शास्त्रीय संस्कृत कवि/नाटककार थे।

गुप्त युग को अक्सर प्राचीन भारत के 'स्वर्ण युग' के रूप में जाना जाता है, मुख्यतः निम्नलिखित में से किस कारण से।

(A) केवल व्यापक सैन्य विजय
(B) कला, विज्ञान और साहित्य का उत्कर्ष
(C) सामाजिक बुराइयों का पूर्ण अभाव
(D) लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

1. गुप्त काल (लगभग चौथी से छठी शताब्दी ई.) को अक्सर 'स्वर्ण युग' कहा जाता है।
2. यह विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के कारण है।
3. कला: शास्त्रीय भारतीय कला, मूर्तिकला (जैसे, सारनाथ बुद्ध) और मंदिर वास्तुकला का विकास।
4. विज्ञान: गणित (शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली - आर्यभट्ट) और खगोल विज्ञान में प्रमुख प्रगति।
5. साहित्य: शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का उत्कर्ष (जैसे, कालिदास की रचनाएँ)।
6. यद्यपि सैन्य उपलब्धियां और स्थिर प्रशासन था, लेकिन सांस्कृतिक और बौद्धिक उत्कर्ष ही 'स्वर्ण युग' लेबल का प्राथमिक कारण है।

प्रश्न 8. दिल्ली में गुलाम वंश (मामलुक वंश) का संस्थापक कौन था?

(A) इल्तुतमिश
(B) बलबन
(C) रजिया सुल्ताना
(D) कुतुबुद्दीन ऐबक

सही उत्तर: (D)

स्पष्टीकरण:

1. कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गोरी का सेनापति था।

PROFESSORS ADDA

2. 1206 ई. में गौरी की मृत्यु के बाद ऐबक उसके भारतीय क्षेत्रों का शासक बन गया।
3. उन्होंने दिल्ली सल्तनत के प्रथम राजवंश की स्थापना की।
4. इस राजवंश को मामलुक या गुलाम राजवंश के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसके प्रारंभिक शासक मूलतः गुलाम थे।
5. ऐबक ने 1206 से 1210 तक शासन किया।
6. इल्तुतमिश, बलबन और रजिया इसी वंश के बाद के शासक थे।

प्रश्न 9. बाजार विनियमन नीति किस दिल्ली सुल्तान द्वारा शुरू की गई एक महत्वपूर्ण उपाय थी?
(A) बलबन
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) फिरोज शाह तुगलक
सही उत्तर: (B)
स्पष्टीकरण:

1. अलाउद्दीन खिलजी (शासनकाल 1296-1316) ने व्यापक बाजार नियंत्रण नीतियों को लागू किया।
2. उद्देश्य: मुख्यतः कम लागत पर बड़ी सेना बनाए रखना।
3. उपाय: इसमें आवश्यक वस्तुओं की कीमतें तय करना, विनियमित बाजार स्थापित करना और सख्त प्रवर्तन शामिल हैं।
4. अधिकारी: व्यवस्था की देखरेख के लिए बाजार अधीक्षक (शहना-ए-मंडी) नियुक्त किए गए।
5. प्रभाव: अपने शासनकाल के दौरान दिल्ली में कीमतों को नियंत्रित करने में सफलता मिली।

प्रश्न 10. दिल्ली सल्तनत की राजधानी दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरी) किसने स्थानांतरित की?
(A) अलाउद्दीन खिलजी
(B) गयासुद्दीन तुगलक
(C) मुहम्मद बिन तुगलक
(D) फिरोज शाह तुगलक
सही उत्तर: (C)
स्पष्टीकरण:

1. शासक: मुहम्मद बिन तुगलक (शासनकाल 1325-1351)।

PROFESSORS ADDA

ALL SUBJECT AVAILABLE

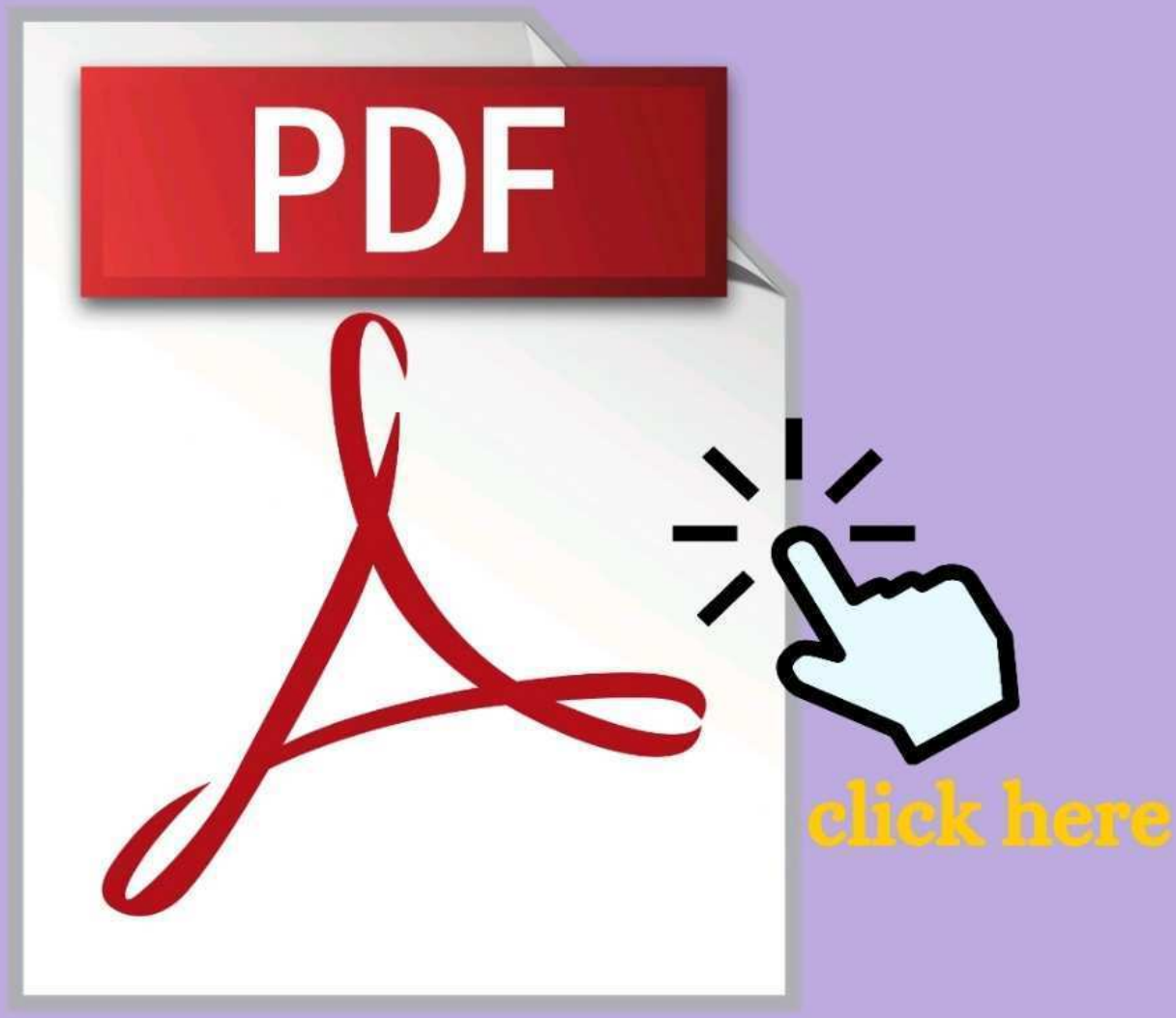

GET FREE UNIT WISE NOTES SAMPLE

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

UGC-NET CSIR PGT SET CUET JRF ASST. PROF

STUDY KIT

COD

SPECIAL PRICE

REGULAR PRICE

~~₹ 5999~~

LIMITED TIME PRICE

₹ ***

click here

+91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (Education)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

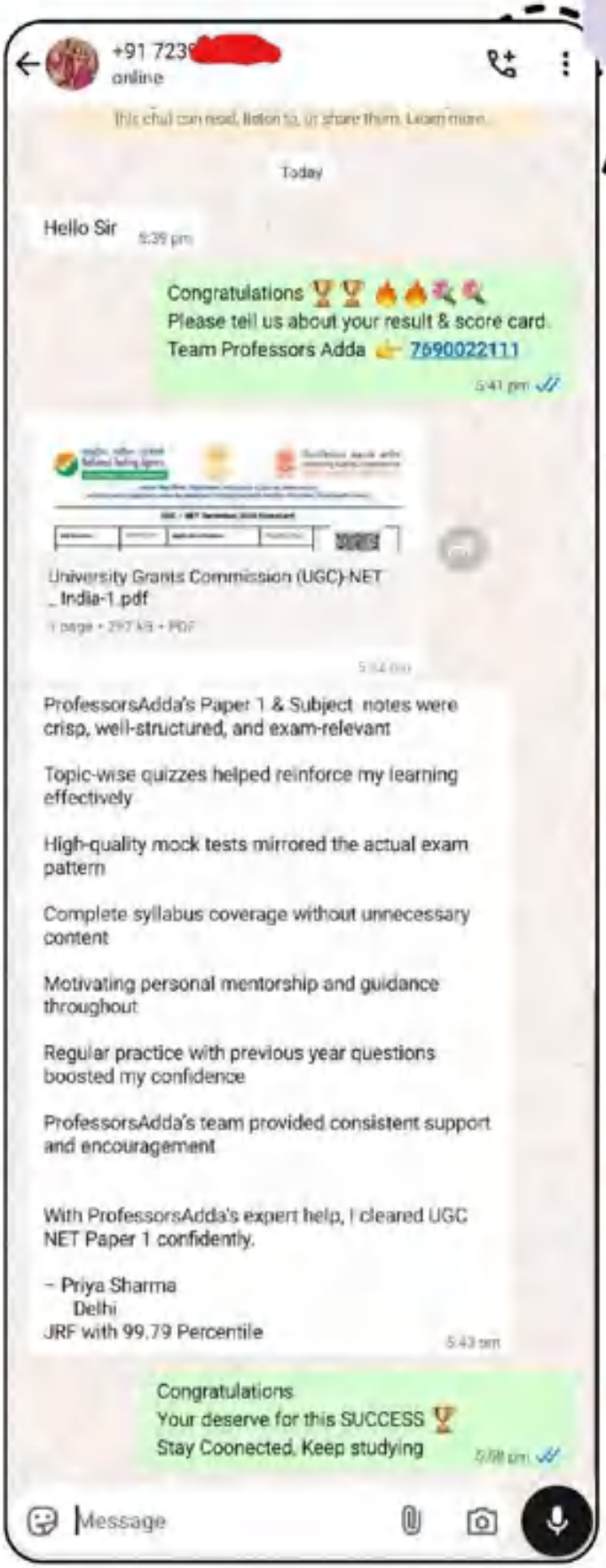

+91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

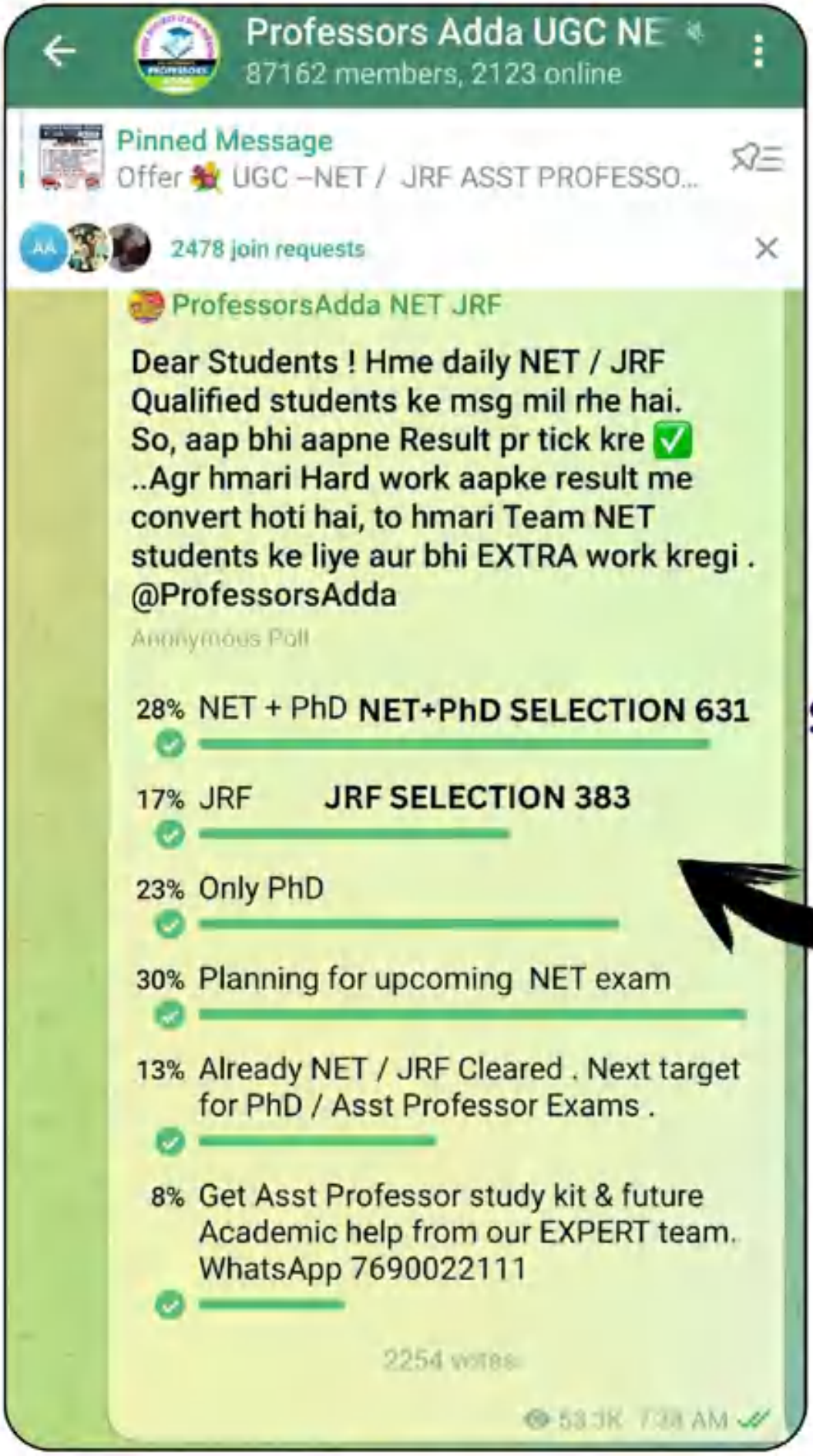

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

Exclusive English GROUP

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

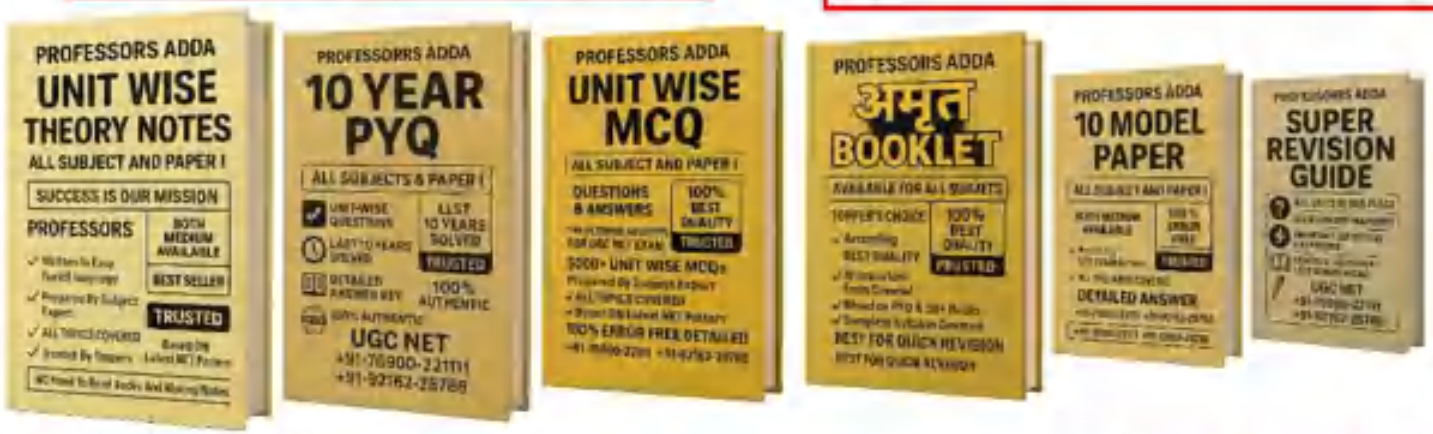

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

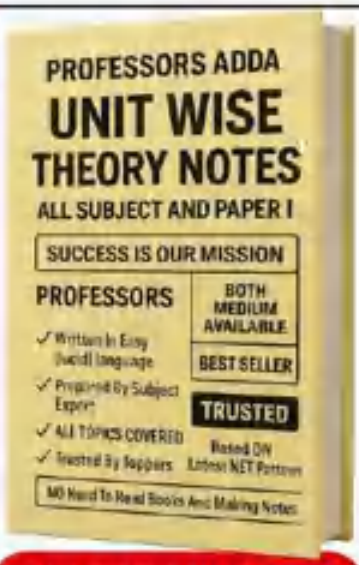

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

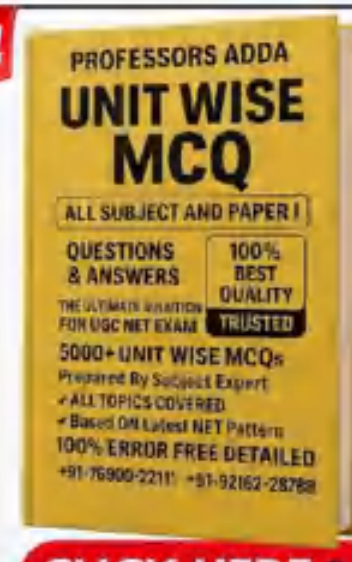

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788